



# आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वतंत्रता के 75 वें वर्ष 2022 पर विशिष्ट प्रयास

तहरीक-ए-आज़ादी की उर्दू नज़्में

(नज़्मों का संकलन और हिन्दी रूपांतरण)

हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज

अल्पसंख्यक संघटक स्नातकोत्तर महाविद्यालय

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

प्रयागराज

निर्देशक,

प्रो. यूसुफ़ा नफीस

प्राचार्या

हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज

प्रयागराज

रोज़ीना अन्सारी

(भूतपूर्व छात्रा) एम.ए. उर्दू, नेट

हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज

प्रयागराज

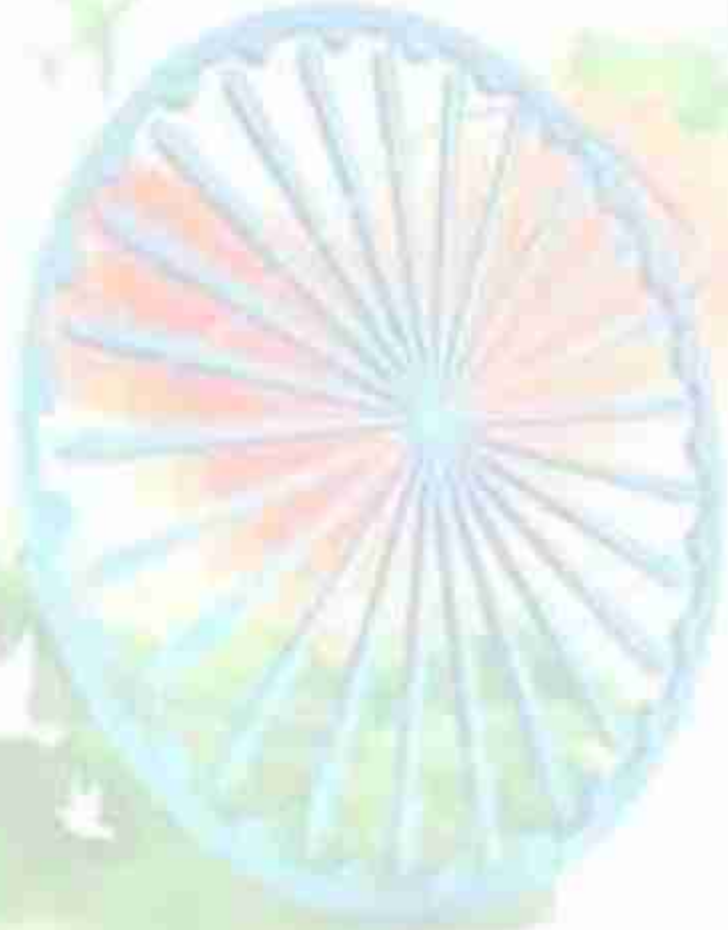
## विषयानुक्रमणिका

क्र०सं०	नाम	शीर्षक	पृष्ठ सं०
1.	प्रो. यूसुफा नफीस	चंद अल्फाज	6
2.	रोज़ीना अन्सारी	प्रस्तावना	7
3.	मुनीर शिकोहाबादी	(1) कंद से निजात	8
4.	जहीर देहलवी	(2) हंगामा-ए-दारो-गीर	12
5.	मुहम्मद हुसैन आजाद	(3) हुब्ब-ए-वतन	16
6.	अकबर इलाहाबादी	(4) वह और हम	20
7.	शिवली नोमानी	(5) पहली जंग-ए-अजीम और हिन्दुस्तानी	22
8.	ब्रज मोहन दत्तात्रिया कैफ़ी	(6) मगरिबी कौमो का फलसफ़ा	24
9.	आजाद अंसारी	(7) तालीम बेदारी	28
10.	ज़फ़र अली ख़ौं	(8) ऐलान-ए-जंग	32
		(9) इंकिलाब	36
		(10) इंकिलाब-ए-हिन्द	38
11.	दुर्गासहाय सुरूर जहनाबादी	(12) मगरिब ज़दगी	40
12.	हसरत मोहानी	(13) जौर-ए-गुलामान-ए-वक्त	44
13.	अल्लामा इक़बाल	(14) हिन्दुस्तानी बच्चों का कौमी गीत	46
14.	मुहम्मद अली जौहर	(15) आशियाना बर्बाद	50
		(16) ख़ुगर-ए-सितम	52
15.	ब्रज नारायण चकबस्त	(17) पयाम-ए-वफ़ा	54
		(18) हमारा वतन दिल से प्यारा वतन	58
		(19) हुब्ब-ए-कौमी	60
16.	सीमाब अकबराबादी	(20) जंगी तराना (1940)	64

17.	इक़बाल अहमद सुहैल	(21)	गाँधी	68
		(22)	मंज़र-ए-रुख़सत	74
18.	बर्क़ देहलवी	(23)	हिन्द के जाँ-बाज़ सिपाही	80
19.	जोश मलसियानी	(24)	शहीद-ए-वतन	86
20.	ज़फ़र अली ख़ाँ असर	(25)	अहिंसा की पहली सुनहरी किरन	90
21.	तिलोकचन्द महरूम	(26)	देख अय हिलाले-शाम _ (भगत सिंह की फाँसी पर) _ (1931)	94
		(27)	शहीद भगत सिंह	98
		(28)	खाक-ए-हिन्द	100
22.	लाल चन्द फ़लक	(29)	भारत के सपूतों से ख़िताब	104
23.	जगत मोहन लाल रवाँ	(30)	हिन्द मज़लूम	108
24.	हाशमी फ़रीदाबादी	(31)	कारफ़र्माई	110
25.	जिगर मुरादाबादी	(32)	कहत-ए-बंगाल	112
26.	अहमक़ फफ़ूदवी	(33)	फरिश्ता-ए-जंग का पैगाम हिंदुस्तान के नाम _ (1939)	116
		(34)	इंकलाब	120
		(35)	कडे मर्हले	124
27.	वकार अंबालवी	(36)	मैदाने जंग में सुद्ध	128
28.	फ़िराक़ गोरखपुरी	(37)	आज़ादी	132
29.	राम प्रसाद बिस्मिल	(38)	दूर तक याद-ए-वतन आई थी समझाने को	136
		(39)	वो चुप रहने को कहते हैं जो हम फरियाद करते हैं	140
30.	जोश मलीहाबादी	(40)	तलारी _ (1939)	142
		(41)	ईस्ट इंडिया कंपनी के फरज़ंदों से ख़िताब	144
31.	आनंद नारायण मुल्ला	(42)	महात्मा गाँधी का कत्ल	152
32.	सागर निज़ामी	(43)	अहद	160

	(44) ऐ सुब्ह-ए-वतन	164
33. अर्श मलसियानी	(45) इकिलाब	170
34. मखदमू मोही उद्दीन	(46) जंग	172
	(47) आजादी-ए-वतन	176
35. वामिक जौनपुरी	(48) जिन्दौ	180
36. नजीर बनारसी	(49) सर स्टीफर्ड क्रिप्स के नाम	184
37. फ़ैज अहमद फ़ैज	(50) तसल्ली	188
	(51) बोल	192
38. असरार -उल-हक मजाज	(52) नौ-जवान से	194
39. मोइन एहसन जज़्बी	(53) ऐ काश (1938)	198
40. सय्यद एहतिशाम हुसैन	(54) यह निज़ाम कुहना (1939)	202
41. शमीम किरहानी	(55) कुछ देर ज़रा सो लेने दो	206
	(56) सिपाही का रक्स (1942)	210
42. अली सरदार जाफ़री	(57) जंग और इंकलाब	214
43. अली सरदार जाफ़री	(58) उठो	218
	(59) आजादी	222
44. एजाज सिद्दीकी	(60) नागुज़ीर (एक हकीकत पसन्दाना नुक्त-ए-निगाह)	226
45. जौ निसार अख़्तर	(61) जहाँ मैं हूँ	230
46. गुलाम रब्बानी ताबौ	(62) "15 अगस्त 1947"	232
47. अलताफ़ मशहदी	(63) माँ की दुआ	236
48. एहसान दानिश	(64) गुलामी की खुसूसियात	238
49. मसूद अख़्तर	(65) फ़िर्का परस्ती	240
50. अख़्तर-उल-ईमान	(66) सवालिया निशान	246
51. खुशीद अहमद जामी	(67) मुस्तक़िबल का ख़्वाब	250
52. अली जव्वद जैदी	(68) सियासी क़ैदी की रिहाई (1941)	254
53. शोरिश काशमीरी	(69) नौजवानों से खिताब	258

54.	जगन्नाथ आजाद	(70)	आज़ाद हिन्द फौज	262
55.	कैफी आजमी	(71)	आखरी मर्हला	266
56.	सलाम मछली शहरी	(72)	मजबूरियाँ	270
57.	साहिर लुधियानवी	(73)	मगर जुल्म के खिलाफ़	272
58.	रिफ़ात सरोश	(74)	मेरा वतन हिन्दोस्ताँ	274
59.	राही मासूम रज़ा	(75)	ऐ अजनबी	278



## चंद अल्फ़ाज़

हिन्दुस्तान की आज़ादी के 75 वें वर्ष पर भारत सरकार ने चौरी-चौरा सदी और आज़ादी के अमृत महोत्सव का ऐलान करके कई तरह की कारकदगी की निशानदही की है। आज़ादी की तहरीक पर इनमें एक ज़बान की तहरीरों को दूसरी ज़बान में तर्जुमे, को भी अहमियत दी है ताकि सभी एक दूसरों के ज़ज्बात को, शहीदों की कुर्बानियों को और आज़ादी की मुहिम के लम्बे सफ़र के मुख्तलिफ़ वाक़यात व मुहर्रिकात को बख़ूबी महसूस किया जा सके। इसी सिलसिले में यूजीसी ने भी आला तालीम के इदारों को हिदायत दी है। हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज, जो कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय का अल्पसंख्यक संघटक कॉलेज है इस मौके पर आज़ादी की तहरीक से वाबस्ता उर्दू नज़्मों में ट्रांसलिटैरेशन (नक्ल हरफ़ी) की काविशें की जा रही है। इसी कड़ी में कॉलेज की साबिक़ तालिबा रोज़ीना अन्सारी उर्दू में एम0ए0, नेट ने उर्दू के मशहूर शायरों की 75 नज़्मों को उर्दू से हिन्दी में लिख कर अहम काम किया है जो कि काबिले सताइश है। उम्मीद है कि वह इस कोशिश को जारी रखेंगी जो कॉलेज की तहरीक-ए-आज़ादी पर वेबसाइट का बेशक़ीमती सरमाया साबित होगा।

प्रो.यूसुफ़ा नफ़ीस  
प्राचार्या हमीदिया गर्ल्स  
डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

## प्रस्तावना

हिन्दुस्तान की तहरीक-ए-आजादी में उर्दू का महत्वपूर्ण योगदान है। क्योंकि उर्दू जबान सभी हिन्दुस्तानियों की जबान है। उर्दू जबान ने सबसे पहले अंग्रेजों के खिलाफ बगावत का एलान किया। उर्दू अदब में चाहे वह उर्दू साहित्य हो या उर्दू कविता। "तहरीक-ए-आजादी की उर्दू नज़्में" में मैंने उर्दू की उन नज़्मों का संकलन किया है जो 1857 ई. से 1947 ई. तक के राजनैतिक इतिहास के साथ सामाजिक इतिहास को हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं। स्वतंत्रता आन्दोलन में उर्दू शायरी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है क्योंकि बहादुर शाह ज़फर ने पहली जंग-ए-आजादी में हमारी रहनुमाई की और यहीं से जंग-ए-आजादी में उर्दू शायरों की भूमिका शुरू हो जाती है। शायरों ने अंग्रेजी सरकार के जुल्म-ओ-सितम के खिलाफ अपनी कलम से तलवार की तरह वार करने लगे। अंग्रेजी सरकार ने शायरों को तो बंदी बना लिया लेकिन उनके दिली जज़्बात और ख्यालात पर कोई पाबन्दी नहीं लगा सकें और शायरों ने कारावास में रहते हुए अपने दिली जज़्बात और उस समय के हालात को ऐसी बागियाना नज़्मों के रूप में लिखा कि हुकूमत ने उन्हें जब्त कर लिया। लेकिन शायरों ने फिर भी हार नहीं मानी और जब उन पर पाबन्दियाँ लगी तो वह अपने कलम को और जोर देने लगे किसी ने अंग्रेजों से मुल्क आजाद करने पर, किसी ने औरतों की बदहाली पर तो किसी ने फ़ौसी पर चढ़ने वालों के नाम नज़्में लिखीं। जब भगत सिंह इकिलाब जिन्दाबाद कहते हुए फ़ौसी के फंदे पर झूल गए तो मौलाना हसरत मोहानी ने इकिलाब जिन्दाबाद का नारा दिया। इसी तरह बिस्मिल अजीमाबादी ने "सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है" लिखा जिसको राम प्रसाद बिस्मिल और उनके बलिदानियों ने गाते हुए फ़ौसी के फंदे को चूमा और अपने आप को देश के लिए बलिदान कर दिया। हिन्दुस्तान को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद करने के लिए उर्दू शायरी ने तूफान जैसा मंजर पैदा किया और जब तक हिन्दुस्तान को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद नहीं करवा लिया तब तक उर्दू वाले अपनी कलम से वार करते रहें। उर्दू शायरी हिन्दुस्तान के इतिहास को अपने अन्दर समोए हुए है इसलिए उर्दू हिन्दुस्तान का आईना है। स्वतंत्रता के 75 वें वर्ष (आजादी का अमृत महोत्सव) पर हमने उर्दू नज़्मों को हिन्दी लिपि में किया। हिन्दी लिपि करने में यदि हमसे कोई त्रुटि हुई है तो मैं इसके लिए क्षमा चाहती हूँ। अकबर इलाहाबादी के इन दो पंक्तियों पर मैं अपनी बात समाप्त करती हूँ।

खींच न कमानों को, न तलवार निकालो  
जब तोप हो मकाबिल, तो अखबार निकालो

दिनांक-25-08-2021

रोजीना अन्सारी  
(भूतपूर्व छात्रा)  
हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज,  
प्रयागराज




मुनीर शिकोहाबादी

1814-1880

### कैद से निजात

बारें आइँ नजात की बारी  
खुल गया उक्दा-ए-गिरफ्तारी  
हम को मंसब मिला रिहाई का  
कैद को जाएदाद-ए-बंकारी  
पाँव को छोड़ भागे मार-ए-दो-सर  
सर को पुरतारा-ए-गिराँबारी  
कूच ठहरा मकाम-ए-गुर्बत से  
अब वतन चलने की है तैयारी  
रुखसत ऐ दोस्तान-ए-जिन्दानी  
अलविदा ऐ गम-ए-गिरफ्तारी  
अर्रहील ऐ मशकत-ए-हर जोर  
अल-फिराक ऐ हुजूम-ए-नाचारी  
दाल फं ऐन ऐ किताबत-ए-कैद  
गाफ़ मीम ऐ हिसाब-ए-सरकारी  
दाल चावल से कह दो रुखसत हों  
पानी में डूबे ये नमक खारी  
मछलियों से कहो कि हट के सड़ें  
घास खाँदें यहाँ की तरकारी  
चीनी, बरहमा, मलाई, मदरासी





अहल-ए-आशाम, जंगली तातारी  
अपने दीदार से माफ़ करे  
अपनी बातों से दे सुबुक सारी  
काले पानी से होते हैं रूख़सत  
अशक़ शादी है आँखों से जारी  
बैठते हैं जहाज़ दूरी पर  
उठते हैं लगर-ए-गिराबारी  
करम ऐ खिज़ अल-मदद ऐ नूह  
रहम ऐ फ़ज़ल-ए-हजरत बारी  
अस्सलाम ऐ खरोश-ए-बहर मुहीत  
जाद-ए-राह-ए-सफ़र तवक्कूल है  
रहनुमाई का उस की गफ़ारी  
है इरादा कि फिक-ए-शोर करे  
ताकि हाँ दूर रज-ए-बेकारी  
बस-कि बरसाँ रहा हूँ जिन्दाँ में  
भूली कस-ए-सुखान की मंमारी

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 109)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



میر شکوہ آبادی

۱۸۸۰-۱۸۱۳

### قید سے نجات

بارے کی نجات آئی نجات کی باری  
 کھل گیا عقدا گرفتاری  
 ہم کو منصب ملا رہائی کا  
 قید کو جائیداد بیکاری  
 پاؤں کو چھوڑ بھاگے مار دو سر  
 سر کو پشتارہ گرفتاری  
 کوچ ٹھہرا مقام غربت سے  
 اب وطن چلنے کی ہے تیاری  
 رخصت اے دوستان زندانی  
 اوداع اے غم گرفتاری  
 ارضیل اے مشقت ہر زور  
 الفراق اے ہجوم ناچاری  
 دل فی عین اے کتابت قید  
 گاف میم اے حساب سرکاری  
 دل چاول سے کہہ دو رخصت ہوں  
 پانی میں ڈوبے یہ ننگ کھاری  
 مچھلیوں سے کہو کہہ بٹ کے سڑیں  
 گھاس کھوڑے یہاں کی ترکاری  
 چینی برہا ملائی مدراسی

اتنی	آشام	جنگلی	تاتاری
اپنے	دیدار	سے	معاف
اپنی	باتوں	سے	دیں
کالے	پانی	سے	ہوتے ہیں
اشک	شادی	ہیں	آنکھوں سے
پیشے	ہیں	جہاز	دوری
اٹھتے	ہیں	انگر	گر اجباری
کرم	اے	حضرت	المدد اے
رحم	اے	فضل	حضرت
السلام	اے	خروش	بجر
اسفر	اے	سفینہ	جاری
زاد	راہ	سفر	توکل
رہنمائی	کو	اس	کی
ہے	ارادہ	کہ	فکر
تاکہ	ہو	دور	رنج
بسکہ	برسوں	رہا	ہوں
بھولی	تصویر	سخن	کی

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص-۱۰۹)

مصنف:- علی جواد زیدی



'जहीर' देहलवी

1825-1911

## हंगामा-ए-दार-ओ-गीर

निहाल-ए-गुलशन इक बाल पामाल हुए  
गुल-ए-रियाज खिलाफत लहू में लाल हुए  
यह क्या कमाल हुए और क्या जवाल हुए  
कमाल को भी पहुँचे थे जो जवाल हुए

जो इत्र गुल का न मलते, मिले वह मिट्टी में

जो फर्शें गुल पे न चलते, मिले वह मिट्टी में

जहाँ की तिरन-ए-खूँ तेंग आबदार हुई  
सिनान नंजा हर इक सीने से दो चार हुई  
रसन हर एक बशर के गले का हार हुई  
हर एक सम्त से फर्याद गीर-ओ-दार हुई

हर एक दस्त बला में कुशाँ कुशाँ पहुँचा

जहाँ की खाक थी जिस जिस की वह वहाँ पहुँचा

हर एक शहर का पीर और जवान कत्ल हुआ

हर एक कबीला-ओ-खानदान कत्ल हुआ

हर एक अहल-ए-जवाँ खुश बयान कत्ल हुआ

गर्ज खुलासा यह है इक जहान कत्ल हुआ

घरों से खींच के कुश्तों के कुश्तें डाले हैं  
न गोर है, न कफ़न है, न रोने वाले हैं

वह गुल से चेहरे हराहत से तिमतिमाए हुए  
वह गोर-गोरें बदन खाक में मिलाये हुए  
लबों पे आह जिगर में अलम समाये हुए  
जफ़ा की तेग के सब जख़म दिल पे खाये हुए

वह दाग-ए-मर्ग-ए-अजीज़ाँ वह दश्त पैमाई  
वही रेग-ए-खार मुगीलाँ वह आबला पाई

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 103)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



ظہیر دہلوی

۱۸۲۵-۱۹۱۱

### ہنگامہ دار و گیر

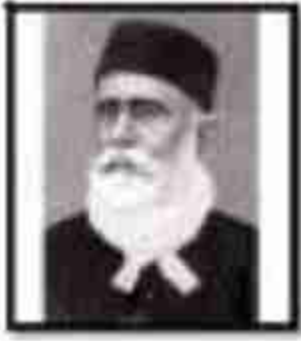
نہال گلشن اقبال پائمال ہوئے  
گل ریاض خلافت لبو میں لال ہوئے  
یہ کیا کمال ہوئے اور پہ کیا زوال ہوئے  
کمال کو بھی پہنچتے تھے جو زوال ہوئے  
جو عطر گل کو نہ ملتے تھے وہ مٹی میں  
جو فرش گل پہ نہ چلتے وہ مٹی میں  
جہاں کی تھنہ خوں تیغ آبدار ہوئی  
ساس نیزہ ہراک سینہ سے دوچار ہوئی  
رسن ہر ایک بشر کے گلے کا پار ہوئی  
ہر ایک ست سے فریاد اگیر و دار ہوئی  
ہر ایک دشت بلا میں کشاں کشاں پہنچا  
جان کی خاک تھی جس کی وہ وہاں پہنچا  
ہر ایک شہر کا پر اور جوان قتل ہوا  
ہر ایک قبیلہ دہر خاندان قتل ہوا  
ہر ایک اہل زنان خوش بیان قتل ہوا  
غرض خلاصہ یہ ہے ایک جان قتل ہوا

گھروں سے کھینچ کے کشتوں پہ کشتے ڈالے ہیں  
نہ گور ہے نہ کفن ہے نہ رونے والے ہی  
وہ گل سے چہرے حرارت سماتے ہوئے  
وہ گورے گور ہے بدن خاک میں ملائے ہوئے  
لبوں پہ آؤ جگر میں الم سماتے ہوئے  
بنفا کی لہج کے سب زخم دل پہ کھائے ہوئے  
وہ داغ مرگ عزیزاں وہ دشت پیمائی  
وہ رنگ خار مغیلاں وہ آبلہ پائی

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص-۱۰۳)

مصنف:- علی جواد زیدی



मुहम्मद हुसैन आजाद  
1837-1914

### हुब्ब-ए-वतन

ऐ आफ़ताब-ए-हुब्बे वतन तू किधर है आज  
तू है किधर कि कुछ नहीं आता नजर है आज  
तुझ बिन जहाँ है आँखों में अधोरा हो रहा  
और इतिजाम-ए-दिल जबर-ओ-जेर हो रहा  
तुझ बिन सब अहल-ए-दर्द हैं दिल-ए-मुर्दा हो रहे  
और दिल के शाक सीनों में अफसुर्दा हो रहे  
ठंडे हैं क्या दिलों में तेरे जोश हो गए  
क्यों सब तेरे चिराग हैं खामोश हो गए  
हुब्ब-ए-वतन की जिस का है कहतसाल क्यों  
हैंराँ हूँ आजकल पडा है इस का काल क्यों  
कुछ हो गया जमाने का उल्टा चलन यहाँ  
हुब्बुल वतन के बदले है बुगजुल वतन यहाँ  
बिन तेरे मुल्क-ए-हिन्द के घर बेचराग हैं  
जलते एवज चिराग के सीने में दाग हैं



कब तक शब-ए-सियाह में आलम तबाह हो  
एँ आफ़ताब इधर भी करम की निगाह हो  
आलम से ताकि तेरा दिली दूर हो तमाम  
और हिन्द तरे नूर से मामूर हो मुदाम  
उल्फ़त से गर्म सबके दिल सदा हो बहम  
और जोकि हम वतन हो वह हमदर्द हो बहम  
लबरेज-ए-जोश-ए-हुब्बे वतन सब के जाम हो  
सरशार-ए-जाँक दिल-ए-खास-ओ-आम हो

स्रोत:

पुस्तक: आजादी की नज़्में (पृष्ठ 24)

रचनाकार: सिब्ते हसन



محمد حسین آزاد

۱۸۳۷-۱۹۱۳

## حُبِّ وطن

اے آفتابِ حُبِّ وطن تو گرہر ہے آج  
تو ہے گرہر کر کچھ نہیں آتا نظر ہے آج  
تسپہ بن جہاں ہے آنکھوں میں اندھیر ہو رہا  
اور انتظامِ دل زبر و زبر ہو رہا  
تسپہ بن سب اہل درد ہیں ل مردہ ہو رہے  
اور دل کے شوقِ سینوں میں افسردہ ہو رہے  
ٹھنڈے ہیں کیوں دلوں میں ترے جوش ہو گئے  
کیوں سب ترے چراغ ہیں خاموش ہو گئے  
حُبِّ وطن کی جنس کا ہے نقطہ سال کیوں  
جیواں ہوں آج گل ہے پڑا ہے اس کا کال کیوں  
کچھ ہو گیا ہے زمانے کا اتنا چلن یہاں  
حُبِّ وطن کے برلے ہے بضلِ وطن یہاں  
بن تیرے ملک ہند کے گھرنے چراغ ہے  
جلنے عوض چراغوں کے <sup>سکھ</sup> میں داغ ہے

کب تک شب سیاہ میں عالم تباہ ہو  
اے آفتاب ادھر بھی کرم کی نگاہ ہو  
القت سے گرم سب کے رل سرد ہوں بہم  
اور جو کہ ہموطن ہوں وہ سدا ہم  
تا ہو وطن میں اپنے زروال کا وفور  
اور مملکت میں دولت و اقبال کا وفور  
علم و ہند سے خلق کو رونق دیا کریں  
اور انجمن میں بیچہ کے جلسے کیا کریں  
بریز جویشِ حُب وطن سے کے جام ہوں  
سرشارِ ذوق و شوقِ دلِ خاص و عام ہوں

ماخذ:-

کتاب:- آزادی کی نظمیں (ص-۲۴)

مصنف:- سبط حسن



अकबर इलाहाबादी

1846-1921

### वह और हम

तख्त के काबिज वही दंहीम उन के हाथ में  
मुल्क इनका रिज़क की तकसीम उनके हाथ में  
बर्क की सूरत पहुँचता है तबाए पर असर  
आ गया तार-ए-उम्मीद-ओ-बीम उन के हाथ ने  
हमको साया पर जुनूँ और वह धूप में मसरूफ़कार  
मस पे है अपनी नज़र और सीम उनके हाथ में  
सब बाकी है न हम में बाहमी एजाज है  
सब की है तज़लील और ताज़ीम उनके हाथ में  
शोख की जानिब कोई जाता नहीं कहते हैं सब  
है फकत अब कौसर-ओ-तसनीम उनके हाथ में  
मगरिबी रंग-ओ-रविश पर क्यों न आये अब कलूब  
कौम उनके हाथ में तालीम इनके हाथ में  
जज बनकर अच्छे अच्छों का लुभा लेते हैं दिल  
है निहायत खुशानुमा दोजीम उनके हाथ में  
मगरिब ऐसा ही रहा और है अगर मशिरक यही  
एक दिन देखेंगे हफ़त अकलीम उनके हाथ में

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 171)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



اکبر الہ آبادی

۱۸۳۶-۱۹۲۱

### وہ اور ہم

تخت کے قابض وہی دیکھیں ان کے ہاتھ میں  
ملک ان کا رزق ان کے ہاتھ میں  
برق کی صورت پہنچا ہے طبائع پر اثر  
آگیا تار امید و بیم ان کے ہاتھ میں  
ہم کو سایہ پر جنوں اور دھوپ میں مصروف کار  
مس یہ ہے اپنی نظر اور سیم ان کے ہاتھ میں  
مہر باقی ہے نہ ہم میں باہمی اعزاز ہے  
سب کی ہے تزییل اور تعظیم ان کے ہاتھ میں  
شیخ کی جانب کوئی جاتا نہیں کہتے ہیں سب  
ہے فقط اب کوثر و تسنیم ان کے ہاتھ میں  
مغربی رنگ و روش پر کیوں نہ آئیں اب قلوب  
قوم ان کے ہاتھ میں تعلیم ان کے ہاتھ میں  
جج بنا کر اچھے اچھوں کا بسھا لیتے ہیں دل  
ہیں نہایت خوشنما دو جیم ان کے ہاتھ میں  
مغرب ایسا ہی رہا اور ہے اگر مشرق بھی  
ایک دن دیکھیں گے ہفت اقلیمان کے ہاتھ میں

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص-۱۷۱)

مصنف:- علی جواد زیدی



शिवली नोमानी

1857-1914

### पहली जंग-ए-अज़ीम और हिन्दुस्तानी

इक जर्मनी ने मुझसे कहा अजरहे गुरुर  
आसर्नो नही है फलह तौ दुश्वार भी नही

बरतानिया की फौज है दस लाख से भी कम  
और इस पे लुत्फ यह है कि तैयार भी नही

बाकी रहा फ्रॉस वह रिद-ए-लमयजल  
आई शनास-ए-शीवा-ए-पैकार भी नही

मैने कहा गलत है तेरा दावा-ए-गुरुर  
दीवाना तू नही है जो तो होशियार भी नही

हम लोग अहल-ए-हिन्द हैं जर्मन से दस गुने  
तुझको तमीज अंदक-ओ-बिसियार भी नही

सुनता रहा वह गौर से मेरा कलाम और  
फिर वह कहा जो लायक-ए-इजहार भी नही

“इस सादगी पे कौन न मर जाये ऐ खुदा  
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नही”

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 149)  
रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



شبلی نعمانی

۱۸۵۷-۱۹۱۳

## پہلی جنگ عظیم اور ہندوستانی

اک جرمنی نے مجھ سے کہا از روہ غرور  
آساں نہیں ہے فتح تو دشوار بھی نہیں

برطانیہ کی فوج ہے دس لاکھ سے بھی کم  
اور اس پہ لطف یہ ہے کہ تیاری بھی نہیں

باقی رہا فرانس تر وہ زندلم یزل  
آئیں شناس شیرہ بیچار بھی نہیں

میں نے کہا قلعہ ہے ترا دعوے غرور  
دیوانہ تو نہیں ہے تو ہوشیار بھی نہیں

ہم لوگ اہل ہند ہیں جرمن سے دس گنے  
چھ کو تیر اندک دسیار بھی نہیں

سنار ہا وہ خور سے میرا کلام اور  
پھر وہ کہا جو لائق اظہار بھی نہیں

" اس سادگی پہ کون نہ مر جائے اے خد  
لڑتے ہیں اور ہاتھ میں تلوار بھی ہیں،،

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص-۱۳۹)

مصنف:- علی جواد زیدی



ब्रज मोहन दत्तात्रिया कैफ़ी

1866-1955

### मगरिबी कौमों का फ़लसफ़ा

मुहज्जब जिन्हें आज कहती हैं दुनिया  
उन अक़वाम ही ने यह आइंन निकाला

जो मंजूर है अमन हो इस जहाँ में  
न जानें कोई जंग हों इस जहाँ में

तो तुम जंगी ताकत को अपनी बढ़ाओ  
जहाँ तक बनें, तोपें गैसों बनाओ

हवा पर समुंद्र में और इस ज़मीं पर  
करो क़त्ल-ओ-ग़ारत के सामान एकसर

जो तैयार हो जाओ इस तरह सब तुम  
तो हो जायेंगी जंग ही दहर से गुम

मुदब्बिर यह मगरिब के कहते हैं हम से  
जहाँगीर हुआ मन तोप और बम से



यह मग़िब की कौमों का जो फलसफ़ा है  
इसी पर अमल हर रियाकार का है

किसी ने बदी तुम से की या न की हो  
बदी तुम करो इससे हो सकती है जो

ग़र्ज यह कि तुम से डरें लोग सारें  
करो दाओं पहलें तो हैं वारें न्यारें

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 153)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



برج مومن داتا تریہ کیفی

۱۸۶۶ - ۱۹۵۵

### مغربی قوموں کا فلسفہ

مہذب جنہیں آج کہتی ہے دنیا  
ان اقوام ہی نے یہ آئین نکالا

جو منظور ہے امن ہو اس جہاں میں  
نہ جانے کوئی جنگ کو اس جہاں میں

تو تم جنگی طاقت کو اپنی پرہیزگار  
جہاں تک بنے تو ہمیں گیسیں بناؤ

ہوا پر سمندر میں اور اس زمیں پر  
کر دقتل و غارت کے سامان پکسر

جو تیار ہو جاؤ اس طرح سب تم  
تو ہو جائے گی جنگ ہی دہر سے گم

مگر یہ مغرب کے کہتے ہیں ہم سے  
جہانگیر ہوا من توپ اور ہم سے

یہ مغرب کی قوموں کا جو فلسفہ ہے

اسی پر عمل ہر ریاضی کا ہے

کسی نے بری تم سے کی یا نہ کی ہو  
بدی تم کرو اس سے ہو سکتی ہو جو

فرض یہ کہ تم سے ذریعہ لوگ سارے  
کرہ دور پہلے تو ہیں دارے نیارے

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص-۱۵۳)

مصنف:- علی جواد زیدی



आज़ाद अंसारी  
1871-1942

## तालीम बेदारी

क्या कहें क्यों, यूँ रु-ब-कजा हैं  
क्या कहें क्यों गैरों से खफ़ा हैं  
क्या कहें क्यों बे-ज़ार वफ़ा हैं  
डेढ़ सदी से सर्फ़-ए-जफ़ा हैं

आखिर जन्न गवारा कब तक

आखिर सब्र का यारा कब तक

गफलत करके जी नहीं सकते  
फ़ाक़े भर के जी नहीं सकते  
भूखों मर के जी नहीं सकते  
जी से गुज़र के जी नहीं सकते

अब दिल मरने से नहीं डरता है

आखिर मरता क्या नहीं करता

यारों हाल-ए-मुल्क तो देखो

रंग-ओ-बाल-ए-मुल्क तो देखो

फ़र्त-ए-ज़वाल-ए-मुल्क तो देखो

कहत-ए-रिजाल-ए-मुल्क तो देखो

आँख है और गम खेज़ मनाज़िर

बिल्कुल यास अंगेज़ मनाज़िर

कोई मायल कार-ए-गुलामी

कोई हामिल-ए-बार गुलामी  
जिस को देखो यार गुलामी  
तीस करार और गार-ए-गुलामी

क्या कहें क्या कहने की जगह है

डूब के मर रहने की जगह है

उठो मुल्क के लालो उठो

उठो हिम्मत वालों उठो

उठो काम सभालो उठो

उठो वक्त न टालो उठो

फतह की हुकमी शान दिखाओ

शान दिखाओ आन दिखाओ

फिक्र अबस है जान न जाये

जान का क्या गम, आन न जाये

मुल्की कौमी शान न जाये

मर्द बनो मैदान न जाये

तोपों तक के बार न मानो

जानें दे दो हार न मानो

बढ़ो जवानो, औरतों, मर्दों

कर दो, तर्क गुलामी कर दो

घर दो, दर दो, जर दो, सर दो

भर दो, मुल्क कुहुन से भर दो

घर घर शमयें रीशन कर दो

चप्पा चप्पा गुलशन कर दो

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 261)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



آزاد انصاری

۱۸۷۱ - ۱۹۴۲

### تعلیم بیداری

کیا کہیں کیوں، یوں رو بقضا ہیں  
 کیا کہیں کیوں فیروں سے خفا ہیں  
 ہیں کیا کہیں کیوں بیزار وفا  
 ڈیڑھ صدی سے صرف جفا ہیں

آخر جبر گوارا کب تک  
 آخر صبر کا یارا کب تک  
 غفلت کر کے جی نہیں سکے  
 فاقے بھر کے جی نہیں سکے  
 بھوکوں مر کے جی نہیں سکے  
 جی سے گزر کے جی نہیں سکے

اب دل مرنے سے نہیں ڈرتا ہے  
 آخر مرتا کیا نہیں کرتا

یارو حال ملک تو دیکھو  
 رنگ و بال ملک تو دیکھو  
 فرط زوال ملک تو دیکھو  
 قحط و جال ملک تو دیکھو

آنکھ ہے اور غم حز: مناظر  
 بالکل یاس انگیز مناظر

کوئی مائل کار غلامی  
 کوئی حامل بار غلامی  
 جس کو دیکھو یار غلامی  
 تیس کرور غار غلامی  
 کیا کہیں کیا کہنے کی جگہ ہے  
 دُوب کے مر رہنے کی جگہ ہے  
 اٹھو ملک کے والو اٹھو  
 اٹھو بہت والو اٹھو  
 اٹھو کام سنبھا لو اٹھو  
 اٹھو وقت نہ نالوائو  
 فتح کی حکمی شان دکھاؤ  
 شان دکھاؤ آن دکھاؤ  
 فکر عبت ہے جان نہ جائے  
 جان کا کیا غم، آن نہ جائے  
 ملکی قوی شان نہ جائے  
 مرد بنو میدان نہ جائے  
 توپوں تک کے وارنہ بانو  
 جانیں دے دو بار نہ بانو  
 بڑھو، جوانو، عورتوں، مردو  
 کر دو، ترک غلامی کر دو  
 گھر دو، درود زردو، سردو  
 بھر دو ملک کو ہن سے بھر دو  
 گھر گھر شمعیں روشن کر دو  
 چپہ چپہ گلشن کر دو

ماخذ:-

کتاب :- اردو میں قومی شاعری کے سوسال (ص-۲۶۱)

مصنف :- علی جواد زیدی



ज़फ़र अली ख़ाँ  
1873-1956

## ऐलान-ए-जंग

गाँधी ने आज जंग का ऐलान कर दिया  
बातिल से हक को दस्त-ओ-गरीबान कर दिया

सर रख दिया रजा-ए-खुदा की हरीम पर  
खंजर को फिर हवाला-ए-शैतान कर दिया

हिन्दुस्तान में इक नयी रूह फूँक कर  
आजादी-ए-हयात का सामान कर दिया

दुश्मन में और दोस्त में होने लगी तमीज़  
कितना बड़ा यह मुल्क पे एहसान कर दिया

देखकर वतन को तर्क-ए-मुवालात का सबक  
मिल्लत की मुश्किलात को आसान कर दिया

शोखा और ब्रह्मण में बढ़ाया वह इत्तिहाद  
गोया उन्हें दो कालिब-ओ-यकजान कर दिया



औराक-ए-जब्र-ओ-जौर-ओ-जफ़ा को बिखेर के  
शीराजूा सल्तनत का परेशान कर दिया

जुल्म-ओ-सितम की नाव डुबाने के वास्ते  
कतरे को आखों आखों में तूफ़ान कर दिया

तन मन किया निसार खिलाफ़त के नाम पर  
सब कुछ खुदा के नाम पर कुर्बान कर दिया

पर्वरदिगार ने कि वह है आदमी शनास  
गाँधी को भी यह मरतबा पहचान कर दिया

स्रोत:

पुस्तक: हिन्दुस्तॉ हमार खण्ड-2 (पृष्ठ 146)

रचनाकार: जॉ निसार अख़्तर



ظفر علی خان

۱۸۷۳ - ۱۹۵۶

## اعلان جنگ

باطل سے حق کو دست گریبان کر دیا  
گاندھی نے آج جنگ کا اعلان کر دیا

رکھ دیا رضا سے خدا کی حریم پر سر  
خنجر کو پھر حوالہ شیطان کر دیا

ہندوستان میں ایک نئی روح پھونک کر  
آزادی حیات کا سامان کر دیا

دشمن میں اور دوست میں ہونے لگی تعمیر  
کتنا بڑا یہ ملک پہ احسان کر دیا

دے کر وطن کو ترک موالات کا سبق  
ملت کی مشکلات کو آسان کر دیا

شیخ اور برہمن میں پڑھا یا و اتحاد  
گویا انہیں دو قالب ویک جان کر دیا

اوراق جبر و جور و جفا کو بکھیر کے  
شیرازہ سلطنت کا پریشان کر دیا

ظلم و ستم کی ناؤ ڈوبنے کے واسطے  
قطرے کو آنکھوں آنکھوں میں طوفان کر دیا

تن منگیا ثار خلافت کے نام پر  
پر کچھ خدا کے نام پہ قربان کر دیا

ہو آدمی شناس پور دگار نے کہ وہ  
گاندھی کو بھی یہ مرتبہ پہچان کر دیا

ماخذ:-

کتاب:- ہندوستان ہمارا (ص-۱۴۶)

مصنف:- جاں نثار اختر



ज़फ़र अली ख़ाँ  
1873-1956

### इकिलाब

गर हमारी तरह तुम भी ग़ैर के मद्दकूम हो  
फिर जरा तुमको भी कद-ए-आफियत मालूम हो  
जुल्म को इंसफ कह लेना तो आसों हैं मगर  
कायल इस मतिक के हम जब हो कि तुम मजलूम हो  
वक्त आ पहुँचा कि बरपा हो नया इक इकिलाब  
और यह नज़्म-ए-जिंदगी बार-ए-दीगर मजूम हो  
वक्त आ पहुँचा है तक् सीम काँमाँ की नयी  
इक नयी दुनियाँ हो और इसका नया मकसूम हो  
वक्त आ पहुँचा कि हो नाबूद तहजीब-ए-जदीद  
हस्त-ओ-बूद इसका वुजूद-ए-नुक्ता-ए-मौहूम हो  
वक्त आ पहुँचा कि मेहनत का मिले बन्दों को अज़  
साअत आ पहुँची कि जाँ खादिम है वो मख़दमू हो

स्रोत:

पुस्तक: हिन्दुस्तौं हमारा खण्ड-2 (पृष्ठ 147)

रचनाकार: जाँ निसार अख़्तर



ظفر علی خان

۱۸۷۳-۱۹۵۶

### انقلاب

اگر ہماری طرح تم بھی غیر کے محکوم  
ہو پھر ذرا تم کو بھی قدر ناپیت معلوم ہو  
ظلم کو انصاف کہہ لینا تو آسانی ہو مگر  
فائل اس منطق کے ہم جب ہوں کہ تم مظلوم ہو  
وقت آپہنچا کہ برپا ہو نیا اک انقلاب  
اور یہ نظم زندگی بار دیگر منظوم ہو  
وقت آپہنچا کہ ہو تقسیم قوموں کی نئی  
ای نئی دنیا ہو اور اس کا نیا مقوم ہو  
وقت آپہنچا کہ ہو نابود تہذیب جدید  
ہست و بود اس کا وجود نقطہ موہوم ہو  
وقت آپہنچا کہ محنت کالے بندوں کو اجر  
ساعت آپہنچی کہ جو خادم ہر وہ مخدوم ہو

ماخذ:-

کتاب:- ہندوستان ہمارا (ص-۱۳۷)

مصنف:- جاں نثار اختر



ज़फ़र अली ख़ाँ  
1873-1956

### इंक्लाब-ए-हिन्द

बारहा देखा है तू ने आसमाँ का इंक्लाब  
खोल आँख और देख अब हिन्दोस्ताँ का इंक्लाब  
मगरिब ओ मशिरक नजर आने लगे जेर-ओ-ज़बर  
इंक्लाब-ए-हिन्द है सारे जहाँ का इंक्लाब  
कर रहा है कस-आजादी की बुनियाद उस्तुवार  
फितरत-ए-तिफल-ओ-जन-ओ-पीर-ओ-जवाँ का इंक्लाब  
सब वाले छा रहे हैं जब की अक्लीम पर  
हो गया फसूँदा शमशीर-ओ-सिनाँ का इंक्लाब

स्त्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 194)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



ظفر علی خان

۱۸۷۳-۱۹۵۶

### انقلاب ہند

بارہا دیکھا ہے تو نے آسماں کا انقلاب  
کھول آگے اور دیکھ اب ہندوستان کا انقلاب  
مغرب و مشرق نظر آنے لگے زیر و زیر  
انقلاب ہند ہے سارے جہاں کا انقلاب  
گر رہا ہے قصر آزادی کی بنیاد استوار  
فطرت طفل و زن و بچہ و جوان کا انقلاب  
صبر والے چھا رہے ہیں جبر کی اقلیم پر  
ہو گیا فرسودہ شمشیر و سناں کا انقلاب

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص-۱۹۳)

مصنف:- علی جواد زیدی



दुर्गासहाय सुरुर जहाँनाबादी

1873-1910

### मग़िब ज़दगी

वह बज़्म है न वह साकी न वह मै-ए-गुलरंग  
वह साज है न वह मुतरिब न शोर-ए-नग्मा-ए-चंग  
नये नये नज़र आते हैं रोज़-ओ-शब अलबम  
नये नये हैं मनाजिर नये नये नैरंग  
मसू की आँखों ने अफ़सूँ कुछ ऐसा फूक दिया  
कि बुत से नज़र आते हैं सैकड़ों फ़रसंग  
वह लेखियों के खदग-ए-नज़र से अब हैं शहीद  
जो दिल हसीनों की तंग-ए-अदा से थे चौरंग  
हवा में हाँ कोई बँलून जिस तरह उड़ता  
उड़ते फिरते हैं यूँ दिलपरी-ओ-शान-ए-फिरंग  
यह सादगी ने किया खून-ए-रंग आराइश  
कि मँहदी फीकी है लाखा है पान का बदरंग  
जबाँ से गो न कहे खुल के शर्म से लेकिन  
हिजाब-ओ-पर्दा है अब मँहविशों को बाइस-ए-नंग



न अब वह जुब्बा-ओ-दस्तार है न शान-ए-कबा  
कि सर पे हैट है जेब-ए-बदन है जॉकेट तंग  
मसू का जिक्र है, कहते हैं किसको सोम-ओ-सलात  
वजू के बदले है हॉटल में बादा-ए-गुलरंग  
न बुतकदे में वह नाकूस की सदायें हैं  
न लहर अगली इशानान की है अब लब-ए-गंग  
सबक पढ़ाया है तालीम न हमें उल्टा, सो  
उठा के ताक पे रखा दी है अक्ल की फर्हंग

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 184)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



درگاہائے سرور جہان آبادی

۱۸۷۳-۱۹۱۰

## مغرب زدگی

وہ بزم ہے نہ وہ ساقی نہ وہ مئے گلرنگ  
وہ ساز ہے نہ وہ مطرب نہ شورِ نغمہ چنگ  
نئے نئے نظر آتے ہیں روز و شب الم  
نئے نئے ہیں مناظر نئے نئے نیرنگ  
مسوں کی آنکھوں نے افسوں کچھ ایسا پھونک دیا  
کہ بت سے نظر آتے ہیں سینکڑوں فرنگ  
وہ لہڑیوں کے خدنگ نظر سے اب ہیں شبید  
جو دل حسینوں کی تیغ ادا سے تھے چورنگ  
ہوا میں ہو کوئی بیلون جس طرح اڑتا  
اڑتے پھرتے ہیں یوں دل پری و شن فرنگ  
یہ سادگی نے کیا خون رنگ آرائش  
کہ مہندی پھینکی ہے لاکھا ہے پان کا بدرنگ  
زباں سے گو نہ کہیں کھل کے شرم سے لیکن  
حجاب و پردہ ہے اب مہوشوں کو باعث تنگ

نہ اب وہ جتہ و دستار ہے نہ شانِ قبا  
کہ سر پہ ہیٹ ہے زیبِ بدن ہے جاگت گنگ  
مسوں کا ذکر ہے کہتے ہیں کس کو صوم و صلوة  
وضو کے بدلے ہے ہوٹل میں بادۂ گلرنگ  
نہ بت کدے میں وہ ناقوس کی صدائیں ہیں  
نہ لہر اگلی اشان کی ہے لب لب گنگ  
سبق پڑھایا ہے تعلیم نے ہمیں اتنا، سو  
اتھا کے طاق پہ رکھ دی ہے عقل کی فرہنگ

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص-۱۸۴)

مصنف:- علی جوادی زیدی



हसरत मोहानी  
1875-1951

### जौर-ए-गुलामान-ए-वक्त

रस्म-ए-जफ़ा कामयाब देखिये कब तक रहे  
हुब्ब-ए-वतन मस्त-ए-ख़्वाब देखिये कब तक रहे  
दिल पे रहा मुद्दतों गल्ब-ए-यास-ओ-हरास  
कब्ज़ा-ए-हज़्म-ओ-हिजाब देखिये कब तक रहे  
ता ब कुजा हा दरीज़ सिलसिला-ए-फ़रब  
जब्त की लोगों में ताब देखिये कब तक रहे  
पर्दः-ए-इस्लाम में कोशिश-ए-तख़रीब का  
खल्क-ए-ख़ुदा पर अजाब देखिये कब तक रहे  
नाम से कानून के होते हैं क्या क्या सितम  
जब व जौर-ए-नकाब देखिये कब तक रहे  
दाँतल-ए-हिन्दोस्तां कब्ज़ा-ए-अग़यार में  
बेअदद-ओ-बेहिसाब देखिये कब तक रहे  
हैं तो कुछ उखड़ा हुआ बज़्म-ए-हरीफ़ का रंग  
अब यह शराब-ओ-कबाब देखिये कब तक रहे  
हसरत-ए-आजाद पर जौर-ए-गुलामान-ए-वक्त  
अजरह-ए-बुग्ज-ओ-अताब देखिये कब तक रहे

स्रोतः

पुस्तकः हिन्दुस्तॉं हमार खण्ड-2 (पृष्ठ 148)

रचनाकारः जाँ निसार अख़्तर



حسرت موہانی

۱۸۷۵ - ۱۹۵۱

### جورغالامن وقت

رسم جفا کامیاب دیکھئے کب تک رہے  
حُب وطن مست خواب دیکھئے کب تک رہے  
دل پہ رہا نڈتوں غلبہ یاس و ہراس  
قیصرِ حرم و حجاب دیکھئے کب تک رہے  
تا یہ کیا ہو وزیر سلسلہ فریب  
ضبط کی لوگوں میں تاب دیکھئے کب تک رہے  
پروہ اسلام میں کوشش تخریب کا  
خلق خدا پر عذاب دیکھئے کب تک رہے  
نام سے قانون کے ہوتے ہیں کیا کیا حکم  
جبر بہ زیر نقاب دیکھئے کب تک رہے  
دولت ہندوستان قیصرِ اغیار میں  
بے عدد د بے حساب دیکھئے کب تک رہے  
ہے تو کچھ اکھڑا ہوا برم حریف کا رنگ  
اب یہ شراب و کہاب دیکھئے کب تک رہے  
حسرت آزاد پر جورِ نلامن وقت  
ازراہ لغز و عتاب دیکھئے کب تک رہے

ماخذ:-

کتاب:- ہندوستان ہمارا (ص ۱۴۸)

مصنف:- جاں نثار اختر



अल्लामा इकबाल

1877-1938

### हिन्दुस्तानी बच्चों का कौमी गीत

चिश्ती ने जिस जमीं में पैगाम-ए-हक सुनाया  
नानक ने जिस वमन में वहदत का गीत गाया  
तातारियों ने जिस का अपना वतन बनाया  
जिस ने हिजाजियों से दश्त-ए-अरब छुड़ाया

मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है

यूनानियों का जिस ने हैरान कर दिया था  
सारे जहाँ का जिस ने इल्म ओ हुनर दिया था  
मिट्टी को जिस की हक ने जर का असर दिया था  
तुर्कों का जिस ने दामन हीरों से भर दिया था

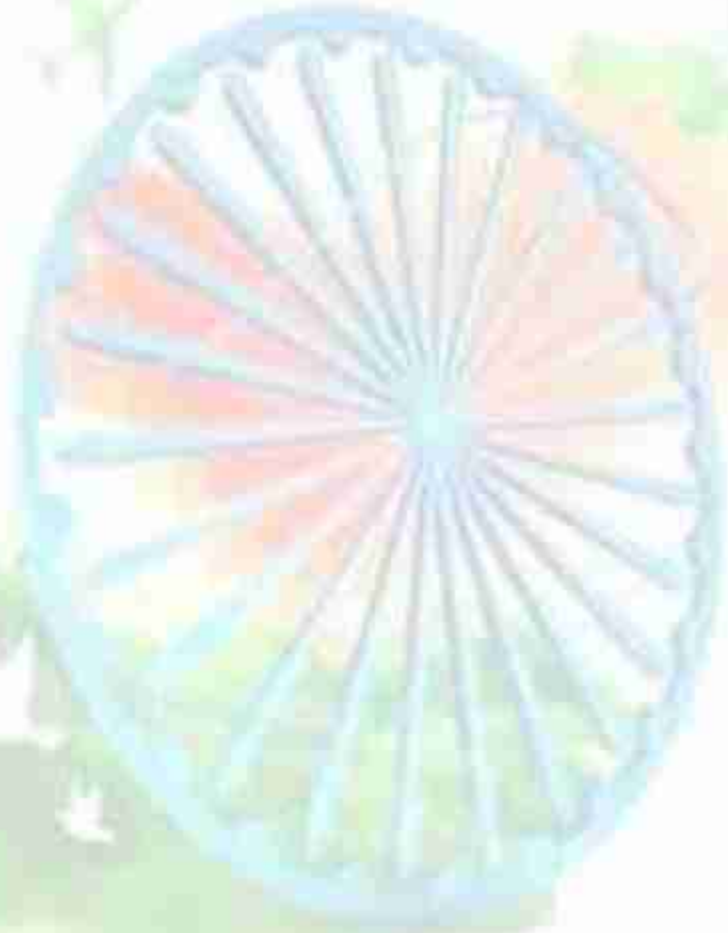
मेरा वतन वही है मेरा वमन वही है

टूटें थे जां सितारे फ़ारस के आसमाँ से  
फिर ताब दे के जिस ने चमकाए कहकशाँ से  
वहदत की लय सुनी थी दुनिया ने जिस मकाँ से  
मीर-ए-अरब को आई ठंडी हवा जहाँ से

मेरा वतन वही है मेरा वमन वही है

बंदे कलीम जिस के पर्वत जहाँ के सीना  
नूर-ए-नबी का आ कर ठहरा जहाँ सफ़ीना  
रिफ़अत है जिस जमीं की बाम-ए-फलक का जीना  
जन्नत की जिदगी है जिस की फज़ा में जीना

मेरा वतन वही है मेरा वमन वही है



स्त्रोत:

पुस्तक : बाँग-ए-दरा खण्ड-1 (पृष्ठ 148)

रचनाकार : अल्लामा इक़बाल



علامہ اقبال

۱۸۷۷ - ۱۹۳۸

## ہندوستانی بچوں کا قومی گیت

چشتی نے جس زمیں میں پیغام حق سنایا  
نانک نے جس چمن میں وحدت کا گیت گایا  
تاتاریوں نے جس کو اپنا وطن بنایا  
جس نے حجازیوں سے دشت عرب چھڑایا  
میرا وطن وہی ہے میرا وطن وہی ہے  
یونانیوں کو جس نے حیران کر دیا تھا  
سارے جہاں کو جس نے علم و ہنر دیا تھا  
مسی کو جس کی حق نے زر کا اثر دیا تھا  
ترکوں کا جس نے دامن بیروں سے بھر دیا تھا  
میرا وطن وہی ہے میرا وطن وہی ہے  
ٹوٹے تھے جو ستارے فارس کے آسمان سے  
پھر تاب دے کے جس نے چمکائے کہکشاں سے  
وحدت کی لے سنی تھی دنیا نے جس مکاں سے  
میر عرب کو آئی ٹھنڈی ہوا جہاں سے  
میرا وطن وہی ہے میرا وطن وہی ہے



بندے کلیم جس کے پر بت جہاں کے سینا  
نوح نبی کا آ کر ٹھہرا جہاں سینا  
رفعت ہے جس زمیں کی بام فلک کا زینا  
جنت کی زندگی ہے جس کی فضا میں سینا  
میرا وطن وہی ہے میرا وطن وہی ہے

ماخذ:-

کتاب:- بانگ درا حصہ اول (ص-۸۷)

مصنف:- علامہ اقبال



मुहम्मद अली जौहर  
1878-1931

## आशियाना बर्बाद

हैं यह अन्दाज़ ज़माने के  
और ही ढंग है सताने के  
घर छूटा यूँ कि छोड़ने वाले  
थे न हम उसके आस्ताने के  
एक इक करके सबके सब तिनके  
किये बरबाद आशियाने के  
कुछ दिनों घूमता मुकद्दर था  
साथ-साथ अपने आब-ओ-दाने के  
देखिये अब यह गर्दिश-ए-तकदीर  
कहीं आने के हैं न जाने के  
पूछते क्या हो बद-ओ-बाश का हाल  
हम हैं बाशिनदे जेलखाने के

स्रोत:

पुस्तक: हिन्दुस्तान हमार खण्ड-2 (पृष्ठ 153)

रचनाकार: जौ निसार अख्तर



محمد علی جوہر

۱۸۷۸-۱۹۳۱

### آشیانہ برباد

ہیں یہ اندازِ زمانے کے  
اور ہی دھنگ ہیں ستانے کے  
گھر چھوٹا یوں کہ چھوڑنے والے  
تھے نہ ہم اُس کے آستانے کے  
ایک اک کر کے سب کے سب  
کے برباد آشیانے کے  
کچھ دنوں گھومتا مقدر تھا  
ساتھ ساتھ اپنے آب و دانے کے  
دیکھئے اب گردشِ تقدیر  
کہیں آنے کے ہیں نہ جانے کے  
پوچھتے کیا ہو بد ادبائش کا حال  
ہم ہیں باشندے جیل خانے کے

ماخذ:-

کتاب:- ہندوستان ہمارا حصہ دوم (ص-۱۵۳)

مصنف:- جاں نثار اختر



मुहम्मद अली जौहर  
1878-1931

### खूगर-ए-सितम

न उड़ जायें कहीं कौदी कफस के  
जरा पर बाँधना सय्याद कस के  
निशान-ए-आशियाँ क्या जिस चमन में  
लगे हो ढेर हर सू खार-ओ-खस के  
मिले इक खुम तो मैखाने से साकी  
कि हम छूटे हुए हैं दो बरस के  
गिराँ हो अब तो, शायद सैर-ए-गुल भी  
कुछ ऐसे हो गये खूगर कफस के  
मिली है कौद आजादी की खातिर  
न पड़ जायें कहीं दाँनों के चस्के  
चमन तो हमने खुद छोड़ा है गुलची  
गिले फिर क्या करें कौद-ओ-कफस के

स्रोत:

पुस्तक: हिन्दुस्तान हमारा खण्ड-2 (पृष्ठ 153)

रचनाकार: जाँ निसार अख्तर



محمد علی جوہر

۱۸۷۸ - ۱۹۳۱

خوگر ستم

نہ از جائیں کہیں قیدی قفس سے  
ذرا پر باندھنا صیاد کس کے

نشان آشیاں کیا جس چمن میں  
لگے ہوں ڈھیر ہر سو خار و خس کے

لے اک خم تو میخانے سے ساق  
کہ ہم چھوٹے ہوئے ہیں دو برس کے

گراں ہو اب تو شاید میر گل بھی  
کچھ ایسے ہو گئے خوگر قفس کے

ملی ہے قید آزادی کی خاطر  
نہ پڑ جائیں کہیں دونوں کے چسکے

چمن تو ہم نے خود چھوڑا ہے  
گلے پھر کیا کریں قید و قفس کے

ماخذ:-

کتاب:- ہندوستان ہمارا حصہ دوم (ص-۱۵۳)

مصنف:- جاں نثار اختر



ब्रज नारायण चक्रवस्त

1882-1926

### पयाम-ए-वफ़ा

हिन्द बेदार हुआ यूँ तेरी बेदारी से  
जैसे बरसों का मरीज उठता है बीमारी से  
कौम आजाद हुई तेरी गिरफ्तारी से  
चांदनी फैल गई हुस्न-ए-वफ़ादारी से

तू नजर बंद है जलवा है तेरा हर घर में  
शमा फ़ानूस में है नूर है महफ़िल भर में

हुक्म हाकिम का है फ़र्याद-ए-जबानी रुक जाये  
दिल की बहती हुई गंगा की रवानी रुक जाये  
कौम कहती है हवा बंद हो पानी रुक जाये  
पर ये मुमकिन नहीं अब जोश जवानी रुक जाये

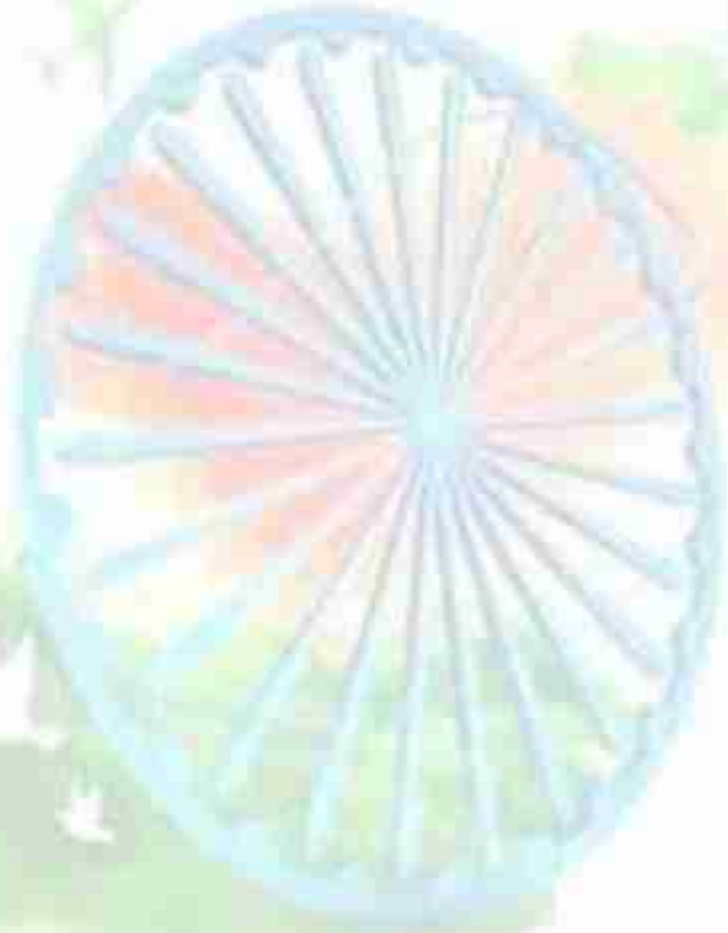
हों खबरदार जिन्होंने यह अजीयत दी है  
कुछ तमाशा यह नहीं कौम ने करवट ली है

हो चुकी कौम के मातम में बहुत सीना ज़नी  
अब हो इस रंग का सन्यास यह है दिल में ठनी  
मादर-ए-हिन्द की तस्वीर हो सीने पे बनी  
बेड़ियाँ पाँव में हों और गले में कफ़नी

हों यह सूरत से अयाँ आशिक-ए-आजादी है  
कुपल है जिनकी ज़बाँ पर यह वह फ़र्यादी है

आज से शौक-ए-वफ़ा का यही जौहर होगा  
फ़र्श कांटों का कहीं फूलों का बिस्तर होगा

फूल हो जायेगा छाती पे जो पत्थर होगा  
कँद खाना जिसे कहते हैं वही घर होगा  
सनतरी देख के इस जोश को शर्मियेंगे  
गीत जंजीर की झंकार पे हम गायेंगे



स्त्रोत:  
पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल\_(पृष्ठ 154)  
रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



برج نرائن چکبست

۱۸۸۲ - ۱۹۲۶

### پیام وفا

بند بیدار ہوا یوں تیری بیداری سے  
جیسے برسوں کا مریض اٹتا ہے بیماری سے  
قوم آزاد ہوئی تیری گرفتاری سے  
چاندنی پھیل گئی حسن وفاداری سے

تو نظر بند ہے جلوہ ہے تیرا ہر گھر میں  
شع فائوس میں ہے نور ہے محفل بھر میں

حکم حاکم کا ہے فریاد زبانی رگ جائے  
پر یہ ممکن نہیں اب جوش جوانی رگ جائے  
قوم کہتی ہے ہوا بند ہو پانی رگ جائے  
پر یہ ممکن نہیں اب جوش جوانی رگ جائے

ہوں خرددار جنہوں نے یہ اذیت دی ہے  
کچھ تماشا یہ نہیں قوم نے کروٹ لی ہے

ہو چکی قوم سے ماتم میں بہت سینہ زنی



اب ہو اس رنگ کا سنیاں یہ ہے دل میں ٹھنی  
مادرِ ہند کی تصویر ہو سینے پہ بند  
بیڑیاں پاؤں میں ہوں اور گلے میں کٹھنی

ہو یہ صورت سے عیاں عاشقِ آزادی ہیں  
قفل ہیں جن کی زباں پر یہ وہ فریادی ہیں

آج سے شقِ وفا کا یہی جوہر ہوگا  
فرشِ کانٹوں کا کہیں پھولوں کا بستر ہوگا  
پھول ہو جائے گا چھاتی پہ جو پتھر ہوگا  
قید خانہ جسے کہتے ہیں وہی گھر ہوگا

سنتری دیکھ کے اس جوش کو شرمائیں گے  
گیتِ زنجیر کی جھکار پہ ہم گائیں گے

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص-۱۵۳)

مصنف:- علی جواد زیدی



ब्रज नारायण चक्रवस्तु  
1882-1926

## हमारा वतन दिल से प्यारा वतन

ये हिन्दोस्ताँ है हमारा वतन  
मोहब्बत की आँखाँ का तारा वतन  
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन  
वाँ इस के दरखताँ के तैयारियाँ  
वाँ फल फूल पाँधे वाँ फुल-वारियाँ  
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन  
हवा में दरखताँ का वाँ झूमना  
वाँ पत्ताँ का फूलाँ का मुँह चूमना  
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन  
वाँ सावन में काली घाटा की बहार  
वाँ बरसात की हल्की हल्की फुवार  
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन  
वाँ बागों में कोयल वाँ जंगल के मोर  
वाँ गंगा की लहरें वाँ जमुना का जोर  
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन  
इसी से है इस जिंदगी की बहार  
वतन की मोहब्बत हो या माँ का प्यार  
हमारा वतन दिल से प्यारा वतन

स्रोत:

पुस्तक: आजादी की नज़्में (पृष्ठ 42)

रचनाकार: सिब्रो हसन



برج نرائن چکبست

۱۸۸۲ - ۱۹۲۶

## ہمارا وطن دل سے پیارا وطن

ہے ہندوستان ہے ہمارا وطن  
محبت کی آنکھوں کا تارا وطن  
ہمارا وطن دل سے پیارا وطن  
وہ اس کے درختوں کے تیریاں  
وہ پھل پھول پودے وہ سپلواریاں  
ہمارا وطن دل سے پیارا وطن  
ہوا میں درختوں کا وہ جھومنا  
وہ پتوں کا پھولوں کا منہ چومنا  
ہمارا وطن دل سے پیارا وطن  
وہ سادوں میں کالی گھٹا کی بہار  
وہ برسات کی جگہی پھوار  
ہمارا وطن دل سے پیارا وطن  
وہ باغوں میں کونکوں وہ جنگل کے مور  
وہ گنگا کی لہریں وہ جتنا کا زور  
ہمارا وطن دل سے پیارا وطن  
اسی سے ہے اس زندگی کی بہار  
وطن کی محبت ہو یا ماں کا پیار  
ہمارا وطن دل سے پیارا وطن

ماخذ:-

کتاب:- آزادی کی نظمیں (ص- ۳۴)

مصنف:- سبط حسن



ब्रज नारायण चक्रवस्त

1882-1926

### हुब्ब-ए-कौमी

हुब्ब-ए-कौमी का जबों पर इन दिनों अपसाना है  
बादा-ए-उल्फत से पुर दिल का मेरे पैमाना है  
जिस जगह देखो मोहब्बत का वहाँ अपसाना है  
इश्क में अपने वतन के हर बशर दीवाना है  
जब कि ये आगाज है अजाम का क्या पूछना  
बादा-ए-उल्फत का ये तो पहला ही पैमाना है  
हैं जो रौशन बज़म में कौमी तरक्की का चराग  
दिल फिदा हर इक का उस पर सूरत-ए-परवाना है  
मुझ से इस हमदर्दी-ओ-उल्फत का क्या होवे बयौं  
जो हैं वो कौमी तरक्की के लिए दीवाना हैं

लुफ्त यकताई में जो है वो दुई में है कहाँ  
बस-खिलाफ इस के जो हो समझो कि वो दीवाना है  
नखल-ए-उल्फत जिन की कोशिश से उगा है कौम में  
काबिल-ए-तारीफ उन की हिम्मत-ए-मदर्ना है  
है गुल-ए-मक्सूद से पुर गुलशन-ए-कश्मीर आज  
दुश्मनी ना-इत्तिफाकी सब्जा-ए-बंगाना है  
दुर-फिशाँ है हर जबाँ हुब्ब-ए-वतन के वस्फ में  
जोश-जन हर सम्त बहर-ए-हिम्मत-ए-मदर्ना है  
ये मोहब्बत की फजा काएम हुई है आप से  
आप का लाजिम तह-ए-दिल से हमें शुक्राना है  
हर बशर को है भरोसा आप की इमदाद पर  
आप की हमदर्दियों का दूर दूर अपसाना है  
जम्अ है कौमी तरक्की के लिए अबाब-ए-कौम  
रश्क-ए-फिरदौस उन के कदमों से ये शादी-खाना है

स्रोत:

पुस्तक: हमारी कौमी शायरी (पृष्ठ 308)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



برج نرائن چکبست

۱۸۸۲ - ۱۹۲۶

## حُبّ قومی

حُبّ قومی کا زباں پر ان دنوں افسانہ ہے  
بادۂ الفت سے پر دل کا مرے پیانہ ہے  
جس جگہ دیکھو محبت کا وہاں افسانہ ہے  
عشق میں اپنے وطن کے ہر بشر دیوانہ ہے  
جب کہ یہ آغاز ہے انجام کا کیا پوچھنا  
بادۂ الفت کا یہ تو پہلا ہی پیانہ ہے  
ہے جو روشن بزم میں قومی ترقی کا چراغ  
دل فدا ہر اک کا اس پر صورت پر دانہ ہے  
مجھ سے اس سدا روی و الفت کا کیا ہووے بیاں  
جو ہے وہ قومی ترقی کے لیے دیوانہ ہے

لطف لیکائی میں جو ہے وہ دونی میں ہے کہاں  
 بر خلاف اس کے جو ہو سمجھو کہ وہ دیوانہ ہے  
 نخل الفت جن کی کوشش سے آگا ہے قوم میں  
 قابل تعریف ان کی ہمت مردانہ ہے  
 ہے گل مقصود سے پر گلشن کشمیر آج  
 دشمنی نااتفاقی بجز بیگانہ ہے  
 در فشاں ہے ہر زباں حب وطن کے وصف میں  
 جوش زن ہر سمت بحر ہمت مردانہ ہے  
 یہ محبت کی فضا قائم ہوئی ہے آپ سے  
 آپ کا لازم ہے دل سے ہمیں شکرانہ ہے  
 ہر بشر کو ہے بھروسا آپ کی امداد پر  
 آپ کی مدد دہیوں کا دور دور افسانہ ہے  
 جمع ہیں قومی ترقی کے لیے ادبای قوم  
 رشک فردوس ان کے قدموں سے یہ شادی خانہ ہے

ماخذ:-

کتاب:- ہماری قومی شاعری (ص ۳۰۸)

مصنف:- علی جواد زیدی



सीमाब अकबराबादी  
1882-1951

### जंगी तराना

दिलावरान-ए-तेज दम  
बढ़े चलो बढ़े चलो  
बहादुरान-ए-मुहतरम  
बढ़े चलो बढ़े चलो

तुम इकितदार-ए-कौम हो  
अमीन-ए-कार-ए-कौम हो  
निगाह दार-ए-कौम हो  
तुम्हीं वकार-ए-कौम हो

वकार-ए-कौम की कसम

बढ़े चलो बढ़े चलो \_\_\_\_\_ दिलावराने  
यह दश्मनों के मोर्चे  
फकत हैं देर खाक के  
तुम्हारे सामने जम  
कहा किसी में हौसले

नहीं हो तुम किसी से कम  
बढ़े चलो बढ़े चलो \_\_\_\_\_ दिलावराने



सितम के तमताराक को  
बढ़ा के हाथ छीन लो  
हैं फ़तह सामने चलौ  
उठो-उठो, बढ़ो बढ़ो

यह जाम-ए-जम-वह तख़्त-ए-जम!  
बढ़े चलो बढ़े चलो \_\_\_\_\_ दिलावराने  
हैं तुम में जोर-ए-हँदरी  
तो क्या बला है कँसरी  
मिटा दो इसकी खुद सरी  
जरी हों तुम, बढ़े जरी  
मगन मगन, क़दम क़दम  
बढ़े चलो बढ़े चलो \_\_\_\_\_ दिलावराने

1940

स्रोत:

पुस्तक: साज-ओ-आहंग (पृष्ठ 27)

रचनाकार: सीमाब अकबराबादी



سیاب اکبر آبادی

۱۸۸۲ - ۱۹۵۱

## جنگی ترانہ

ولا در ن  
بڑھے چلو ، بڑھے چلو  
بہادر ن  
بڑھے چلو ، بڑھے چلو

بہادر ن  
امین کار  
نگاہ دار  
اقدار قوم ہو  
قوم ہو  
قوم ہو

تسلیں وقار  
وقار قوم کی قسم  
قوم کی قسم

بڑھے چلو، بڑھے چلو \_\_\_\_\_ دلاورن

یہ دشمنوں کے مورچے  
فقط ہیں ڈھیر خاک کے  
تمہارے سامنے تھے  
کہاں کسی میں حوصلے؟

نہیں ہو تم کسی سے کم

بڑھے چلو، بڑھے چلو \_\_\_\_\_ دلاورن

ستم کے طمطراک کو  
بزحا کے ہاتھ چین لو  
ہے فتح سامنے چلو  
اشو اشو، بزھو بزھو

ہے جام جم - وہ تخت جم!

بزھے چلو، بزھے چلو

دلادرن

ہے تم میں زورِ حیدری  
تو کیا بلا ہے قیسری  
منا دو اسکی خود سری  
جری ہو تم بڑے جری  
گمن گمن، قدم قدم

بزھے چلو، بزھے چلو

دلادرن

(۱۹۳۰)

ماخذ:-

کتاب:- سازو آہنگ (ص- ۲۷)



इकबाल अहमद सुहैल

1884-1995

## गाँधी

वो हदीस-ए-रुह पयाम-ए-जाँ जिसे हम ने सुन के भुला दिया  
वो हरीम-ए-गँब का अरमुगँ जिसे पाँ के हम ने गँवा दिया  
वो मुल्क-ओ-मिल्लत-ए-जाँ-ब-लब जिसे उस ने आब-ए-बका दिया  
उसी ना-सिपास ने हाए अब उसें जाम-ए-मर्ग पिला दिया  
हमें जिस ने फूटह दिलाई थी उसें खाक-ओ-खूँ में मिला दिया  
हमें जिस ने राह दिखाई थी उसें रास्ते से हटा दिया  
उसे इत्तिबा-ए-मसीह ने वो अजीब दस्त-ए-शिफा दिया  
जाँ गिरे थे उन को उठा दिया जाँ मरे थे उन को जला दिया  
जाँ उठा था शाँला-ए-शोर-ओ-शर उसे अपने खूँ से बुझा दिया  
जाँ पड़ा था पर्दा निगाहों में उसे आप उठ के उठा दिया  
वो खमीदा-कद खम-ए-माह-ए-नाँ वो नजर-फरेब खुनुक सी जाँ  
वो निगाह-ए-बर्क-ए-अमल की राँ कि दिलों को जिस ने हिला दिया  
वो फरोग-बख़श-ए-हर-अजुमन कि जमाना-भर में था जाँ-फगन  
वो चराग-ए-बज्म गह-ए-वतन किसी तीरा-दिल ने बुझा दिया

वाँ किताब-ए-सुल्ह का सर-वरक कि मिटाई कश्मकश-ए-फिरक  
 वाँ कतील-ए-खंजर-ए-सब-ओ-हक कि वतन पे खुद को मिटा दिया  
 वाँ बाँधा और कृष्ण का जा-नशीं हमा-तन अमल हमा-तन यकीं  
 वाँ तबस्सुम-ए-सहर-आफरीं कि चमन लबाँ सें खाला दिया  
 वाँ ब-रंग-ए-आईना साफ-दिल वाँ फरोग-ए-फित्रत-ए-आब-ओ-गिल  
 कि जिहाद-ए-नफस नें मुस्तकिल उसें और हुस्न-ए-जिला दिया  
 वाँ जलाल-ए-शंवा-ए-सादगी वाँ जमाल-ए-सूरत-ए-जि दगी  
 वाँ जलाल-ए-चश्मा-ए-आगही कि जमाना-भर काँ जगा दिया  
 वाँ शारारा बर्क-ए-हयात का वाँ सितारा राह-ए-नजात का  
 वाँ मनारा अज्म-ओ-सबात का जिसें फित्ना-साज नें ढा दिया  
 असर उस का अब है वसीअ-तर कि हर एक दिल में है उस का घर  
 ये समझ के खुश न हों फित्ना-गर कि उसें पयाम-ए-फना दिया  
 तेरी शान काँन घटा सकें उसें खुद खुदा नें बढा दिया  
 कि तुझे बका-ए-दवाम दी तुझे मंसब-ए-शाहदा दिया  
 तिरी खामुशी वाँ जबान थी कि दिलों काँ जाँश-ए-नवा दिया  
 तन-ए-फाका-कश में वाँ जान थी कि हिसार-ए-किब हिला दिया  
 वतन-ए-अजीज काँ शान दी उसें कौद-ए-गम सें छुडा दिया  
 रह-ए-इत्तिहाद में जान दी जाँ कहा वाँ कर के दिखा दिया  
 जिन्हें जेर कर न सका सितम हुए सैद-ए-सिलसिला-ए-करम  
 तेरी नेकियों नें तेरी कसम सर-ए-खुद-सरी काँ झुका दिया  
 ये उरुस-ए-किशवर-ए-हिन्द थी हमा बंकसी हमा बद-दिली  
 उसें तू नें गाजा-ए-खुरमी तिरें खू नें रंग-ए-हिना दिया  
 तुझे मंदिरों नें सदाएँ दी कि तेरे करम सें अमाँ मिली

तुझे मस्जिदों ने दुआएँ दीं कि तबाहियों से बचा दिया  
ये कमाल-ए-पैरवी-ए-अली ये फराखा-हाँसलगी तेरी  
कि खुद अपने दुश्मन-ए-जाँ को भी वही अरमुगान-ए-दुआ दिया  
तुझे बेकसी ने सिपाह दी तुझे मुश्किलात ने राह दी  
तुझे बिजलियों ने पनाह दी तुझे तल्लियाँ ने मजा दिया  
यही धर्म है यही अस्ल-ए-दीं कि हो काँल सच तो अमल हसीं  
हक-आ-अहल-ए-हक पे रहे यकीं ये पयाम सब को सुना दिया  
हमा राँशानी तेरी जात थी हमा साँज तेरी हयात थी  
तेरी रूह शम्अ' थी गुल हुई तेरे तन को फूल बना दिया  
तेरा फँज दहर में आम हाँ ये गुबार उठ के गमाम हाँ  
तेरी खाक तेरा पयाम हाँ ये समझ के इस को बहा दिया

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 370)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



اقبال احمد سمیل

۱۸۸۳ - ۱۹۹۵

### گاندھی

وہ حدیث روح پیام جاں جسے ہم نے سن کے نبھلا دیا  
وہ حریم غیب کا ارمغان جسے پا کے ہم نے گنوا دیا  
وہ ملک و ملت جاں بلب جسے اس نے آب بقا دیا  
اسی نا سپاس نے ہائے اب اسے جام مرگ پلا دیا  
ہمیں جس نے فتح دلائی تھی، اسے خاک و خون میں ملا دیا  
ہمیں جس نے راہ دکھائی تھی اسے راستے سے ہٹا دیا  
اسے اتباع مسیح نے وہ عجیب دستِ شفا دیا  
جو گرے تھے اُن کو اٹھا دیا جو مرے تھے ان کو علیٰ دیا  
جو اٹھا تھا شعلہ شور و شر اسے اپنے خوں سے بجھا دیا  
جو پڑا تھا پردہ نگاہوں میں اسے آپ اٹھ کے اٹھا دیا  
وہ خمیرہ قد <sup>تم</sup> ماہ نو وہ نظر فریب شکنک سی ضو  
وہ نگاہ برق عمل کی رو کہ دلوں کو جس نے بلا دیا  
وہ فروغ بخش ہر انجمن کہ زمانہ بھر میں تھا ضو قلن  
وہ چرخ بزم گم وطن کسی تیرہ دل نے بجھا دیا

وہ کتاب صلح کا سر ورق کہ مٹائی کشمکش فرق  
 وہ قاتل خنجر صبر و حق کہ وطن پہ خود کو منا دیا  
 وہ بڑھ اور کرشن کا جانشین ہمہ تن عمل ہمہ تن یقیں  
 وہ تبسم سحر آفریں کہ چمن لبوں سے کھلا دیا  
 وہ برنگ آمینہ صاف دل وہ فروغ فطرت آب و گل  
 کہ جہاد نفس نے مستقل اسے اور حسن جلا دیا  
 وہ جلال شیوہ سادگی وہ جمل صورت زندگی  
 وہ زلال چشمہ آگہی کہ زمانہ بھر کو چکا دیا  
 وہ شرارہ برق حیات کا وہ ستارا راہ نجات کا  
 وہ منارہ عزم و ثبات کا جسے فتنہ ساز نے ڈھا دیا  
 اثر اس کا اب ہے وسیع تر کہ ہر ایک دل میں ہے اس کا گھر  
 یہ سمجھ کے خوش نہ ہوں فتنہ گر کہ اسے پیام فنا دیا  
 تری شان کون گھٹا سکے، اسے خود خدا نے بڑھا دیا  
 کہ تجھے بتائے دوام دی، تجھے منصب شہدا دیا  
 تری خامشی وہ زبان تھی کہ دلوں کو جوش نوا دیا  
 تن فاتحہ کش میں وہ جان تھی کہ حصار کبر بلا دیا  
 وطن عزیز کو شان دی اسے قید غم سے چھڑا دیا  
 وہ اتحاد میں جان دی جو کہا وہ کر کے دکھا دیا  
 جنہیں زیر کر نہ سکا ستم، ہوئے صید سلسلہ کرم  
 تری نیکیوں نے تری قسم سر خود سری کو جھکا دیا  
 یہ عروں کشور بند تھی، ہمہ نیکی ہی ہمہ بد دی  
 اسے تو نے غاۃ خرمی، ترے خوں نے رنگ حنا دیا  
 تجھے مندروں نے صدائیں دیں کہ ترے کرم سے اماں ملی



تجھے مسجدوں نے دعائیں دیں کہ تباہیوں سے بچا دیا  
 یہ کمل پیری علی، یہ فراخ حوصلگی تری  
 کہ خود اپنے دشمن جاں کو بھی وہی ارمغان دعا دیا  
 تجھے نیکی نے سپاہ دی، تجھے مشکلات نے راہ دی  
 تجھے بھلیوں نے پناہ دی، تجھے تکلیفوں نے مزا دیا  
 یہی دھرم ہے یہی اصل دین کہ ہو قول سچ تو عمل حسین  
 حق و اہل حق پہ رہے یقین، یہ پیغام سب کو سنا دیا  
 ہمہ روشنی تری ذات تھی، ہمہ سوز تیری حیات تھی  
 تری روح شمع تھی گل ہوئی، ترے تن کو پھول بنا دیا  
 ترا فیض دہر میں عام ہو، یہ غبار اٹھ کے غمام ہو  
 تری خاک تیرا پیغام ہو، یہ سمجھ کے اس کو بہا دیا

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص ۳۷۰-۳۷۱)

مصنف:- علی جواد زیدی



इकबाल अहमद सुहैल  
1884-1995

### मंजर-ए-रुख्सत

ऐ अहल-ए-वफा मातम न करो वह वादह शिकन गर जाता है  
जाता है मुसाफिर गम न करो, मेहमान ही था घर जाता है

वह दौर-ए-मसरत आनें दो, काँमी परचम लहराने दो  
जाती है गुलामी जाने दो, सदियों का दलिदर जाता है

जिसने यह चमन बरबाद किया, मशिक को गुलामी आबाद किया  
वह कहर-ए-मुजस्सम जाता है, वह सहर-ए-मुसव्विर जाता है

कुछ सर्वे नहीं शमशाद नहीं, अजनबी है गुलिस्ताजाद नहीं  
क्या उसके मजालिम याद नहीं, जाने दो सितमगर जाता है

दीवाने समझते थे जो हमें, अब वह भी समझते जाते हैं  
ऐवान-ए-हुकूमत का रस्ता जिन्दों से भी होकर जाता है

हर तार बिखरता जाता है, सय्याद के दाम-ए-रंगी का  
कुछ दंर नहीं सय्याद भी खुद अब बाघ के बिस्तर जाता है

लाले काँ दबाया सुम्बुल से कुमारी को लड़ाया बुलबुल से  
जाता तो है अब सय्याद मगर गुलशन को लुटा कर जाता है

बरपा किया हर सू रक्स-ए-शरर, खिर्मन को बनाया खाकरस्तर  
अब बर्क-ए-तबा है गर्म-ए-सफर, अब शोला-ए-मुज़तर जाता है

अज साहिल-ए-जावा ता ब हलब, हर सम्त बपा हे बज़म-ए-तरब  
ईरान-ओ-फिलस्तीन-ओ-मिस्त्र-ओ-अरब खुश है कि सितमगर जाता है

रग रग में छुपा हो जो नशतर निकलेंगा ब आसानी क्याँ कर  
देखो तो अभी ता वक्त-ए-सफर क्या और करम कर जाता है

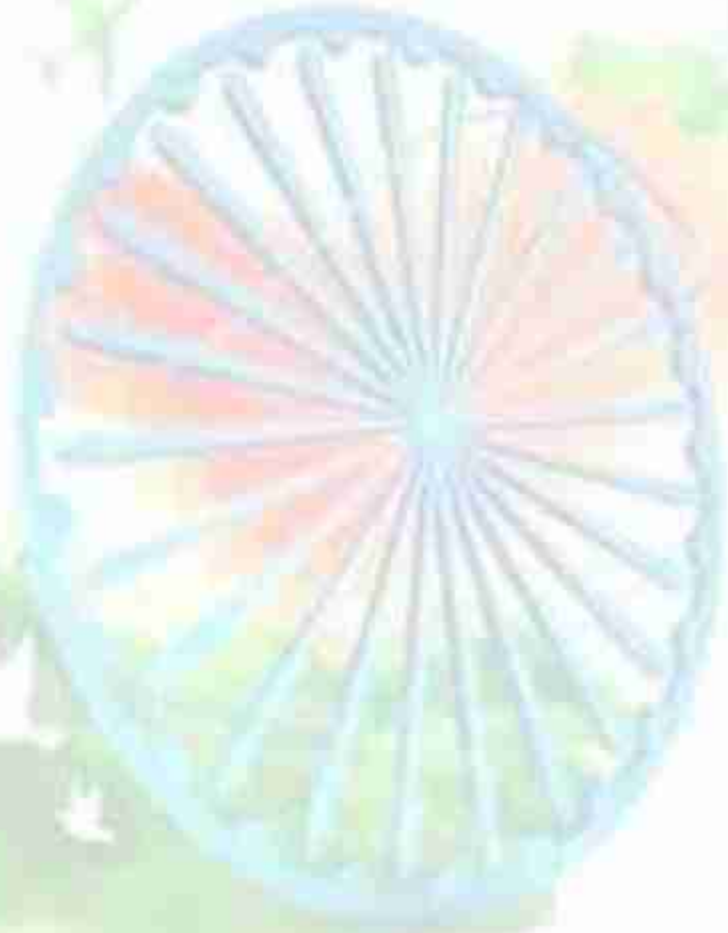
अब दौर-ए-मए गुल रग चलें या बादा कशो में जंग चलें  
साकी तो इस मैखाने से बेशीशा-ओ-सागर जाता है

दोहराओ न गुजरे किस्सो को, भडकाओ न बुझते शोला को  
इखलास वह मरहम है जिससे हर जखम-ए-कुहन भर जाता है

मिल जुल के बदाओ शान-ए-वतन, तामीर करो ऐवान-ए-वतन  
मा जाए है फर्जन्दान-ए-वतन जो गैर था बाहर जाता है

हम तुमको बसर करना है यहीं जीना है यहीं मरना है यहीं  
उठो यह चमन शादाब करो, अब गासिब-ए-खुदसर जाता है

अंजाम से गाफिल नादानो, मानो कि न मानो तुम जानो  
इक दरस-ए-हकीकत देके तुम्हे इकबाल सुखनवर जाता है



स्रोत:

पुस्तक: हिन्दुस्तानी हमारा खण्ड-2 (पृष्ठ 323)

रचनाकार: जाँ निसार अख्तर



اقبال احمد سمیل

۱۸۸۳ - ۱۹۹۵

### منظر رخصت

اے اہل وفا ماتم نہ کرو وہ وعدہ شکن گر جاتا ہے  
جاتا ہے مسافر غم نہ کرو، مہمان ہی تھا گھر جاتا ہے

وہ دور مسرت آنے دو، قومی پرچم لہرانے دو  
جاتی ہے غلامی جانے دو، صدیوں کا دلدر جاتا ہے

جس نے چمن برباد کیا، مشرق کو غلامی سے آباد کیا  
وہ قہر مجسم جاتا ہے، وہ سحر مصور جاتا ہے

کچھ سرو نہیں شمشاد نہیں، اجنبی ہے گلستا زاد نہیں  
کیا اُس کے مظالم یاد نہیں، جانے دو ستم گر جاتا ہے

دیوانے سمجھتے تھے جو ہمیں، اب وہ بھی سمجھتے جاتے ہیں  
ایوں حکومت کا رستہ زنداں سے بھی ہو کر جاتا ہے

ہر تار بکھرتا جاتا ہے، صیاد کے دام رنگیں کا  
کچھ دیر نہیں صیاد بھی اب باگھ کے بستر جاتا ہے

لالے کو دبایا سنبل سے کماری کو لڑایا بلبل سے  
جاتا تو ہے اب صیاد مگر گلشن کو لٹا کر جاتا ہے

برپا کیا ہر رقص شرر، خرمن کو بنایا خاکستر  
اب بق طبع ہے گرم سفر، اب شعلہ مضطر جاتا ہے

از ساحل جا داتا بہ حلب، ہر سمت پچا ہے بزم طرب  
ایران و فلسطین و مصر و عرب خوش ہے کہ ستم گر جاتا ہے

رگ رگ میں چھپا ہو جو نشتر نکلے گا بہ آسانی کیوں کر  
دیکھے تو ابھی تا وقت سفر کیا اور کرم کر جاتا ہے

اب دور مئے گل رنگ چلے یا بادہ کشوں میں جنگ چلے  
ساقی تو اس میخانے سے بے شیشہ و ساغر جاتا ہے

دہراؤ نہ گزرے قصوں کو بھڑکاؤ نہ بجھتے شعلوں کو  
اخلاص وہ مرہم ہے جس سے ہر زخم کہن بھر جاتا ہے

مل جل کے بڑھاؤ شن و وطن، تعمیر کرو ایون و وطن  
ما جائے ہیں فرزندن و وطن جو غیر تھا باہر جاتا ہے

ہم تم کو بسر کرنا ہے یہیں جینا ہے یہیں مرنا ہے یہیں  
انھو یہ چمن شاداب کرو، اب غاصب خود سر جاتا ہے

انجام سے فافل نادانو، مانو کہ نہ مانو تم جانو  
اک درس حقیقت دے کے تمہیں اقبال سخنور جاتا ہے

ماخذ:-

کتاب:- ہندوستان ہمارا حصہ دوم (ص ۳۲۳)

مصنف:- جاں نثار اختر



बर्क देहलवी  
1884-1936

## हिन्द के जाँ-बाज़ सिपाही

सर-ब-कफ़ हिन्द के जाँ-बाज़-ए-वतन लड़ते हैं  
तेग-ए-नौ ले सफ़-ए-दुश्मन में घुसे पड़ते हैं  
एक खाते हैं तो दो मुँह पे वहीं जड़ते हैं  
हथ्र कर देते हैं बरपा ये जहाँ अड़ते हैं

जोश में आते हैं दरिया की रवानी की तरह  
खून दुश्मन का बहा देते हैं पानी की तरह  
जब बढ़ाते हैं कदम पीछे फिर हटाते ही नहीं  
हौसले उन के जो बढ़ाते हैं तो घटाते ही नहीं  
दम-ए-पैकार हरीफों से ये कटते ही नहीं  
उल्टे कदमों पे बिला फतह पलटते ही नहीं

हेच हैं उन के लिए आहनी दीवारें भी  
रोक सकती नहीं फौलाद की दीवारें भी



जज़्बा-ए-हुब्ब-ए-वतन दिल में निहाँ रखते हैं  
मिस्ल-ए-खूँ जोश ये रग रग में रवाँ रखते हैं  
सर हथेली पे तो कब्ज़े में सिनाँ रखते हैं  
आँखा झपकाने की भी ताब कहाँ रखते हैं

निकली ही पड़ती हैं खुद म्यान से तेगें उन की  
ढूँढती अपना मुकाबिल हैं निगाहें उन की

खींच के दुश्मन से गले तेग-ए-रवाँ मिलती हैं  
दम दफ़ना करने को गारत-गर-ए-जाँ मिलती हैं  
खून का बहता है दरिया ये जहाँ मिलती हैं  
माँत की गोद में दुश्मन को अमाँ मिलती हैं

तेग के घाट उतरता है मुकाबिल उन का  
रन में पानी भी नहीं माँगता बिस्मिल उन का  
वार भूल से भी पड़ता नहीं ओछा उन का  
हाथ होता है जबाँ ही तरह सच्चा उन का  
जिस ने देखा कभी मुँह देखा न पीछा उन का  
माँत भी मानती है रज़म में लोहा उन का

रन में बिफरे हुए शेरों की तरह लड़ते हैं  
साफ़ कर देते हैं जिस सफ़ पे ये जा पड़ते हैं

मुँह पे तलवार की चढ़ते हैं सिपर की सूरत  
तेग के फल को ये खाते हैं समर की सूरत  
हौसले और बढ़ाती हैं खतर की सूरत  
माँत में भी नजर आती हैं जफर की सूरत

छलनी हो जाता है जख्मों से अगर तन उन का  
तेग के साया में बन जाता है मदफन उन का  
रज्म को बज्म समझते हैं ये मरदान-ए-वतन  
शाहिद-ए-मर्ग है उन के लिए चौथी की दुल्हन  
ये वो सर-बाज हैं रखते हैं बहम तेग ओ कफन  
हाथ दिखलाते हैं जब पडता है घमसान का रन  
उन की शमशीर-ए-दो-पैकर पे जफर सदके हैं  
उन का बर्तानिया के नाम पे सर सदके हैं

स्रोत:

पुस्तक: हमारी कौमी शायरी (पृष्ठ 546)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



برق دہلوی

۱۸۸۲ - ۱۹۳۶

### ہند کے جاں باز سپاہی

سر بکف ہند کے جاں باز وطن لڑتے ہیں  
تغیّبوں لے صف دشمن میں گھے پڑتے ہیں  
ایک کھاتے ہیں تو دو منہ پہ وہیں جڑتے ہیں  
حشر کر دیتے ہیں برپا یہ جہاں اڑتے ہیں  
جوش میں آتے ہیں دریا کی روانی کی طرح  
خون دشمن کا بہا دیتے ہیں پانی کی طرح  
جب بڑھاتے ہیں قدم پیچھے پھر ہٹتے ہی نہیں  
حوصلے ان کے جو بڑھتے ہیں تو گھٹتے ہی نہیں  
دم پیکل حصّوں سے یہ کٹتے ہی نہیں  
انکے قدموں پہ بلا فتح پلٹتے ہی نہیں  
پتھ ہیں ان کے لیے آہنی دیواریں بھی  
روک سکتی نہیں فولاد کی دیواریں بھی  
جذیبہ حب وطن دل میں نہاں رکھتے ہیں  
مثل خون جوش یہ رگ رگ میں رواں رکھتے ہیں

سر ہتھیلی پہ تو قبضے میں سناں رکھتے ہیں  
آنکھ جھپکانے کی بھی تاب کہاں رکھتے ہیں  
نگلی ہی پڑتی ہیں خود میان سے تنگیں ان کی  
دُھونڈھتی اپنا مقابل ہیں نگاہیں ان کی

کھنچ کے دشمن سے گلے تیغ رواں ملتی ہے  
دم دفن کرنے کو غارت گر جاں ملتی ہے  
خون کا بہتا ہے دریا یہ جہاں ملتی ہے  
موت کی گود میں دشمن کو لہاں ملتی ہے  
تیغ کے گھاٹ اترتا ہے مقابل ان کا  
رن میں پانی بھی نہیں مانگتا بس ان کا

دار بھولے سے بھی پڑتا نہیں اوجھا ان کا  
ہاتھ ہوتا ہے زباں کی طرح سچا ان کا  
جس نے دیکھا کبھی منہ دیکھا نہ چھپا ان کا  
موت بھی مانتی ہے رزم میں لوہا ان کا

رن میں سحر سے ہوئے شیروں کی طرح لڑتے ہیں  
صاف کر دیتے ہیں جس صف پہ یہ جا پڑتے ہیں

منہ پہ تلوار کی چڑختے ہیں سپر کی صورت  
تیغ کے پھل کو یہ کھاتے ہیں شر کی صورت

حوصلے اور بڑھاتی ہے خطر کی صورت  
موت میں بھی نظر آتی ہے ظفر کی صورت

چھلنی ہو جاتا ہے زخموں سے اگر تن ان کا  
تیغ کے سایہ میں بن جاتا ہے مدفن ان کا  
رزم کو بزم سمجھتے ہیں یہ مردان وطن  
شاہ مرگ ہے ان کے لیے چوتھی کی دلہن  
یہ وہ سر بار ہیں رکھتے ہیں بہم تیغ و کفن  
ہاتھ دکھلاتے ہیں جب پڑتا ہے گھسان کا دن  
ان کی شمشیر دو پیکر پہ ظفر صدقے ہے  
ان کا برطانیہ کے نام پہ سر صدقے ہے

ماخذ:-

کتاب:- ہماری قومی شاعری (ص-۵۳۶)

مصنف:- علی جواد زیدی



जोश मलसियानी

1884-1976

### शहीद-ए-वतन

देखाए इन जीने वालों का निशान-ए-जिंदगी  
देखाए इन मरने वालों का जहान-ए-जिंदगी  
देखाए इन पस्तियाँ में आसमान-ए-जिंदगी  
देखाए इन खाक के ज़रों की शान-ए-जिंदगी

बैठिए दम-भर शहीदान-ए-वतन की खाक पर

देखाए रूह-ए-वफा क्या क्या उभरती है यहाँ  
देखाए हुब-ए-वतन दिल में उतरती है यहाँ  
देखाए दिल की फजा कौसी निखरती है यहाँ  
देखाए रहमत खुदा की ताँफ करती है यहाँ

बैठिए दम-भर शहीदान-ए-वतन की खाक पर

इस जगह बे-रगियाँ भी आलम-ए-तस्वीर हैं  
इस जगह तारीकियाँ भी शमा की तनवीर हैं  
इस जगह खामोशियाँ भी इक लब-ए-तकरीर हैं  
इस जगह रूपोशियाँ भी दिल की दामन-गीर हैं

बैठिए दम-भर शहीदान-ए-वतन की खाक पर

उठ गए दुनिया से लेकिन एक दुनिया हो गए  
बुलबुले पानी के थोड़े तों दरिया हो गए  
ये वो थोड़े जर्रात जो उड़ कर सुर्य्या हो गए  
ये वो थोड़े बीमार जो मर कर मसीहा हो गए

बैठे दम-भर शहीदान-ए-वतन की खाक पर

दिल के उजड़े बाग को आबाद होते देखिए  
रुह की अपसुर्दगी को शाद होते देखिए  
बंदगी को कैद से आजाद होते देखिए  
पर-शिकस्ता सैद को सय्याद होते देखिए

बैठिए दम-भर शहीदान-ए-वतन की खाक पर

आइए उस खाक से कस्ब-ए-फजिलत कीजिए  
आइए क़ुर्बानि उस पर दिल की दौलत कीजिए  
हाँ जरा रुक जाइए इतनी न उजलत कीजिए  
इस जियारत-गाह-ए-आलम की जियारत कीजिए

बैठिए दम-भर शहीदान-ए-वतन की खाक पर

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 366)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



جوش ملیسانی

۱۸۸۳ - ۱۹۷۶

### شہید وطن

دیکھئے ان چینی والوں کا نشان زندگی دیکھئے  
دیکھئے ان مرنے والوں کا جہن زندگی  
دیکھئے ان پستیوں میں آسمان زندگی  
دیکھئے ان خاک کے ذروں کی شان زندگی

بیٹھے دم بھر شہیدان وطن کی خاک پر

دیکھئے روح وفا کیا کیا ابھرتی ہے یہاں  
دیکھئے خب وطن دل میں اترتی ہے یہاں  
دیکھئے دل کی فضا کیسی نکھرتی ہے یہاں  
دیکھئے رحمت خدا کی طوف کرتی ہے یہاں

بیٹھے دم بھر شہیدان وطن کی خاک پر

اس جگہ بے رنگیاں بھی عالم تصویر ہیں  
اس جگہ تاریکیاں بھی شمع کی تصویر ہیں  
اس جگہ خاموشیاں بھی اک لب تقریر ہیں  
اس جگہ روپوشیاں بھی دل کی دامن گیر ہیں

بیٹھے دم بھر شہیدان وطن کی خاک پر



انھے گئے دنیا سے لیکن ایک دنیا ہو گئے  
بلبلے پانی کے تھے ٹوٹے تو دریا ہو گئے  
یہ وہ تھے ذرات جو اڑ کر ثریا ہو گئے  
یہ وہ تھے پیار جو مر کر مسیحا ہو گئے

ہینے دم بھر شہیدان وطن کی خاک پر

دل کے اجڑے باغ کو آباد ہوتے دیکھئے  
روح کی افسردگی کو شاد ہوتے دیکھئے  
بندگی کو قید سے آزاد ہوتے دیکھئے  
پر شکستہ صید کو صیاد ہوتے دیکھئے

ہینے دم بھر شہیدان وطن کی خاک پر

آئیے اس خاک سے کسب فضیلت کیجئے  
آئیے قربان اس پر دل کی دولت کیجئے  
ہاں ذرا رک جائیے اتنی نہ غلٹ کیجئے  
اس زیارت گاہ عالم کی زیارت کیجئے

ہینے دم بھر شہیدان وطن کی خاک پر

ماخذ :-

کتاب :- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص ۳۶۶)

مصنف :- علی جواد زیدی



जाफर अली खाँ असर  
1885-1967

## अहिंसा की पहली सुनहरी किरन

खरामाँ खरामाँ चली आ रही है  
निगाहों पे इक हुस्न से छा रही है  
हर इक गाम पर नूर बिखरा रही है  
उफुक पर वह परचम को लहरा रही है

अहिंसा की पहली सुनहरी किरन

मिली कीमियागर को आखिर वो बूटी  
कि जिस से अलाएक की जंजीर टूटी  
शब-ए-तार में जैसे महताब छूटी  
तजल्ली के पर्दे से फूटी वह फूटी

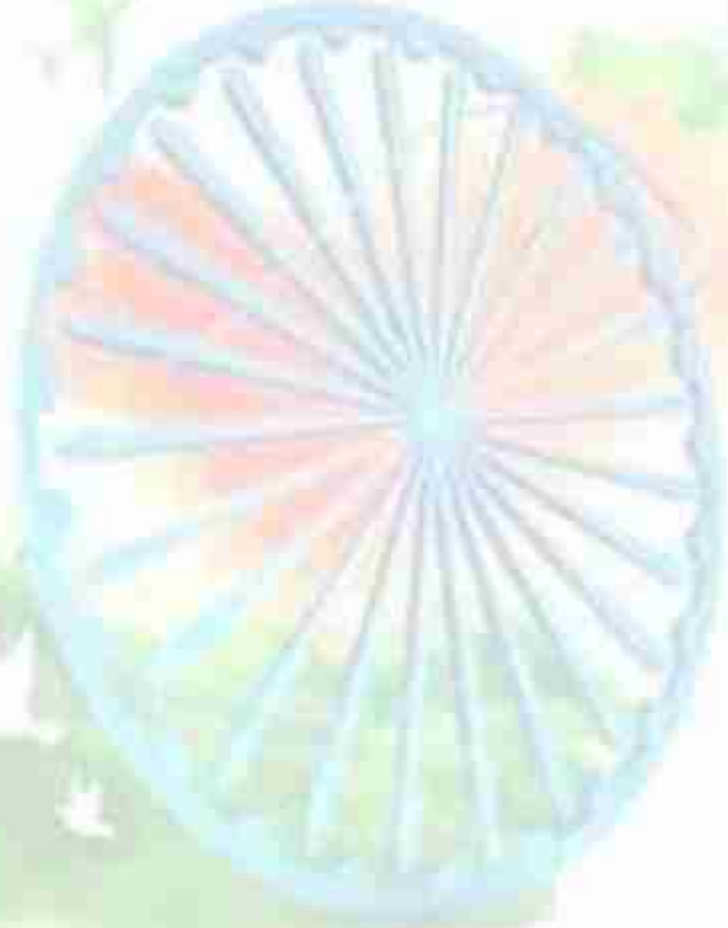
अहिंसा की पहली सुनहरी किरन

नया रूप हस्ती ने पैदा किया है  
हर इक दिल में इक वलवला भर रहा है  
मुसीबत का एहसास हिम्मत फजा है  
कि अर्बाब-ए-बीनिश की अब रहनुमा है

अहिंसा की पहली सुनहरी किरन

जमीन-ओ-जमाँ हमनवा हो रहे हैं  
कि दिल वाले तुख्म-ए-वफ़ा बो रहे हैं  
वही पा रहे हैं जो कुछ खो रहे हैं  
जगायंगी उनको भी जो सो रहे हैं

अहिंसा की पहली सुनहरी किरन



स्रोत:  
पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 389)  
रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



جعفر علی خاں اثر

۱۸۸۵ - ۱۹۶۷

## اہسا کی پہلی سنہری کرن

خراماں چلی آرہا ہے خراماں  
نگاہوں پہ اک حسن سے چھا رہی ہے  
ہر ایک گام پر نور بکھرا رہی ہے  
افق پر وہ پرچم کو لہرا رہی ہے

اہسا کی پہلی سنہری کرن

ملی کیسا گر کو آخر وہ بوٹی  
کہ جس سے ملائق کی زنجیر ٹوٹی  
شب تار میں جیسے مہتاب چھوٹی  
جلی کے پردے سے چھوٹی وہ پھوٹی

اہسا کی پہلی سنہری کرن

نیا روپ ہستی نے پیدا کیا ہے  
ہر ایک دل میں اک دلولہ بھر رہا ہے  
مصیبت کا احساس پستہ فزا ہے  
کہ ارباب نینش کی اب رہنما ہے

اہسا کی پہلی سنہری کرن

ز میں و زماں ہمنوا ہو رہے ہیں  
کہ دل والے حتم وفا پورے ہیں  
وہی پارے ہیں جو کچھ کھو رہے ہیں  
جگائے گی ان کو بھی جو سو رہے  
ابسا کی پہلی سنہری کرن

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص ۳۸۹)

مصنف:- علی جواد زیدی



तिलोकचन्द महरूम

1887-1966

देख ऐ हिलाल-ए-शाम  
(भगत सिंह की फाँसी पर)

दौर-ए-फलक ने हमको बनाया है गो गुलाम  
आजादियाँ हैं वह, न तजम्मुल, न एहतिशाम  
उजड़ी हुई अगर्चे हैं बज्म-ए-वतन मगर  
छलका नहीं अभी मय हुब्ब-ए-वतन का जाम

देखा ऐ हिलाल-ए-शाम

जिन्दों में हाँ रहा है फाँसी का एहतिशाम  
पैदा सकूत-ए-मर्ग के आसार हैं तमाम  
दरवाजे काल कोठरियों के वह खुल गये  
निकले हैं उनसे आज जवानान-ए-खुशखिराम

देखा ऐ हिलाल-ए-शाम

खाँले हुए हैं अपना दहन देवे इन्तिकाम  
जल्लाद की निगाह है शमशीर-ए-बेनियाम  
वह बढ़के मरने वालों ने नारा किया बलन्द  
जिससे लरज उठे दर-ओ-दीवार-ओ-सकफ़-ओ-बाम

देखा ऐ हिलाल-ए-शाम

यूँ आ रहे हैं जैसे हो नौशाह-ए-शादकाम  
अह्ल-ए-वतन को करतं हुए आखरी सलाम  
फाँसी की रस्सियाँ को दिया बोसा शाँक से  
चेहरे हैं रंग-ए-जाँक-ए-शहादत से लालाफाम

देखा ऐ हिलाल-ए-शाम

अब आगे क्या बताऊ मैं नाजुक है यह मकाम  
ऐ सुनने वाले अशक बहा और जिगर को थाम  
फन्दे गले में डाल के तखते निकाल के  
जल्लाद कर चुका है, जो करना था उसको काम

देखा ऐ हिलाल-ए-शाम

नज़-ए-फना हुई वह मचलती जवानियाँ  
सीनों का एक लहजे में किस्सा हुआ तमाम  
मातम का शोर हिन्द में हर सू बपा हुआ  
तारों ने आखों आखों में दी इत्तिलाए-आम

गुम है हिलाल-ए-शाम

कटता है अजब अजब शहीदान-ए-जेर-ए-दाम  
होता है आह उनके ठिकाने का एहतिमाम  
रहना गवाह वियास की मौजाँ कि किस तरह  
लाशाँ के नीम साँखता टुकड़े हुए तमाम

तू भी हिलाल-ए-शाम

(1931)

स्रोत:

पुस्तक: हिन्दुस्तान हमारा खण्ड-2 (पृष्ठ 473)

रचनाकार: जाँ निसार अख्तर



تلوک چند محروم

۱۸۸۷-۱۹۲۶

دیکھ اے ہلال شام

(بھگت سنگھ کی پھانسی پر)

دورِ فلک نے ہم کو بنایا ہے گو غلام  
آزادیاں ہے وہ، نہ تجل نہ احتشام  
اُجڑی ہوئی اگرچہ ہے بزمِ وطن مگر  
چھلکا نہیں ابھی مئے حبِ وطن کا جام

دیکھ اے ہلال شام

زنداں میں ہو رہا ہے پھانسی کا احتام  
پیدا سکوت مرگ کے آثار ہیں تمام  
دروازے کال کوٹھریوں کے وہ کھل گئے  
نکلے ہیں ان سے آج جو املن خوش خرام

دیکھ اے ہلال شام

کھولے ہوئے ہے اپنا دہن دیوے انتقام  
جلاد کی نگاہ ہے شمشیر بے نیام  
وہ بڑھ کے مرنے والوں نے نعرہ کیا بلند  
جس سے لرز اٹھے در و دیوار و سکف و پام

دیکھ اے ہلال شام



یوں آ رہے ہیں جیسے ہوں نوشاہ شاد کام  
اہل وطن کو کرتے ہوئے آخری سلام  
پھانسی کی رسیوں کو دیا بوسہ شوق سے  
چہرے ہیں ریگ ذوق شہادت سے لالہ فام

دیکھ اے ہلال شام

اب آگے کیا بتاؤں میں نازک ہے یہ مقام  
اے سننے والے اشک بہا اور جگر کو تھام  
پھندے گلے مین ڈال کے تختے نکال کے  
جلاد کر چکا ہے، جو کرنا تھا اُس کو کام

دیکھ اے ہلال شام

نظر فنا ہوئی وہ مچلتی جوانیاں  
سینوں کا ایک لہجے میں قصہ ہوا تمام  
ماقم کا شور بند میں ہر سو بپا ہوا  
تاروں نے آنکھوں آنکھوں میں دئے اطلاع عام

گم ہے ہلال شام

کنتا ہے عجب شہیدان زیر دام  
ہوتا ہے آہ ان کے ٹھکانے کا اہتمام  
رہنا گواہ ویاس کی موجوں کہ کس طرح  
لاشوں کے نیم سوختہ نکلے ہوئے تمام

تو بھی ہلال شام

ماخذ:-

کتاب:- ہندوستان ہمارا حصہ دوم (ص- ۷۳-۷۴)

مصنف:- جاں نثار اختر



तिलोकचन्द महारुम

1887-1966

## शहीद भगत सिंह

जिन्दाँ में शहीदों का सरदार आया  
शौदा-ए-वतन पैकर-ए-ईसार आया  
हैं दार-ओ-रसन की सरफराजी का दिन  
सरदार भगत-सिंह सरदार आया  
ता-दार-ओ-रसन शौक से इठला के गया  
तो-शान-ए-शहादत अपनी दिखला के गया  
टुकड़े होता है दिल तेरे मातम में  
लाशों का अंग अंग कटवा के गया  
पी कर मय-ए-शौक झूमता वो तेरा  
बे-परवायाना धूमता वो तेरा

स्रोत:

पुस्तक: हिन्दुस्तॉ हमारा खण्ड-2 (पृष्ठ 472)

रचनाकार: जाँ निसार अख्तर



تلوک چند محروم

۱۸۸۷-۱۹۶۶

### شہید بھگت سنگھ

زندوں میں شہیدوں کا وہ سردار آیا  
شہدائے وطن پیکر ایثار آیا  
ہے دار و دامن کی سرفرازی کا دن  
سردار بھگت سنگھ سردار آیا  
دار و دامن شوق سے اٹھلا کے گیا  
تو شان شہادت اپنی دکھلا کے گیا  
نکڑے ہوتا ہے دل ترے ماتم میں  
لاشے کا انگ انگ گھونٹا کے گیا  
پنی کر مئے شوق جھومنا وہ تیرا  
بے پردایانہ گھومنا وہ تیرا  
ہے نقش ترے اہل وطن کے دل پر  
پھانسی کی رسن کو چومنا وہ تیرا  
جام خب وطن کے اے متوالے  
اے پیکر ناموس حیثیت والے  
ہو عالم ارواح میں شاداں کہ نہیں  
اب تیرے وطن میں وہ حکومت والے

ماخذ:-

کتاب:- ہندوستان ہمارا حصہ دوم (ص-۳۷۷)

مصنف:- جاں نثار اختر



तिलोकचन्द महारूम

1887-1966

### खाक-ए-हिन्द

अंजुम से बढ के तेरा हर जरा जाँ-फिशाँ है  
जल्वों से तेरे अब तक हुस्न-ए-अजल अयाँ है  
अंदाज-ए-दिल-फरेबी जो तुझ में है कहाँ है  
फख-ए-जमाना तू है और नाजिश-ए-जहाँ है

उपतादगी में भी तो हम-आँज-ए-आसमाँ है

" खाक-ए-हिंद तेरी अज्मत में क्या गुमाँ है "

वाँ कज-कुलाह तेरें वाँ सूरवीर तेरें  
वाँ तंग-जन कमाँ-कश वाँ किलअ-गीर तेरे  
नापैद आज हैं गाँ ताज-आँ-सरीर तेरें  
शाहों से हैं जयादा लेकिन फकीर तेरें

परस्ती में सर-बुलंदी सब पर तेरी अयाँ है

" खाक-ए-हिंद तेरी अज्मत में क्या गुमाँ है "

मंजर वाँ जाँ-फजा हैं और दिल-पजीर तेरें  
जानें हैं तुझ पे शौदा और दिल असीर तेरें  
शीरीं ओ साफ दरिया हैं जू-ए-शीर तेरें  
हैं दशत-ओ-कोह-आँ-सहरा जन्त-नजीर तेरें

आँखों जिधर उठाओ फिरदाँस का समाँ है

" खाक-ए-हिंद तेरी अज्मत में क्या गुमाँ है "

तुझ को मिटा दिया है हर चंद आसमाँ ने  
फूँका है आह ! दिल को सोज-ए-गम निहाँ ने  
छोड़ी न ताब अपनी पर हुस्न दिल सितों ने  
जाँहर भरे हैं तुझ में सत्रा-ए-दो जहाँ ने

फस्ल-ए-खिजाँ है तेरी फिर भी तू गुल-फिशाँ है

" खाक-ए-हिन्द तेरी अजमत में क्या गुमाँ है "

गो हद से बढ़ गया है रंज-ओ-मलाल तेरा  
अब तक मिटा नहीं है नकश-ए-जमाल तेरा  
आखिर कभी तो हाँगा जाहिर कमाल तेरा  
होगा कभी तो आखिर दौर-ए-जवाल तेरा

कब इक रविश पे कायम ये दौर-ए-आसमाँ है

" खाक-ए-हिंद तेरी अजमत में क्या गुमाँ है "

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 147)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



تلوک چند محروم

۱۸۸۷-۱۹۶۶

## خاک ہند

انجم سے بڑھ کے تیرا ہر ذرہ خسو فشاں ہے  
جلووں سے تیرے اب تک حسن ازل عیاں ہے  
انداز دل فریبی جو تجھ میں ہے، کہاں ہے  
فخر زمانہ تو ہے اور نازش جہاں ہے  
آفتادگی میں بھی تو ہم اوج آسماں ہے  
"اے خاک ہند تیری عظمت میں کیا گماں ہے"

وہ کج کاہ تیرے وہ سو در تیرے  
وہ تیغ زن کماں کش، وہ قلعہ گیر تیرے  
ناپید آج ہیں گو تاج و سریر تیرے  
شاہوں سے ہیں زیادہ لیکن فقیر تیرے  
پستی میں سر بلندی سب پر تری عیاں ہے  
"اے خاک ہند تیری عظمت میں کیا گماں ہے"

منظر وہ جاں فزا ہیں اور دل پذیر تیرے  
جانیں ہیں تجھ پہ شیدا اور دل امیر تیرے  
شیریں و صاف دریا ہیں جوئے شیر تیرے  
ہیں دشت و کوہ و صحرا جنت نظیر تیرے  
آنکھیں جدھر اٹھاؤ فروں کا سماں ہے  
"اے خاک ہند تیری عظمت میں کیا گماں ہے"

تجھ کو ملا دیا ہے ہر چند آسماں نے  
 پھونکا ہے آہ ! دل کو سوزِ غم نہاں نے  
 چھوڑی نہ تاپ اپنی پر حسنِ دل ستاں نے  
 جوہر بھرے ہیں تجھ میں صنایعِ دو جہاں نے  
 فصلِ خزاں ہے تیری پھر بھی تو گلِ نشاں ہے  
 "اے خاکِ بند تیری عظمت میں کیا گماں ہے"  
 گو حد سے بڑھ گیا ہے رنج و ملال تیرا  
 اب تک ملا نہیں ہے نقشِ جمال تیرا  
 آخر کبھی تو ہوگا ظاہرِ کمال تیرا  
 ہوگا کبھی تو آخرِ دورِ زوال تیرا  
 کب اک روش پہ قائم یہ دورِ آسماں ہے  
 "اے خاکِ بند تیری عظمت میں کیا گماں ہے"

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص-۱۳۷)

مصنف:- علی جوادی زیدی



लाल चन्द फ़लक  
1887-1967

## भारत के सपूतों से ख़िताब

भारत के ऐ सपूतों हिम्मत दिखाए जाओ  
दुनिया के दिल पे अपना सिक्का बिठाए जाओ  
मुर्दा-दिली का झंडा फेंको ज़मीन पर तुम  
ज़िंदा-दिली का हर-सू परचम उड़ाए जाओ  
लाओ न भूल कर भी दिल में ख़याल-ए-पस्ती  
खुश-हाली-ए-वतन का बेड़ा उटाए जाओ  
तन-मन मिटाए जाओ तुम नाम-ए-कौमियत पर  
राह-ए-वतन में अपनी जानें लड़ाए जाओ  
कम-हिम्मती का दिल से नाम-ओ-निशों मिटा दो  
जुरअत का लौह-ए-दिल पर नक्शा जमाए जाओ  
ऐ हिंदूओ मुसलमाँ आपस में इन दिनों तुम  
नफ़रत घटाए जाओ उल्फ़त बढ़ाए जाओ  
बिक्रम की राज-नीती 'अकबर' की पॉलीसी की  
सारे जहाँ के दिल पर अज़मत बिठाए जाओ



जिस कश्मकश ने तुम को है इस कदर मिटाया

तुम से हो जिस कदर तुम उस को मिटाए जाओ

जिन खाना-जगियों ने ये दिन तुम्हें दिखाए

अब उन की याद अपने दिल में भुलाए जाओ

बे-खाँफ़ गाए जाओ "हिन्दोस्ताँ हमारा"

और "वन्दे-मातरम" के नारे लगाए जाओ

जिन देश सेवकों से हासिल है फँज तुम को

इन देश सेवकों की जय जय मनाए जाओ

जिस मुल्क का हो खाते दिन रात आब-ओ-दाना

उस मुल्क पर सरों की भँटे चढ़ाए जाओ

फाँसी का जेल का डर दिल से फ़लक मिटा कर

गैरों के मुँह पे सच्ची बातें सुनाते जाओ

स्रोत:

पुस्तक: हमारी कौमी शायरी (पृष्ठ 470)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



لال چند فلک

۱۸۸۷-۱۹۶۷

## بھارت کے سپوتوں سے خطاب

بھارت کے اے سپوتو بہت دکھائے جاؤ  
دنیا کے دل پہ اپنا سکہ بٹھائے جاؤ  
مردہ دل کا جھنڈا پھینکو زمین پر تم  
زندہ دل کا ہر سو پرچم اڑائے جاؤ  
لاؤ نہ بھول کر بھی دل میں خیال پستی  
خوش خلق وطن کا بیڑا اٹھائے جاؤ  
تن من منائے جاؤ تم نام قومیت پر  
راہ وطن میں اپنی جانیں اڑائے جاؤ  
کم بہتی کا دل سے نام و نشان مٹا دو  
جرات کا لوح دل پر نقشہ جمائے جاؤ  
اے ہندو مسلمان آپس میں ان دنوں تم  
نفرت گھٹائے جاؤ الفت بڑھائے جاؤ

بکرم کی راج نیٹی اکبر کی پالیسی کی

سارے جہاں کے دل پر عظمت بٹھائے جاؤ

جس سنگش نے تم کو ہے اس قدر مٹایا

تم سے ہو جس قدر تم اس کو منائے جاؤ

جن خانہ جنگیوں نے یہ دن تمہیں دکھائے

اب ان کی یاد اپنے دل میں بھلائے جاؤ

بے خوف گائے جاؤ "ہندوستان ہمارا"

اور "وندے ماترم" کے نعرے لگائے جاؤ

جن دیش سیوکوں سے حاصل ہے فیض تم کو

ان دیش سیوکوں کی بے بے منائے جاؤ

جس ملک کا ہو کھاتے دن رات آب و دانہ

اس ملک پر سروں کی بھٹیٹیں چڑھائے جاؤ

پھانسی کا جیل کا ڈر دل سے فلک مٹا کر

غیروں کے منہ پہ سچی باتیں سناتے جاؤ

ماخذ:-

کتاب:- ہماری قومی شاعری (ص-۳۷۰)

مصنف:- علی جواد زیدی



जगत मोहन लाल रवौं  
1889-1934

## हिन्द मजलूम

हालतें कहती हैं यह कौम के अरमानों की  
किस्मतें जाग उठीं सोखता सामानों की  
पुतलियाँ बदली नजर आती हैं दीवानों की  
तोड़ डालेंगे यह दीवारों को जिन्दानों की  
चंद मजलूम जन-ओ-मर्द कुछ उजड़े हुए घर  
सुखियाँ हैं यह मेरी कौम के अफसानों की  
लुट गया मुल्क गिरपतार हुई कौम मगर  
ताकतें यूँ भी कहीं मिटती हैं ईमानों की  
हिन्दुओं की अभी माला है बदस्तूर वही  
अभी तस्बीह भी बाकी है मुसलमानों की  
छीटें कुछ खून की दीवारों पे कुछ कासा-ए-सर  
यादगारें अभी महफूज हैं दीवानों की  
हिन्द मजलूम है फर्याद कुनाँ ऐ मालिक  
जल्द ले जल्द खबर अपने परेशानों की  
यह अजब जंग है इस दौर-ए-जमानों में रवौं  
उस तरफ तोप इधर ढाल है ईमानों की

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 239)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



جگت موہن لال رواں

۱۸۸۹-۱۹۳۴

### ہندو مظلوم

حائس کہتی ہیں یہ قوم کے ارمانوں کی  
تستیں جاگ اٹھیں سوختے سامانوں کی  
پتلیاں بدلی نظر آتی ہیں دیوانوں کی  
توڑ ڈالیں گے یہ دیواروں کو زندانوں کی  
چند مظلوم زن و مرد کچھ اُجڑے ہوئے گھر  
سرخیاں ہیں یہ میری قوم کے افسانوں کی  
نٹ گیا ملک گرفتار ہوئی قوم مگر  
حائس یوں بھی کہتا مٹی ہیں ایمانوں کی  
ہندوؤں کی ابھی مالا ہے بدستور وہی  
ابھی تسبیح بھی باقی ہے مسلمانوں کی  
چھینٹیں کچھ خون کی دیواروں پہ کچھ کاسے سر  
یاد گاریں ابھی محفوظ ہیں دیوانوں کی  
ہند مظلوم ہے فریاد کناں اسے مالک  
جلد لے خبر اپنے پریشانوں کی  
یہ عجب جنگ ہے اس دورِ زمانہ میں رواں  
اس طرف توپ ادھر ڈھال ہے ایمانوں کی

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سوسال (ص-۲۳۹)

مصنف:- علی جوادی زیدی



हाशमी 'फरीदाबादी'

1890-1964

### कारफर्माई

बहुत समझा किया मैं सब-ओ-खामोशी को दानाई  
बहुत कहता रहा कुछ न कर सकने को शकीबाई

बहुत दिन जिल्लतों को मस्लहत जाना किया लेकिन  
बस अब ऐ हमनशीं मेरी तबीयत जोश पर आई

मेरी हर साँस से इक इकिलाब-ए-हुरियत उठा  
मेरे इक एक रोए ने हमीयत की कसम खाई

ब यक हैजान-ए-खूँ पारा हुआ मल्बूस-ए-नामदी  
मुझे खुद एतमादी ने पहनाया ताज-ए-दाराई

बस अब मैं अपने मुल्क-ए-नफस का सुल्तान-ए-मुतलक हूँ  
बस अब आज से आगाज मेरी कारफर्माई

स्रोत:

पुस्तक: हिन्दुस्तान हमारा खण्ड-2 (पृष्ठ 122)

रचनाकार: जाँ निसार अख्तर



ہاشمی فرید آبادی

۱۸۹۰-۱۹۶۴

### کارفرمائی

بہت سمجھا کیا میں صبر و خاموشی کو دانائی  
بہت کہتا رہا کچھ نہ کر کئے کو شکلیائی

بہت دن ذلتوں کو مصلحت جانا کیا لیکن  
بس اب اے ہم نشیں میری طبیعت جوش پر آئی

میری ہر سانس سے اک انقلاب حریت اٹھا  
میرے اک ایک رویوں نے حمیت کی قسم کھائی

بہ ایک ہیجان خوں پارہ ہوا ملبوس نامردی  
مجھے خود اعتمادی نے پہنایا تاج دارائی

بس میں اپنے ملک نفس کا سلطان مطلق ہوں  
بس اب آج سے آغاز میری کارفرمائی

ماخذ:-

کتاب:- ہندوستان ہمارا حصہ دوم (ص- ۱۲۲)

مصنف:- جاس ٹارا انتر



जिगर मुरादाबादी

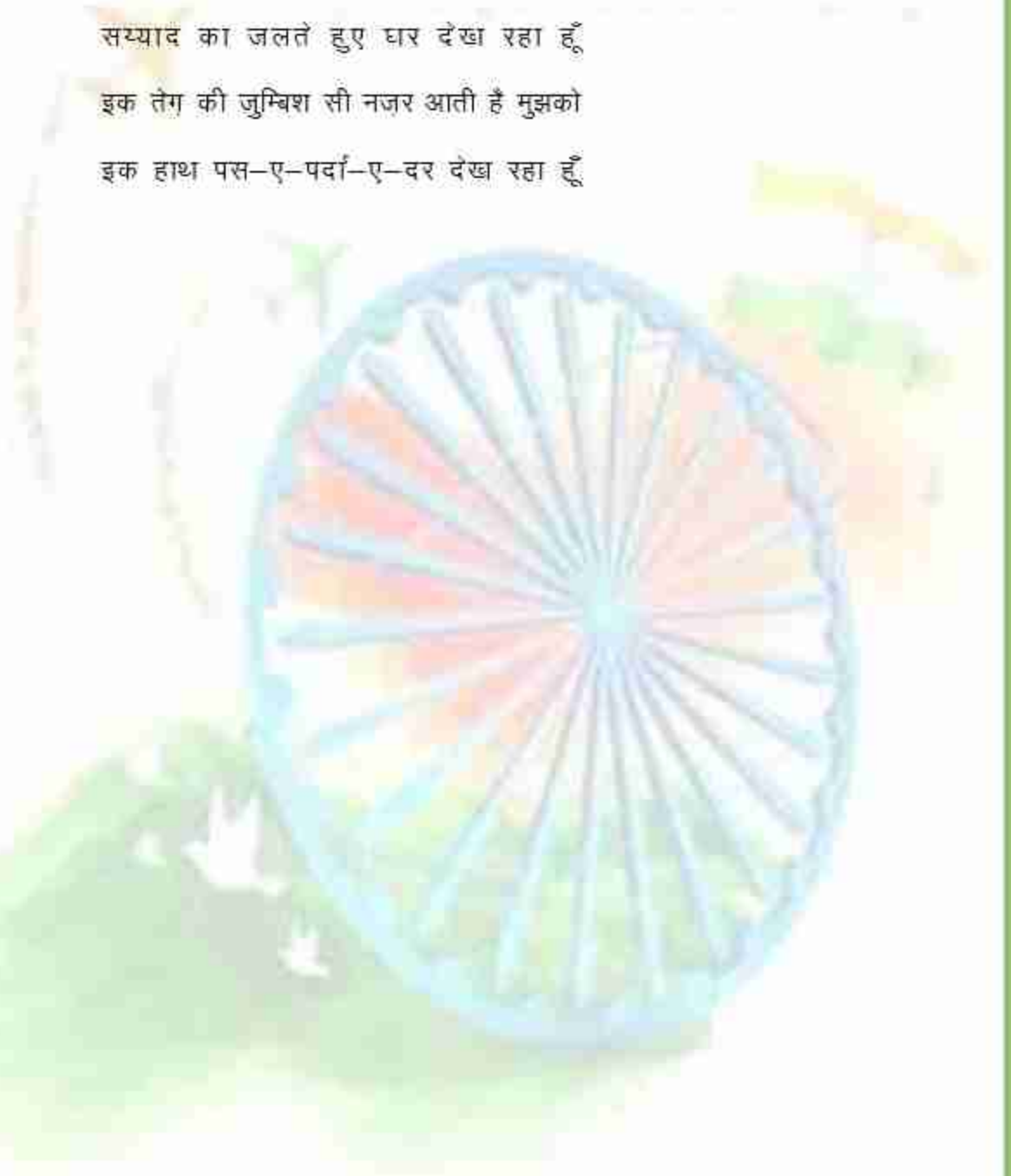
1890-1960

### कहत-ए-बंगाल

बंगाल की शाम-ओ-सहर देख रहा हूँ  
हर चन्द कि हूँ दूर मगर देखा रहा हूँ  
इफलास की मारी हुई मखलूक सर-ए-राह  
बेगोर-ओ-कफ़न खाक-ब-सर देख रहा हूँ  
बच्चों का तड़पना वह बिलकना वह सिसकना  
माँ-बाप की मायूस नजर देखा रहा हूँ  
इसान के होते हुए इसाँ का यह हश  
देखा नहीं जाता है मगर देखा रहा हूँ  
रहमत का चमकने को है फिर नय्यर-ए-ताबाँ  
होने को है इस शब की सहर देख रहा हूँ  
खामोश निगाहों में उमड़ते हुए जज़्बात  
जज़्बात में तूफ़ान-ए-शरर देख रहा हूँ  
बेदारी-ए-एहसास है हर सप्त नुमायाँ  
बेताबी-ए-अरबाब-ए-नजर देख रहा हूँ  
अंजाम-ए-सितम अब कोई देखे कि न देखे



मैं साफ इन आँखों से मगर देख रहा हूँ  
सय्याद ने लूटा था अनादिल का नशेमन  
सय्याद का जलते हुए घर देख रहा हूँ  
इक तेग की जुम्बिश सी नज़र आती है मुझको  
इक हाथ पस-ए-पर्दा-ए-दर देख रहा हूँ



स्रोत:

पुस्तक: हिन्दुस्तॉ हमार खण्ड-2 (पृष्ठ 302)

रचनाकार: जाँ निसार अख्तर



جگر مراد آبادی

۱۸۹۰-۱۹۶۰

### قحطِ بنگال

بنگال کی میں شام و سحر دیکھ رہا ہوں  
ہر چند کہ ہوں دور مگر دیکھ رہا ہوں  
افلاس کی ماری ہوئی مخلوق سر راہ  
بے گور و کفن خاک بہہر دیکھ رہا ہوں  
بچوں کا تڑپنا وہ بلکنا وہ سسکنا  
ماں باپ کی مایوس نظر دیکھ رہا ہوں  
انسان کے ہوتے ہوئے انسان کا یہ حشر  
دیکھا نہیں جاتا ہے مگر دیکھ رہا ہوں  
رحمت کا چھینے کو ہے پھر سزا تاہاں  
ہونے کو ہے اس شب کی سحر دیکھ رہا ہوں  
خاموش نگاہوں میں اٹلتے ہوئے جذبات  
جذبات میں طوفان شرر دیکھ رہا ہوں  
بیداری احساس ہے ہر سمت نمایاں  
بینائی ارباب نظر دیکھ رہا ہوں  
انجام ستم اب کوئی دیکھے کہ نہ دیکھے

میں صاف ان آنکھوں سے مگر دیکھ رہا ہوں  
صیاد نے لونا تھا عناول کا نشین  
صیاد کا جلتے ہوئے گھر دیکھ رہا ہوں  
اک تیغ کی جنبش سی نظر آتی ہے مجھ کو  
اک ہاتھ جس پر وہ در دیکھ رہا ہوں

ماخذ:-

کتاب:- بندوستان ہمارا حصہ دوم (ص-۳۰۲)

مصنف:- جاں نثار اختر



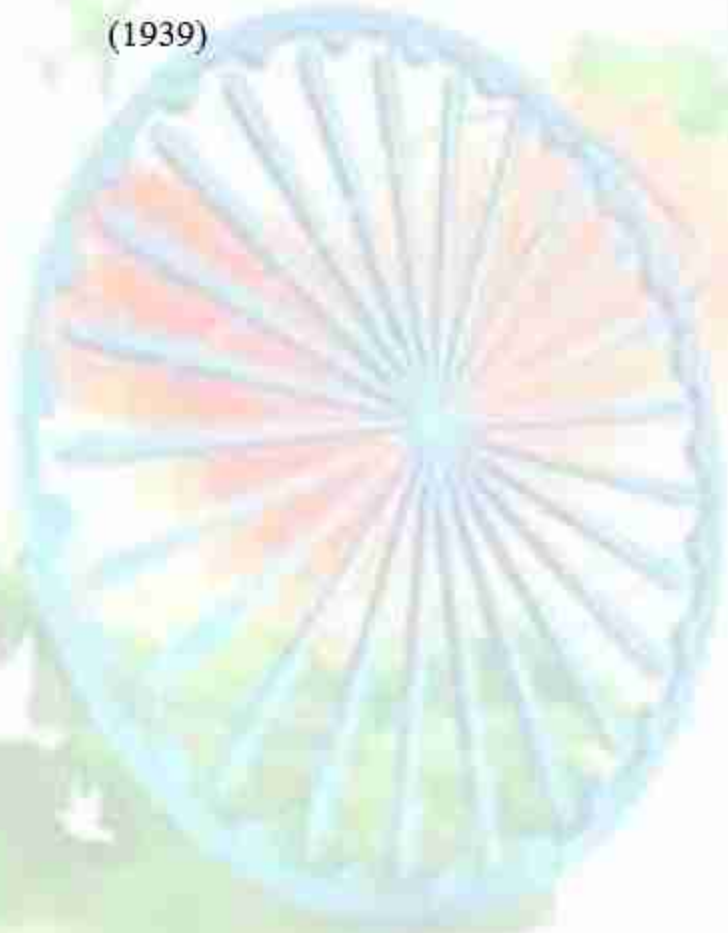
अहमक फफूंदवी  
1895-1957

## फरिस्ता-ए-जंग का पैगाम (हिंदुस्तान के नाम)

मुजदह ऐ हिन्दुस्तौं के बे कस-ओ-बे पर गुलाम  
आ, इधर सुन जंग के खूनी फरिस्ता का प्रयाम  
यह लड़ाई पेशखेमा है इक अमन-ए-आम का  
रुख बदल डालेगी यकसर गर्दिश-ए-अय्याम का  
खत्म कर देगा जमाना वहशत-ओ-दरिंदगी  
ढल के निकलेगी नए साँचे के अंदर जिन्दगी  
जब्र-ओ-इस्तिब्दाद का बाजार हो जाएगा सर्द  
किब्र-ओ-नखूवत के रुख-ए-खूनी पे छा जाएगी गर्द  
करके तह रख देगी दाम कैद-ओ-फितरत पॉलीसी  
भूल जाएगी सब अपने हतकडे डिपलॉमेंसी  
तोड़ देगा सिसकियाँ लेले के दम सरमायादार  
कब्र की तारीकियों में छिप रहेगा सूदखवार  
नज़-ए-आतिश कर दिया जाएगा किस-ए-हिर्स-ओ-आज़  
तामा-ए-कुजिशक होंगे इस्तिख्वान-ए-भाहबाज़  
किस-ओ-ऐवौं होंगे फाका करने वालों के लिए  
लॉज-ओ-पैलिस वक्फ सब होंगे कुदालों के लिए

किस्सा हो जाएगा अरबाब-ए-रियासत का तमाम  
कब्जा-ए-दहकों में होगा मुल्क का जब्त-ओ-निज़ाम  
कर दिये जाएंगे हाथ अरबाब-ए-दौलत के कलम  
हाथ में मजदूर के होगा हुकूमत का अलम  
सब कर, हाँ हिंद में भी इकिलाब आने को है  
गँब से तेरी दुआ-ए-मुस्तजाब आने को है

(1939)



स्रोत:  
पुस्तक: नक्श-ए-हिक्मत (पृष्ठ 220)  
रचनाकार: अहमक फफूदवी



احتمق پھپھونندوی

۱۹۵۷-۱۸۹۵

## فرہمہر جنگ کا پیغام

(ہندوستان کے نام)

مژدہ ای ہندوستان کے بے کس و بے پر غلام  
آدھر، سن جنگ کے خونیں فرشتے کا پیام  
یہ لڑائی پیش خیمہ ہر اک امن عام کا  
رخ بدل ڈالے گی کسیر گردش ایام کا  
ختم کر دے گا زما نا وحشت و درندگی  
ذحل کے نکلے گی نئے سانچے کے اندر زندگی  
جر و استبداد کا بازار ہو جائے گا سرد  
کبر و نفوت کے رخ خونین یہ تھا جائے گی گرد  
گر کے تہہ رکھ دے گی دام کید و نفرت پالسی  
بھول جائے گی سب اپنے بھگندے ڈیلوہیسی

توڑ دے گا سسکیاں لے لے کے دم سرمایادار  
قبر کی تاریکیوں میں چھپ رہے گا سو دشور

نذر آتش کر دیا جائے گا قصر حرص و آز  
طلوع گنہگار ہوں گے استخوان شاہباز  
قصر و ایوان ہوں گے فا قا کرنے والوں کے لئے  
لاج و تیلس وقف سب ہوں گے کدالوں کے لئے

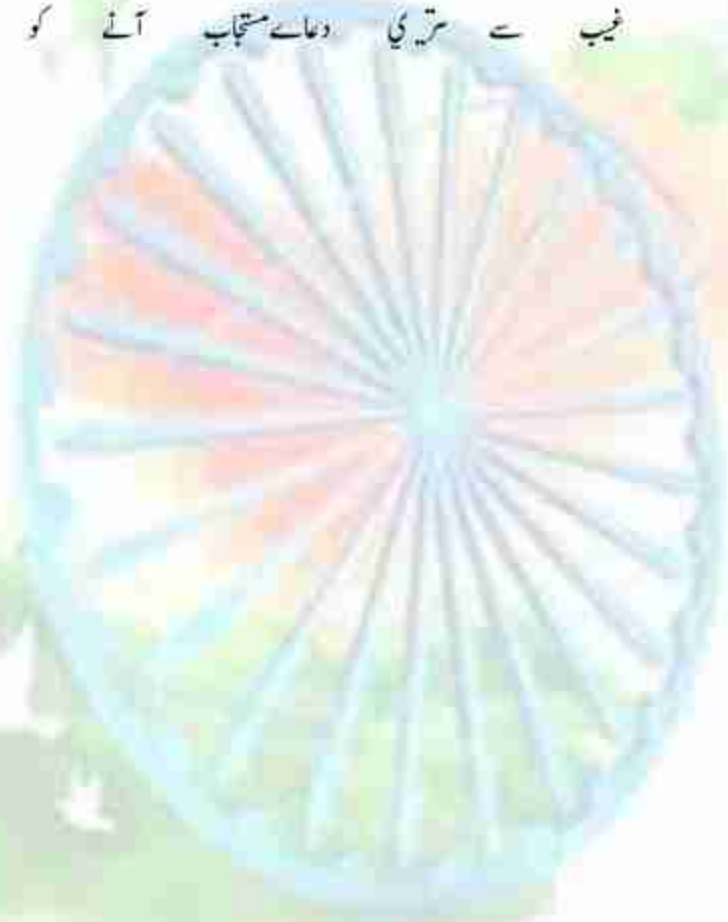
قصہ ہو جائے گا ارباب ریاست کا تمام  
پہچانے دہقان میں ہوگا ملک کا ضبط و نظام

کردئے جائیں گے ہاتھ ارباب دولت کے قلم

ہاتھ میں مزدور کے ہو گا حکومت کا علم

صبر کر، ہاں ہند میں بھی انقلاب آنے کو ہی

غیب سے سرتی دعائے مستجاب آنے کو ہی



ماخذ:-

کتاب:- نقش حکمت (ص- ۲۲۰)

مصنف:- احمق پھپھوندوی



अहमक फफूंदवी  
1895-1957

### इकिलाब

ये कह रही है इशारों में गर्दिश-ए-गदू  
कि जल्द हम कोई सखत इकलाब देखेंगे  
निजाम-ए-चख में देखेंगे इक तगय्युर-ए-खास  
सुकून-ए-दहर में इक इज्तिराब देखेंगे  
खुदा ने चाहा तो अब जल्द ही वतन वाले  
वतन में अपना मिशन कामयाब देखेंगे  
दुआएँ की हैं जो अहल-ए-वतन ने रो रो कर  
यकी है जल्द उन्हें मुस्तजाब देखेंगे  
जमाना आने ही वाला है जब हम ऐ जालिम  
तुझे भी खवार तुझे भी खाराब देखेंगे



बहुत ही जल्द तेरे सर पे भी खुदा की कसम  
खुदा का कहर खुदा का इताब देखेंगे  
तुझे भी देखेंगे मजबूर-ए-फाका-ओ-अपलास  
तुझे भी कँद-ए-गम-ओ-इज़ितराब देखेंगे  
तुझे भी अपनी तरह जल्द ही ब-फज़ल-ए-खुदा  
असीर-ए-सिलसिला-ए-पंच-ओ-ताब देखेंगे  
तुझे भी अपनी तरह पा-ए-बद-ए-नाला-ओ-आह  
मजाल-ए-तबाह-ओ-खाराब देखेंगे यूँ ही  
रवाँ-दवाँ तुझे हिन्दोस्ताँ से सोए अदम  
ब-कल्ब-ए-ज़ार ओ ब-चश्म-ए-पुर-आब देखेंगे  
देखना है जो कुछ हम को उस में देर नहीं  
बहुत ही जल्द बहुत ही शिताब देखेंगे

स्रोत:

पुस्तक: नक्श-ए-हिक्मत (पृष्ठ 64)

रचनाकार: अहमक फफूदवी



احمد پھولپھول

۱۸۹۵-۱۹۵۷

## انقلاب

یہ کہہ رہی ہے اشاروں میں گردش گردوں  
کہ جلد ہم کوئی سخت انقلاب دیکھیں گے  
نظام چرخ میں دیکھیں گے اک تعمیر خاص  
سکون دہر میں اک اضطراب دیکھیں گے  
خدا نے پچا تو اب جلد ہی وطن والے  
وطن میں اپنا مشن کامیاب دیکھیں گے  
دعاؤں کی ہیں جو اہل وطن نے رو رو کر  
تھیں ہے جلد انہیں مستجاب دیکھیں گے  
زمانہ آنے ہی والا ہے جب ہم اے عالم  
تھے بھی خوار تھے بھی خراب دیکھیں گے

بہت ہی جلد ترے سر پہ بھی خدا کی قسم  
خدا کا تہر خدا کا عتاب دیکھیں گے  
تہجے بھی دیکھیں گے مجبور فاتحہ و افلاس  
تہجے بھی قید غم و اضطراب دیکھیں گے  
تہجے بھی اپنی طرح جلد ہی بفضل خدا  
ایر سلسلہ سچے و سبب دیکھیں گے  
تہجے بھی اپنی طرح پائے بند نالہ و آہ  
یوں ہی مجال تباہ و خراب دیکھیں گے  
رواں دواں تجھے بندوستان سے سوائے عدم  
پہ قلب زار و یہ چشم پر آب دیکھیں گے  
یہ دیکھتا ہے جو کچھ ہم کو اس میں دیر نہیں  
بہت ہی جلد بہت ہی شباب دیکھیں گے

ماخذ:-

کتاب:- نقش حکمت (ص- ۲۲۰)

مصنف:- احمق پھپھوندوی



अहमक फफूंदवी

1895-1957

### कड़े मर्हले

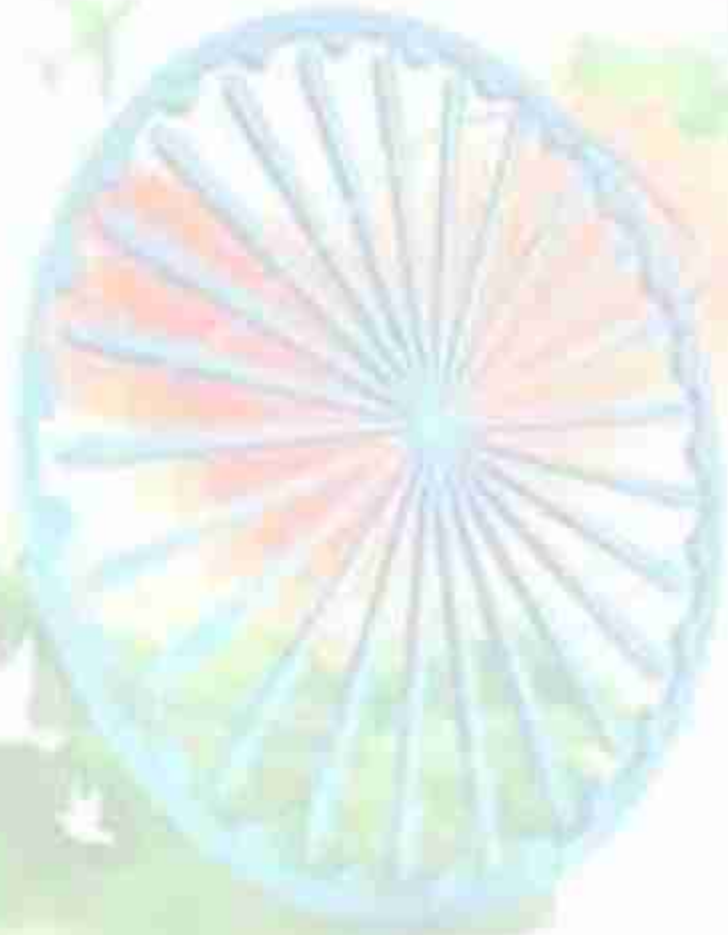
नहीं सहल आजादी-ए-हिन्द यारो  
अभी तुम को मैदाँ में आना पड़ेगा  
अभी इम्तिहाँ तुम को देने पड़ेंगे  
अभी तुम को जेलों में जाना पड़ेगा  
अभी चक्कियाँ पीसनी होंगी तुम को  
अभी पम्प-ओ-गिरा चलाना पड़ेगा  
अभी जिस्म होंगे लहू पत्थारों से  
अभी जख्म सीने पे खाना पड़ेगा  
पड़ेगा अभी काम तेग-ओ-तबर से  
अभी खाक-ओ-खूँ में नहाना पड़ेगा  
चलेंगी अभी हर तरफ गन मशीनें  
अभी तोप की ज़द पे आना पड़ेगा  
हवाई जहाज आके यूरिश करेंगे  
अभी सर पे बम का निशाना पड़ेगा  
यह सब इम्तिहाँ खत्म हो जायेंगे जब  
यह सर तुम को कटाना पड़ेगा

खिचोगे अभी तख्त-ए-दार पर तुम

अभी तुम को फाँसी पे जाना पड़ेगा

बहुत सँ कड़े मर्हलें राह में हैं

यह तय करके मजिल तक आना पड़ेगा



स्त्रोत:

पुस्तक: जोश-ओ-अमल (पृष्ठ 18)

रचनाकार: मुहम्मद मुस्तफा खॉँ मदह



احمد پھیسوندوی

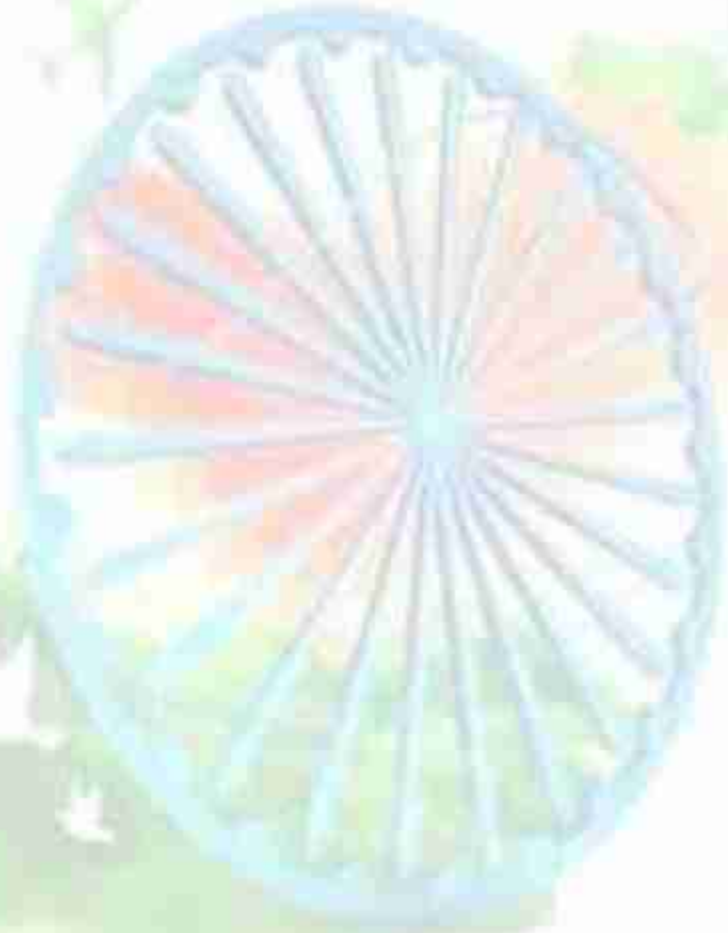
۱۸۹۵-۱۹۵۷

## کڑے مرحلے

نہیں سہل آزادی بند اے یارو  
ابھی تم کو میداں میں آنا پڑے گا  
ابھی امتحاں تم کو دینے پڑیں گے  
ابھی تم کو جیلوں میں جانا پڑے گا  
ابھی چٹکیاں بیٹنی ہوں گی تم کو  
ابھی پپ و گرا چلانا پڑے گا  
ابھی جسم ہوں گے لہو پتھروں سے  
ابھی زخم سینے پہ کھانا پڑے گا  
پڑے گا ابھی کام تحف و تبر سے  
ابھی خاک و خوں میں نہانا پڑے گا  
چلیں گی ابھی ہر طرف گن مشینیں  
ابھی توپ کی زد پہ آنا پڑے گا  
ہوائی جہاز آکے یورش کریں گے  
ابھی سر پہ بم کا نشانہ پڑے گا  
یہ سب امتحاں ختم ہو جائیں گے جب  
یہ سر تم کو کھانا پڑے گا

کھنچو گے ابھی تخت دار پر تم  
ابھی تم کو پھانسی پہ جانا پڑے گا

بہت سے کڑے مرطے راہ میں ہیں  
یہ طے کر کے منزل تک آنا پڑے گا



ماخذ:-

کتاب جوش و عمل:- (ص ۸-۱)

مصنف:- محمد مصطفیٰ خاں مداح



वकार अंबालवी  
1896-1988

## मैदाने जंग में सुब्ह

उलट रहा है देर से तिलिस्म काली रात का  
बदल रहा है रंग फिर तमाम कायनात का

परी उड़ी वह नींद की खुमार-ए-ख्वाब उतर गया  
वह चंहरा-ए-हयात से सियः नकाब उतर गया

खमोशियाँ बदल रही हैं फिर जहाँ के शोर से  
सुकून शिकस्त खा रहा है जिंदगी के शोर से

गरीब-ए-दशत जाग उठा रईस-ए-शहर जाग उठा  
सिपाहियों के कल्ब में खुदा का कहर जाग उठा

हर एक सरफरोश उठ सिलाह-ए-जंग चूम कर  
वुफूर-ए-अज्म-ओ-शौक में चला है झूम झूम कर

सलाह-ए-जंग बांधकर हुई है लैस फौज फिर  
कि जुए नंग-ओ-नाम में उठी जफर की मौज फिर



चमक रही हैं बिजलियाँ निगाह-ए-शोला बार में  
बपा है एक जलजला फजा-ए-कार साज में

वतन के सरफरोश हैं-वतन के जाँ निसार हैं  
नहीं है अपना पास कुछ -वतन के पासदार हैं

यह मर्द अपनी मौत से लखेंगे सीना तान कर  
कजा को छेड़ते रहेंगे अपनी जान जान कर

है रंग-ए-नाज मर्दमी हर इक रूखे नियाज पर  
छिड़ा वह नग्मा-ए-विगा बहादुरी के साज पर

स्रोत:

पुस्तक: आजादी की नज़्में (पृष्ठ 102)

रचनाकार: सिब्ते हसन



وقار انبالوی

۱۸۹۶-۱۹۸۸

### میدان جنگ میں صبح

اُٹ رہا ہے دیر سے ظلم کالی رات کا  
بدل رہا ہے رنگ پھر تمام کائنات کا

پری اڑی وہ نیند کی شمار خواب اتر گیا  
وہ چہرہ حیات سے سیاہ نقاب اتر گیا

شموشیاں بدل رہی ہیں پھر جہاں کے شور سے  
سکون ٹھکت کھا رہا ہے زندگی کے شور سے

غریب دشت جاگ اٹھا رہیں شہر جاگ اٹھا  
سپاہیوں کے قلب میں خدا کا قہر جاگ اٹھا

ہر ایک سرفروش اٹھ سلاح جنگ چوم کر  
دفور عزم و شوق میں چلا ہے جھوم جھوم کر

سلاح جنگ باندھ کر ہوئی ہے لیس فوج پھر  
کہ جوئے ننگ و نام میں اٹھی ظفر کی موج پھر

چمک رہی ہیں بچلیاں نگاہ شعلہ بار میں  
بچا ہے ایک زلزلہ فضاے کارساز میں

وطن کے سرفروش ہیں وطن کے جاں نثار ہیں  
نہیں ہے اپنا پاس کچھ وطن کے پاسدار ہیں

یہ مرد اپنی موت سے لڑیں گے سینہ تان کر  
قضا کو چھیڑتے رہیں گے اپنی جان جان کر

ہے رنگ تاز مردی ہر اک رخ نیاز پر  
چھرا وہ نغمہ وفا بہادری کے ساز پر

ماخذ:-

کتاب:- آزادی کی نظمیں (ص- ۱۰۲)

مصنف:- سبط حسن



फिराक गोरखपुरी

1896-1982

## आजादी

मेरी सदा है गुल-ए-शमा-ए-शाम-ए-आजादी  
सुना रहा हूँ दिलों का पयाम आजादी  
लहू वतन के शहीदों का रंग लाया है  
उछल रहा है जमाने में नाम-ए-आजादी  
मुझ बका की जरूरत नहीं कि फानी हूँ  
मेरी फना से है पैदा दवाम-ए-आजादी  
जो राज करते हैं जम्हूरियत के पर्दे में  
उन्हें भी है सर-ओ-सौदा-ए-खाम-ए-आजादी  
बनाएँगे नई दुनिया किसान और मजदूर  
यही सजाएँगे दीवान-ए-आम-ए-आजादी  
फजा में जलते दिलों से धुआँ सा उठता है  
अरे ये सुब्ह-ए-गुलामी ये शाम-ए-आजादी  
ये महर-ओ-माह ये तारे ये बाम हफ्त-अफलाक  
बहुत बुलंद है इन से मकाम-ए-आजादी  
फजा-ए-शाम-ओ-सहर में शफक झलकती है

कि जाम में है मय-ए-लाला-फाम-ए-आजादी  
स्याह-खाना-ए-दुनिया की जुलमतें हैं दो-रंग  
निहाँ है सुब्ह-ए-असीरी में शाम-ए-आजादी  
सुकूँ का नाम न ले है वो कौद-ए-बे-मीआद  
है पय-ब-पय हरकत में कयाम-ए-आजादी  
ये कारवान हैं पसमाँदगान-ए-मंजिल के  
कि रहरवों में यही हैं इमाम-ए-आजादी  
दिलों में अहल-ए-जमीं के है नीव उस की मगर  
कुसूर-ए-खुल्द से ऊँचा है बाम-ए-आजादी  
वहाँ भी खाक-नशीनों ने झंडे गाड़ दिए  
मिला न अहल-ए-दुवल को मकाम-ए-आजादी  
हमारे जोर से जंजीर-ए-तीरगी टूटी  
हमारा सोज है माह-ए-तमाम-ए-आजादी  
तरत्रुम-ए-सहरी दे रहा है जो छुप कर  
हरीफ-ए-सुब्ह-ए-वतन है ये शाम-ए-आजादी  
हमारे सीने में शोले भड़क रहे हैं फिराक  
हमारी साँस से रौशन है नाम-ए-आजादी

स्त्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 338)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



فراق گورکھپوری

۱۸۹۶-۱۹۸۲

## آزادی

مری صدا ہے گل شمع شام آزادی  
سنا رہا ہوں دلوں کو پیام آزادی  
اہو وطن کے شہیدوں کا رنگ لایا ہے  
انجیل رہا ہے زمانے میں نام آزادی  
مجھے بتا کی ضرورت نہیں کہ فانی ہوں  
مری فنا سے ہے سلیمان دوام آزادی  
جو راج کرتے ہیں جمہوریت کے پردے میں  
انہیں بھی ہے سر و سودائے خام آزادی  
بنائیں گے نئی دنیا کسان اور مزدور  
یہی سبائیں گے دیوان عام آزادی  
فضا میں چلتے دلوں سے دھواں سا اٹتا ہے  
ارے یہ صبح غلامی ایہ شام آزادی  
یہ مہر و ماہ یہ تارے یہ بام ہفت افلاک  
بہت بلند ہے ان سے مقام آزادی

فضائے شام و سحر میں شفق جھلکتی ہے  
 کہ جام میں ہے مئے لالہ غام آزادی  
 سیاہ خانہ دنیا کی غلامتیں ہیں دو رنگ  
 نہاں ہے صبح اسیری میں شام آزادی  
 سکوں کا نام نہ لے، ہے وہ قید بے میعاد  
 ہے پے پے حرکت میں قیام آزادی  
 یہ کاروان ہیں پسماندگان منزل کے  
 کہ رہروں میں ہیں یہی امام آزادی  
 دلوں میں اہل زمیں کے ہے یہ اس کی مگر  
 قصور خلد سے اونچا ہے بام آزادی  
 وہاں بھی خاک نشینوں نے جہنمے گاڑ دئے  
 ملا نہ اہل دول کو مقام آزادی  
 ہمارے زور سے زنجیر تیرگی ٹوٹی  
 ہمارا سوز ہے ماہ تمام آزادی  
 ترنم سحری دے رہا ہے جو چھپ کر  
 حریف صبح وطن ہے یہ شام آزادی  
 ہمارے سینے میں شعلے بھڑک رہے ہیں فرق  
 ہماری سانس سے روشن ہے نام آزادی

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص-۳۳۸)

مصنف:- علی جواد زیدی



राम प्रसाद बिस्मिल

1897-1927

## दूर तक याद—ए—वतन आई थी समझाने को

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रह कर

हम को भी पाला था माँ—बाप ने दुख सह सह हर

वक्त—ए—रुखसत उन्हें इतना भी न आए कह कर

गोंद में आँसू कभी टपके जो रुख से बह कर

तिफ़्फ़ उन को समझ लेना जी बहलाने को

देश सेवा ही बहता है लहू नस नस में

अब तो खा बैठे हैं चित्तौड़ के गढ़ की कस्में

सरफ़रोशी की अदा होती हैं यूँ ही रस्में

भाई खजूर से गले मिलते हैं सब आपस में

बहने तैयार चिताओं पे हैं जल जाने को

नौजवानों जा तबीअत में तुम्हारे खाटके

याद कर लेना कभी हम को भी भूले—भटके

आप के उज्व—ए—बदन होवें जुदा कट कट के

और सद—चाक हो माता का कलेजा फटके

पर न माथे पे शिकन आए कसम खाने को



अपनी किरमत में अजल से ही सितम रक्खा था  
रंज रक्खा था मेहन रक्सा था गम रक्खा था  
किस को परवाह था और किस में ये दम रक्खा था  
हम ने जब वादी-ए-गर्बत में कदम रक्खा था

दूर तक याद-ए-वतन आई थी समझने को  
अपना कुछ गम नहीं है पर खयाल आता है  
मादर-ए-हिन्द पे कब से ये जवाल आता है  
देश आजादी का कब हिन्द में साल आता है  
कौम अपनी पे तो रह र हके मलाल आता है

मुंतजिर रहते हैं हम खाक में कमल जाने को

स्रोत:

पुस्तक: जब शुदा नज्मे (पृष्ठ 88)

रचनाकार: खलीक अंजुम



رام پرساد بيشنل

۱۸۹۷-۱۹۲۷

### دور تک یاد وطن آئی تھی سمجھانے کو

ہم بھی آرام اٹھا سکتے تھے گھر پر رہ کر  
ہم کو بھی پالا تھا ماں باپ نے دکھ سہ سہہ کر  
وقت رخصت انہیں اتنا بھی نہ آئے کہہ کر  
گود میں آنسو کبھی بچے جو رزخ سے بہہ کر  
مظل ان کو ہی سمجھ لینا جی بہانے کو  
دیش سیوا ہی کا بہتا ہے لہو نس نس میں  
اب تو کھا بیٹھے ہیں چتور کے گڑھ کی قسمیں  
سرفروشی کی ادا ہوتی ہیں یوں ہی رہیں  
بھائی مخنجر سے گلے ملتے ہیں سب آپس میں  
بہنیں تیار چٹاؤں پہ ہیں جل جانے کو  
نوجوانوں جو طبیعت میں تمہاری کھلے  
یاد کر لینا کبھی ہم کو بھی بھولے بھٹکے  
آپ کے عضو بدن ہوویں جدا کت کت کے  
اور صد چاک ہو ماما کا کلیجہ پھٹکے  
پر نہ ماتھے پہ ٹھمن آئے قسم کھانے کو

اپنی قسمت میں ازل سے ہی ستم رکھا تھا  
رج رکھا تھا محن رکھا تھا غم رکھا تھا  
کس کو پرواہ تھا اور کس میں یہ دم رکھا تھا  
ہم نے جب وادیِ غربت میں قدم رکھا تھا  
دور تک یادِ وطن آئی تھی سمجھانے کو

اپنا کچھ غم نہیں ہے پر یہ خیال آتا ہے  
مادرِ ہند پہ کب سے یہ زوال آتا ہے  
دیشِ آزادی کا کب ہند میں سال آتا ہے  
قوم اپنی پہ تو رہ رہ کے ملال آتا ہے  
منتظر رہتے ہیں ہم خاک میں مل جانے کو

ماخذ:-

کتاب:- ضبط شدہ نظمیں (ص- ۸۸)

مصنف:- خلیق انجم



राम प्रसाद बिस्मिल

1897-1927

वो चुप रहने को कहते हैं जो हम फरियाद करते हैं

इलाही ख़ाँर वो हर दम नई बेदाद करते हैं  
हमी तोहमत लगाते हैं जो हम फरियाद करते हैं  
कभी आजाद करते हैं कभी बेदाद करते हैं  
मगर उस पर भी हम सौ जी से उन को याद करते हैं  
असीरान-ए-कफ़स से काश ये सय्याद कह देता  
रहो आजाद हो कर हम तुम्हें आजाद करते हैं  
रहा करता है अहल-ए-गम को क्या क्या इतिजार इस का  
कि देखें वो दिल-ए-नाशाद को कब शाद करते हैं  
ये कह कह कर बसर की उम्र हम ने कैद-ए-उल्फ़त में  
वो अब आजाद करते हैं वो अब आजाद करते हैं  
सितम ऐसा नहीं देखा जफ़ा ऐसी नहीं देखी  
वो चुप रहने को कहते हैं जो हम फरियाद करते हैं  
ये बात अच्छी नहीं होती ये बात अच्छी नहीं होती  
हमें बेकस समझ कर आप क्यूँ बर्बाद करते हैं  
कोई बिस्मिल बनाता है जो मक्तल में हमें बिस्मिल  
तो हम डर कर दबी आवाज़ से फरियाद करते हैं

स्रोत:

पुस्तक: जब्त शुदा नज़्मे (पृष्ठ 86)

रचनाकार: खलीक अंजुम



رام پرساد بھسل

۱۸۹۷-۱۹۲۷

وہ چپ رہنے کو کہتے ہیں جو ہم فریاد کرتے ہیں

الہی خیر وہ ہم نئی بیداد کرتے ہیں  
ہمیں تہمت لگاتے ہیں جو ہم فریاد کرتے ہیں  
کبھی آزاد کرتے ہیں کبھی بیداد کرتے ہیں  
مگر اس پر بھی ہم سوچی سے ان کو یاد کرتے ہیں  
اسیرانِ قفس سے کاش یہ سیاد کہہ دیتا  
رہو آزاد ہو کر ہم تمہیں آزاد کرتے ہیں  
رہا کرتا ہے اہلِ غم کو کیا کیا انتظار اس کا  
کہ دیکھیں وہ دلِ ناشاد کو کب شاد کرتے ہیں  
یہ کہہ کہہ کر بسر کی عمر ہم نے قیدِ الفت میں  
وہ اب آزاد کرتے ہیں وہ اب آزاد کرتے ہیں  
ستم ایسا نہیں دیکھا جفا ایسی نہیں دیکھی  
وہ چپ رہنے کو کہتے ہیں جو ہم فریاد کرتے ہیں  
یہ بات اچھی نہیں ہوتی یہ بات اچھی نہیں کرتے  
ہمیں بے کس سمجھ کر آپ کیوں برباد کرتے ہیں  
کوئی بھسل بناتا ہے جو مثل میں ہمیں بھسل  
تو ہم ڈر کر دہلی آواز سے فریاد کرتے ہیں

ماخذ:-

کتاب:- ضربا شدہ نظمیں (ص ۸۶)

مصنف:- خلیق انجم



जोश मलीहाबादी  
1898-1982

## तलाशी

जिस से उम्मीदों में बिजली आग अरमानों में है  
ऐ हुकूमत ! क्या वह भी इन मेज के खानों में है

बंद पानी में सफ़ीना खे रही हैं किस लिए  
तू मेरे घर की तलाशी ले रही है किस लिए

घर में दुरवेशों के क्या रखा हुआ है बदनिहाद !  
आ मेरे दिल की तलाशी ले कि बर आए मुराद

जिसके अंदर दहशतें पुरहौल तूफानों की हैं  
लरजा अफ़गन आधियाँ तीरह बयाबानों की हैं

जिसके अंदर नाग हैं ऐ दुश्मन-ए-हिन्दुस्ताँ !  
शेर जिसमें हौंगते हैं, काँदती हैं बिजलियाँ

जिसके अंदर आग है, दुनिया पे छा जाए वह आग  
नास-ए-दोज़ख़ को पसीना जिससे आ जाए वह आग

सौत जिसमें देखती है मुहँ उस आईने को देख  
मेरे घर को देखती क्या है, मेरे सीने को देख

(1939)

स्रोत:

पुस्तक: जोश की इंकलाबी नज़्में (पृष्ठ 29)

रचनाकार: डॉ. इस्मत मलीहाबादी



جوش ملیح آبادی

۱۸۹۸-۱۹۸۲

### تلاشی

جس سے امیدوں میں بجلی، آگ ارمانوں میں ہے  
اے حکومت! کیا وہ شے ان میز کے خانوں میں ہے  
بند پانی میں سفینہ کھے رہی ہے کس لے  
تو مرے گھر کی تلاشی لے رہی ہے کس لے  
گھر میں درویشوں کے کیا رکھا ہوا ہے بد نہاد!  
امرے دل کی تلاشی لے کہ بر آئے فراد  
جس کے اندر دہشیں پرہول طو فانوں کی ہیں  
لرزہ اگلا آندھیاں، تیرہ بیابانوں کی ہیں  
جس کے اندر ناگ ہیں اے دشمن ہندوستان!  
شیر جس میں ہو نکتے ہیں، کوندتی ہیں بجلیاں  
جس کے اندر آگ ہے، دنیا پر چھا جائے وہ آگ  
نارودرخ کو پسینہ جس سے آجائے وہ آگ  
موت جس میں دیکھتی ہے منہ اس آئینے کو دیکھ  
میرے گھر کو دیکھتی کیا ہے، میرے سینے کو دیکھ

ماخذ:-

کتاب:- جوش کی انقلابی نظمیں (ص-۲۹)

مصنف:- ڈاکٹر عصمت ملیح آبادی



जोश मलीहाबादी  
1898-1982

## ईस्ट इंडिया कंपनी के फरजंदों से खिताब

किस जबाँ से कह रहे हो आज तुम साँदागरी  
दहर में इंसानियत के नाम को ऊँचा कराँ  
जिस को सब कहते हैं हिटलर भेड़िया है भेड़िया  
भेड़ियेँ काँ मार दाँ गोली पए-अमन-आँ-बका  
बाग-ए-इंसानी में चलने ही पे है बाद-ए-खिजाँ  
आदमियत लं रही है हिचकियों पर हिचकियाँ  
हाथ है हिटलर का रखश-ए-खुद-सरी की बाग पर  
तंग का पानी छिड़क दाँ जर्मनी की आग पर  
सखत हैराँ हूँ कि महफिल में तुम्हारी और ये जिक्र  
नाँ-ए-इंसानी के मुस्तकबिल की अब करते हो फिक्र  
जब यहाँ आए थे तुम साँदागरी के वास्तं  
नाँ-इंसानी के मुस्तकबिल से किया वाफिक्र न थे  
हिन्दियों के जिस्म में क्या रूह-ए-आजादी न थी  
सच बताओ क्या वाँ इंसानों की आबादी न थी  
अपने जुल्म-ए-बे-निहायत का फसाना याद है  
कंपनी का फिर वाँ दौर-ए-मुजरिमाना याद है



लूटते फिरते थो जब तुम कारवाँ-दर-कारवाँ  
सर-बरहना फिर रही थी दौलत-ए-हिन्दोस्ताँ  
दस्त-कारों के अंगूठे काटते फिरते थो तुम  
सर्द लाशों से गढों को पाटते फिरते थो तुम

सनअत-ए-हिन्दोस्ताँ पर माँत थी छाई हुई  
माँत भी कैसी तुम्हारे हात की लाई हुई  
अल्लाह अल्लाह किस कदर इसाफ के तालिब हो आज  
मीर-जाफर की कसम क्या दुश्मन-ए-हक था 'सिराज' ?  
क्या अवध की बंगमों का भी सताना याद है ?  
याद है झाँसी की रानी का जमाना याद है ?

हिजरत-ए-सुल्तान-ए-देहली का समाँ भी याद है ?  
शोर-दिल 'टीपू' की खूनी दास्ताँ भी याद है ?  
तीसरे फाके में इक गिरते हुए को थामने  
कस के तुम लाए थे सर शाह-ए-जफर के सामने  
याद ताँ होगी वो मटिया-बुर्ज की भी दास्ताँ  
अब भी जिस की खाक से उठता है रह रह कर धुआँ

तुम ने कैसर-बाग को देखा तो होगा बारहा  
आज भी आती है जिस से हाए 'अखतर' की सदा  
सच कहां क्या हाफिजे में है वो जुल्म-ए-बे-पनाह  
आज तक रंगून में इक कब है जिस की गवाह  
जंहेन में होगा ये ताजा हिन्दियों का दाग भी  
याद तो होगा तुम्हें जलियानवाला-बाग भी

पूछ लो इस से तुम्हारा नाम क्यूँ ताबिंदा है  
‘डायर’-ए-गुर्ग-ए-दहन-आलूद अब भी जिंदा है  
वो ‘भगत-सिंह’ अब भी जिस के गम में दिल नाशाद है  
उस की गर्दन में जो डाला था वो फदा याद है  
अहल-ए-आजादी रहा करते थे किस हंजार से  
पूछ लो ये कौद-खानों के दर-ओ-दीवार से  
अब भी है महफूज जिस पर तनतना सरकार का  
आज भी गूँजी हुई है जिन में कोड़ों की सदा  
आज कश्ती अमन के अमवाज पर खोंते हो क्यूँ  
सख्त हैराँ हूँ कि अब तुम दर्स-ए-हक देते हो क्यूँ

अहल-ए-कुव्वत दाम-ए-हक में तो कभी आते नहीं  
‘बैंकी’ अखलाक को खतरे में भी लाते नहीं  
लेकिन आज अखलाक की तल्कीन फरमाते हो तुम  
हो न हो अपने में अब कुव्वत नहीं पाते हो तुम  
अहल-ए-हक रोशन-नजर हैं अहल-ए-बातिन कोर हैं  
ये तो हैं अकवाल उन कौमों के जो कमजोर हैं  
आज शायद मजिल-ए-कुव्वत में तुम रहते नहीं  
जिस की लाठी उस की भैंस अब किस लिए कहते नहीं  
क्या कहा इसाफ है इसाँ का फर्ज-ए-अव्वली  
क्या फसाद-ओ-जुल्म का अब तुम में कस बाकी नहीं  
दर से बैठे हाँ नखल-ए-रास्ती की छाँव में  
क्या खुदा-ना-कदा कुछ मोच आ गई है पाँव में

गूँज टापों की न आबादी न वीरानों में है

खौर तो है अस्प-ए-ताजी क्या शिफा-खाने में है

आज कल तो हर नजर में रहम का अंदाज है

कुछ तबीअत क्या नसीब-ए-दुश्मनों ना-साज है

साँस क्या उखाड़ी कि हक के नाम पर मरने लगे

ना-ए-इसाँ की हवा-खुवाही का दम भरने लगे

जुल्म भूले रागनी इसाफ की गाने लगे

लग गई हैं आग क्या धार में कि चिल्लाने लगे

मुजरिमों के वास्ते जेबा नहीं ये शोर-ओ-शैन

कल 'यजीद' ओ 'शिन्न' थे और आज बनते हो हुसैन

खौर ऐ साँदागरों अब है तो बस इस बात में

वक्त के फरमान के आगे झुका दो गर्दन

इक कहानी वक्त लिक्खोंगा नए मजमून की

जिस की सुर्खी को जरूरत है तुम्हारे खून की

वक्त का फरमान अपना रुखा बदल सकता नहीं

माँत टल सकती है अब फरमान टल सकता नहीं

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 351)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



جوش ملیح آبادی

۱۸۹۸-۱۹۸۲

ایسٹ انڈیا کمپنی کے فرزندوں سے خطاب

کس زبان سے کہہ رہے ہو آج تم سوداگر  
دہر میں انسانیت کے نام کو اونچا کرو  
جس کو سب کہتے ہیں ہنر بھیریا ہے بھیریا  
بھیرے کو مار دو گولی پے امن و بقا  
باغ انسانی میں چلنے ہی پہ ہے باد خزاں  
آدمیت لے رہی ہے چنگیوں پر ہچکیاں  
ہاتھ ہے ہنر کا رخس خود سری کی باگ پر  
تج کا پانی چھڑک دو جرمنی کی آگ پر  
سخت حیراں ہوں کہ محفل میں تمہاری اور یہ ذکر  
نوع انسانی کے مستقبل کی اب کرتے ہو فکر  
جب یہاں آئے تھے تم سوداگری کے واسطے  
نوع انسانی کے مستقبل سے کیا واقف نہ تھے  
بندیوں کے جسم میں کیا روح آزادی نہ تھی  
سچ بتاؤ کیا وہ انسانوں کی آبادی نہ تھی  
اپنے ظلم بے نہایت کا فسانہ یاد ہے  
کمپنی کا پھر وہ دور مجرمانہ یاد ہے

لوٹتے پھرتے تھے جب تم کارواں در کارواں  
 سر برہنہ پھر رہی تھی دولت ہندوستان  
 دست کاروں کے انگوٹھے کانٹے پھرتے تھے تم  
 سرد لاشوں سے گڈھوں کو پائتے پھرتے تھے تم  
 صنعت ہندوستان پر موت تھی چھائی ہوئی  
 موت بھی کیسی تمہارے ہات کی لائی ہوئی  
 اللہ اللہ کس قدر انصاف کے طالب ہو آج  
 میر جعفر کی قسم کیا دشمن حق تھا سرِ حق  
 کیا اودھ کی بیگموں کا بھی ستانا یاد ہے  
 یاد ہے جھانسی کی رانی کا زمانہ یاد ہے  
 ہجرت سلطانِ دہلی کا سماں بھی یاد ہے  
 شیر دل ٹیپو کی خونیں داستان بھی یاد ہے

تیرے فاتحے میں اک گرتے ہوئے کو تھامنے  
 کس کے تم لائے تھے سر شاہِ ظفر کے سامنے  
 یاد تو ہوگی وہ غیا برج کی بھی داستان  
 اب بھی جس کی خاک سے اٹھتا ہے رہ کر دھواں  
 تم نے قیصرِ باغ کو دیکھا تو ہوگا بارہا  
 آج بھی آتی ہے جس سے ہائے اختر کی صدا  
 سچ کہو کیا حافظے میں ہے وہ ظلم بے پناہ  
 آج تک رنگون میں اک قبر ہے جس کی گواہ

ذہن میں ہوگا یہ تازہ ہندیوں کا داغ بھی  
 یاد تو ہوگا جمہیں جلیانوالا باغ بھی

پوچھ لو اس سے تمہارا نام کیوں تانبہ ہے  
 ڈائر گرگ دہن آلود اب بھی زندہ ہے  
 وہ بجلتے سنگھ اب بھی جس کے غم میں دل ناشاد ہے  
 اس کی گردن میں جو ڈالا تھا وہ پھندا یاد ہے  
 اہل آزادی رہا کرتے تھے کس ہتھیار سے  
 پوچھ لو یہ قید خانوں کے در و دیوار سے  
 اب بھی ہے محفوظ جس پر طغیانہ سرکار کا  
 آج بھی گونجی ہوئی ہے جن میں کوزوں کی صدا  
 آج کشتی امن کے امواج پر کھیتے ہو کیوں  
 سخت حیراں ہوں کہ اب تم درس حق دیتے ہو کیوں  
 اہل قوت دام حق میں تو کبھی آتے نہیں  
 "ہیکلی" اخلاق کو خطرے میں بھی لاتے نہیں  
 لیکن آج اخلاق کی تلقین فرماتے ہو تم  
 ہو نہ ہو اپنے میں اب قوت نہیں پاتے ہو تم  
 اہل حق روشن نظر ہیں اہل باطن گور ہیں  
 یہ تو ہیں اقوال ان قوموں کے جو کمزور ہیں  
 آج شاید منزل قوت میں تم رہتے نہیں  
 جس کی لائحی اس کی بھینس اب کس لئے کہتے نہیں  
 کیا کہا انصاف ہے انساں کا فرض اولیں  
 کیا فساد و ظلم کا اب تم میں کس باقی نہیں  
 دیر سے بیٹھے ہو نخل راستی کی چھاؤں میں  
 کیا خدا ناکردہ کچھ موج آگنی ہے پاؤں میں

گونج ناپوں کی نہ آبادی نہ ویرانے میں ہے  
 خیر تو ہے اسپ تازی کیا شفا خانے میں ہے  
 آج کل تو ہر نظر میں رحم کا انداز ہے  
 کچھ طبیعت کیا نصیب دشمنان ناساز ہے  
 سانس کیا اکھڑی کہ حق کے نام پر مرنے لگے  
 نوع انسان کی ہوا خواہی کا دم بھرنے لگے  
 ظلم بھولے راگنی انصاف کی گانے لگے  
 لگ گئی ہے آگ کیا گھر میں کہ چلانے لگے  
 مجرموں کے واسطے زیبا نہیں یہ شور و شین  
 گل یزید و شہر تے اور آج بنتے ہو حسین  
 خیر اے سوداگرو اب ہے تو بس اس بات میں  
 وقت کے فرمان کے آگے جھکا دو گردنیں  
 اک کہانی وقت لکھے گا نئے مضمون کی  
 جس کی سرخی کو ضرورت ہے تمہارے خون کی  
 وقت کا فرمان اپنا رخ بدل سکتا نہیں  
 موت ٹل سکتی ہے اب فرمان ٹل سکتا نہیں

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص-۳۵۱)

مصنف:- علی جواد زیدی



आनंद नारायण मुल्ला

1901-1997

## महात्मा गाँधी का कत्ल

मशिरक का दिया गुल होता है मगरिब पे सियाही छाती है  
हर दिल सन सा हाँ जाता है हर साँस की लाँ थर्राती है  
उत्तर दक्खिन पूरब पच्छिम हर समत से इक चीख आती है  
नाँ-ए-इंसाँ काँधाँ पे लिए गाँधी की अर्थाँ जाती है

आकाश के तारे बुझते हैं धरती से धुआँ सा उठता है  
दुनिया को ये लगता है जैसे सर से कोई साया उठता है

कुछ देर को नब्ज-ए-आलम भी चलते चलते रुक जाती है  
हर मुल्क का परचम गिरता है हर काँम को हिचकी आती है  
तहजीब जहाँ थर्राती है तारीखा-ए-बशर शरमाती है  
माँत अपने कटे पर खुद जैसे दिल ही दिल में पछताती है

इंसाँ वो उठा जिस का सानी सदियों में भी दुनिया जन न सकी  
मूरत वो मिटी नक्काश से भी जाँबन के दोबारा बन न सकी

देखा नहीं जाता आँखाँ से ये मंजर-ए-इबरतनाक-ए-वतन  
फूलों के लहू के प्यासे हैं अपने ही खस-ओ-खा ताक-ए-वतन  
हाथों से बुझाया खुद अपने वो शोला-ए-रुह पाक-ए-वतन  
दाग उस से सियाह-तर कोई नहीं दामन पे तिरे ए खाक-ए-वतन

पैगाम-ए-अजल लाई अपने उस सब से बड़े मोहसिन के लिए  
एँ वाए-तुलू-ए-आजादी आजाद हुए उस दिन कि लिए



जब नाखून-ए-हिकमत ही टूटे दुश्वार को आसाँ कौन करे  
जब खुश्क हुआ अब्र-ए-बाराँ ही शाखों को गुल-अफशाँ कौन करे  
जब शोला-ए-मीना सर्द हो खुद जामों को फ़रोजाँ कौन करे  
जब सूरज ही गुल हो जाए तारों में चरागाँ कौन करे

नाशाद वतन अपसोस तेरी किस्मत का सितारा टूट गया

उँगली को पकड़ कर चलते थे जिस की वही रहबर छूट गया

उस हुस्न से कुछ हस्ती में तेरी अजदाद हुए थे आ के बहम  
इक ख़वाब-ओ-हकीकत का संगम मिट्टी पे कदम नजरोँ में इरम  
इक जिस्म-ए-नहीफ़-ओ-ज़ार मगर इक अज़्म-ए-जवान-ओ-मुस्तहकम  
चश्म-ए-बीना मासूम का दिल खुर्शीद नफ़स जाँक-ए-शबनम

वो इज्ज-ए-गुरुस-ए-सुल्ताँ भी जिस के आगे झुक जाता था

वो मोम कि जिस से टकरा कर लोहे को पसीना आता था

सीने में जो दें काँटों को भी जा उस गुल की लताफत क्या कहिए  
जिस ज़हर पिए अमृत कर के उस लब की हलावत क्या कहिए  
जिस साँस में दुनिया जाँ पाए उस साँस की निकहत क्या कहिए  
जिस मौत पे हस्ती नाज़ करे उस मौत की अज़मत क्या कहिए

ये मौत न थी कुदरत ने तेरे सिर पर रक्खा इक ताज-ए-हयात

थी जीस्त तेरे मेराज-ए-वफ़ा और मौत तेरी मेराज-ए-हयात

यकसाँ नज़दीक-ओ-दूर पे था बारान-ए-फ़ैज-ए-आम तेरा  
हर दश्त-ओ-चमन हर कोह-ओ-दमन में गूँजा है पैगाम तेरा  
हर खुश्क-ओ-तर हस्ती पे रक़म है ख़त्त-ए-जली में नाम तेरा  
हर ज़र्रेँ में तेरा माबद हर कतरा तीरथा धाम तेरा

उस लुत्फ़-ओ-करम के आई में मर कर भी न कुछ तरमीम हुई

इस मुल्क के कोने कोने में मिट्टी भी तेरी तक्सीम हुई

तारीख में काँमाँ की उभारे कैसे कैसे मुम्ताज बशर  
कुछ मुल्क के तख़्त-नशीं कुछ तख़्त-फलक के ताज-बसर  
अपनों के लिए जाम-ओ-सहबा औरों के लिए शमशीर-ओ-तबर  
नर्द-ओ-इंसाँ टपकी ही रही दुनिया की बिसात-ए-ताकत पर

मख़्लूक खुदा की बन के सिपर मैदों में दिलावर एक तू ही  
ईमाँ के पयम्बर आए बहुत इंसाँ का पयम्बर एक तू ही

बाजू-ए-फ़र्दा उड़ उड़ के थके तेरी रिफ़अत तक जा न सके  
जँहनों की तजल्ली काम आई खाके भी तेरे हाथ आ न सके  
अलफ़ाज-ओ-मानी ख़त्म हुए उनवाँ भी तेरा अपना न सके  
नज़रों के केवल जल जल के बुझे परछाई भी तेरी पा न सके

हर ईल्म-ओ-यकी से बाला-तर तू है वो सिपेह-ए-ताबिदा  
सूफी की जहाँ नीची है नजर शायर का तसव्वुर शर्मिदा

पस्ती-ए-सियासत को तू ने अपने कामत से रिफ़अत दी  
ईमाँ की तंग-ख़याली को इंसाँ के ग़म की वुसअत दी  
हर साँस से दर्स-ए-अमन दिया हर जब पे दाद-ए-उल्फ़त दी  
कातिल को भी गर लब हिल न सके आँखों से दुआ-ए-रहमत दी

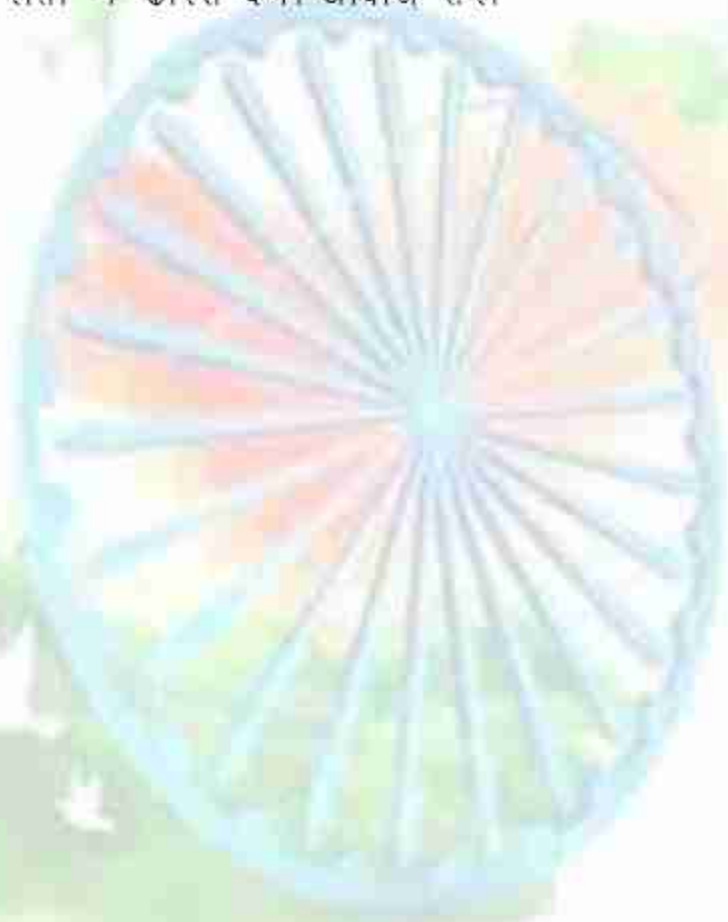
“हिंसा” को अहिंसा का अपनी पैगाम सुनाने आया था  
नफ़रत की मारी दुनिया में इक “प्रेम संदेश” लाया था

उस प्रेम संदेश को तेरे सीनों का अमानत बनना है  
सीनों से कुदूरत धाने को इक मौँज-ए-नदामत बनना है  
उस मौँज को बढ़ते बढ़ते फिर सैलाब-ए-मोहब्बत बनना है  
उस सैल-ए-रवाँ के धारे को इस मुल्क की किस्मत बनना है

जब तक न बहेगा ये धारा शादाब न होगा बाग तेरा  
ऐ खाक-ए-बतन दामन से तेरा धुलने का नहीं ये दाग तेरा

जाते जाते भी तो हम को इक जीस्त का उनवाँ दे के गया  
बुझती हुई भाम-ए-महफिल को शोला-ए-रक्साँ दे के गया  
भटकं हुए गाम-ए-इंसाँ को फिर जादा-ए-इंसाँ दे के गया  
हर साहिल-ए-जुल्मत को अपनी मीनार-ए-दरखशाँ दे के गया

तू चुप है लेकिन सदियों तक गूँजेगा सदा-ए-साज तेरी  
दुनिया को अँधेरी रातों में ढारस देगी आवाज तेरी



स्रोत:

पुस्तक: जादा-ए-मुल्ला (पृष्ठ 63)

रचनाकार: आनंद नारायण मुल्ला



آنند نارائن ماٹو

۱۹۰۱-۱۹۹۷

## مہاتما گاندھی کا قتل

مشرق کا دیا گل ہوتا ہے، مغرب پہ سایا چھپاتی ہے  
 ہر دل نُن سا ہو جاتا ہے ہر سانس کی لو آتی ہے  
 اتر، دکھن، پورب، کچھم ہر سمت سے اک چنچ آتی ہے  
 نوعِ انساں شانوں پہ لیے گاندھی کی ارتھی جاتی ہے

آکاش کے تارے بجتے ہیں، دھرتی سے دھواں سا اٹھتا ہے  
 دنیا کو یہ لگتا ہے جیسے سر سے کوئی سایا اٹھتا ہے  
 کچھ دیر کو نبضِ عالم بھی چلتے چلتے رک جاتی ہے  
 ہر ملک کا پرچم گرتا ہے ہر قوم کو ہچکلی آتی ہے  
 تہذیب جہاں آتی ہے، تاریخِ بشر شرماتی ہے  
 موت اپنے کیے پر خود جیسے دل ہی دل میں پچھتاتی ہے

انساں وہ اٹھا جس کا ثانی صدیوں میں بھی دنیا جنم نہ سکی  
 مورت وہ مٹی نقاش سے بھی جو، بن کے دوبارہ جنم نہ سکی  
 دیکھا نہیں جاتا آنکھوں سے یہ <sup>مسطح</sup> مہرت نیک وطن  
 پھولوں کے لہو کے پیاسے ہیں اپنے ہی خس و خاشاکِ وطن  
 ہاتھوں سے بھجایا خود اپنے وہ شعلہ زورِ پاکِ وطن  
 داغ اس سے یہ تر کوئی نہیں دامن پہ ترے اے خاکِ وطن

پیغامِ اہل لائی اپنے اس سب سے بڑے مہمن کے لیے  
 اے وائے ظلمِ آزادی آزاد ہوئے اس دن کے لیے

جب ناخن حکمت ہی ٹوٹے، دشوار کو آسماں کون کرے  
جب خشک ہوا ابرباراں ہی، شاخوں کو گل افشاں کون کرے  
جب شعلہ مینا سرد ہو خود، جاموں کو فردزاں کون کرے  
جب سورج ہی گل ہو جائے، تاروں میں چراغاں کون کرے

ناشاد، وطن! افسوس تری قسمت کا ستارہ ٹوٹ گیا  
انگلی کو پکڑ کر چلتے تھے جس کی وہی رہبر چھوٹ گیا

اس سخن سے کچھ ہستی میں تری اضداد ہوئے تھے آ کے بہم  
اک خواب و حقیقت کا سنگم، منی پہ قدم نظروں میں ازم  
اک جسم نحیف و زار مگر اک عزم جوان و مستحکم  
چشم مینا، معصوم کا دل، خورشیدِ نفس، ذوقِ شبنم

وہ عجز، غرورِ سلطان بھی جس کے آگے جھک جاتا تھا  
وہ موم کہ جس سے ٹکرا کر لوہے کو پسینہ آتا تھا

سینے میں جو دسے کانٹوں کو بھی جا اس گل کی لطافت کیا کہئے  
جو زہر پئے امرت کر کے اس لب کی عداوت کیا کہئے  
جس سانس میں دنیا جاں پائے اس سانس کی کہت کیا کہئے  
جس موت پہ ہستی ناز کرے اس موت کی عظمت کیا کہئے

یہ موت نہ تھی قدرت نے ترے سر پر رکھا اک تاجِ حیات  
تھی زیست تری معرقتِ وفا اور نموت تری معرقتِ حیات

یکساں نزدیک و دور پہ تھا، بارگِ فیضِ عام ترا  
ہر دشت و چمن، ہر کوہ و دامن میں گونجا ہے پیغام ترا  
ہر خشک و تر ہستی پہ رقم ہے خطِ جلی میں نام ترا  
ہر قدمے میں تیرا معبود ہے، ہر قطرہ تیرا تمہ دعاء ترا

اس لطف و کرم کے آئیں میں مر کر بھی نہ کچھ ترمیم ہوئی  
اس ملک کے کونے کونے میں منی بھی تری تقسیم ہوئی

تاریخ میں قوموں کی ابھریں کیسے کیسے ممتاز بشر  
کچھ ملک زمین سے تخت نشیں کچھ تخت فلک کے تاج بر  
انہوں کے لیے جام و صہبا، اوروں کے لیے شمشیر و تیر  
نرو و انساں پختی ہی رہی دنیا کی بساط طاقت پر

مخلوق خدا کی بن کے سپر میداں میں دلاور ایک تو ہی  
ایماں کے پیہر آئے بہت، انساں کا پیہر ایک تو ہی

ہاروئے خرد از از کے تھکے تری رفعت تک جا نہ سکے  
ذہنوں کی تجلی کام آئی خاکے بھی ترے ہاتھ آ نہ سکے  
الفاظ و معنی ختم ہوئے، عنوان بھی ترا اپنا نہ سکے  
نظروں کے کنول جل جل کے بجھے، پرچھائیں بھی تیری پا نہ سکے

ہر علم و تقیوں سے بالاتر، تو ہے وہ سپر تابندہ  
صوفی کی جہاں نیچی ہے نظر، شاعر کا تصور شرمندہ

پستی سیاست کو تو نے اپنے قامت سے رفعت دی  
ایماں کی تنگ خیالی کو انساں کے غم کی وسعت دی  
ہر سانس سے درس امن دیا، ہر جبر پہ واہ الفت دی  
قاتل کو بھی گرا بھل نہ سکے، آنکھوں سے دعائے رحمت دی

"ہنا" کو اجسا کا اپنی پیغام سنانے آیا تھا  
نفرت کی ماری دنیا میں اک "پریم سندیسہ" لایا تھا

اس پریم سندیسے کو تیرے سینوں کی امانت بنا ہے  
سینوں سے کدورت دھونے کو اک موج ندامت بنا ہے  
اس موج کو بڑھتے بڑھتے پھر سیلاب محبت بنا ہے  
اس سیل رواں کے دھارے کو اس ملک کی قسمت بنا ہے

جب تک نہ ہے گا یہ دھارا، شاداب نہ ہوگا باغ ترا  
اے خاک وطن دامن سے ترے ڈھلنے کا نہیں یہ داغ ترا

جاتے جاتے بھی تو ہم اک زیت کا عنواں دے کے گیا  
بجھتی ہوئی شمع محفل کو پھر شعلہ رقصاں دے کے فیا  
بھگے ہوئے گم انسان کو پھر جادو انساں دے کے گیا  
ہر ساحل ظلمت کو اپنا بینا درخشاں دے کے گیا

تو چپ ہے لیکن صدیوں تک گونجے گی صدائے ساز تری  
دنیا کو اندھیری راتوں میں ڈھارس دے گی آواز تری

ماخذ:-

کتاب:- جادو نما (ص-۶۳)

مصنف:- آندھارا سن نما



सागर निजामी  
1905-1983

### अहद

जब तलाई रंग सिक्कों को नचाया जाएगा

जब मेरी गैरत को दौलत से लड़ाया जाएगा

जब रग-ए-इफलास को मेरी दबाया जाएगा

ऐ वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नरम गारुंगा

और अपने पाँव से अबार-ए-ज़र टुकराऊंगा

जब मुझे पेंडों से उर्या करके बाँधा जाएगा

गर्म आहन से मेरे होठों को दागा जाएगा

जब दहकती आग पर मुझे लीटाया जाएगा

ऐ वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नरम गारुंगा

तेरे नरम गारुंगा और आग पर सौ जाऊंगा

ऐ वतन जब तुझे दुश्मन गोलियाँ बरसाएंगे

सुर्ख बादल जब फ़जाओं पर तेरी छा जाएंगे

जब समुद्र आग के बुर्जों से टक्कर खाएंगे

ऐ वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नरम गारुंगा

तेंग की झंकार बनकर मिस्ल तूफ़ाँ आऊंगा



गोलियाँ चारों तरफ से घेर लेंगी जब मुझे  
और तन्हा छोड़ देगा जब मेरा मुरक्कब मुझे  
और संगीनों पे चाहेंगे उठाना सब मुझे

ऐ वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नम में गाऊँगा  
मरते-मरते इक तमाशा-ए-वफ़ा बन जाऊँगा

खून से रंगीन हो जाएगी जब तेरी बहार  
सामने होंगी मेरे जब सर्द लगजिशें बेशुमार  
जब मेरे बाजू पे सर आकर गिरेंगे बार-बार

ऐ वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नम में गाऊँगा  
और दुश्मन की सफ़ों पर बिजलियाँ बरसाऊँगा

जब दर-ए-जिन्दाँ खुलेगा बरमला मेरे लिए  
इतिहाई जब सजा होगी रवा मेरे लिए  
हर नफ़स जब होगा पैगाम-ए-क़जा मेरे लिए

ऐ वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नम में गाऊँगा  
बादह कश हूँ जहर की तल्खी से क्या घबराऊँगा

हुक्म आख़िर क़त्लगह में जब सुनाया जाएगा  
जब मुझे फाँसी के तख़ते पर चढ़ाया जाएगा  
जब यकायक तख़ता-ए-खूनी हटाया जाएगा

ऐ वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नम में गाऊँगा  
अहद करता हूँ कि मैं तुझ पर फ़िदा हो जाऊँगा

स्रोत:

पुस्तक: बाद-ए-मशिरक (पृष्ठ 53)

रचनाकार: सागर निजामी



ساغر نظامی

۱۹۸۳ - ۱۹۰۵

عہد

جب طلائی رنگ سکوں کو نچایا جائے گا  
جب میری غیرت کو دولت سے لڑایا جائے گا  
جن رنگ افلاس کو میری دبایا جائے گا

اے وطن اس وقت بھی میں تیرے نغمے گاؤں گا  
اور اپنے پاؤں سے انہار زر ٹھکراؤں گا  
جب مجھے بیڑوں سے عریاں کر کے باندھا جائے گا  
گرم آہن سے میرے ہونٹوں کو دانا جائے گا  
جب دہکتی آگ پر مجھ کو لٹایا جائے گا

اے وطن اس وقت بھی میں تیرے نغمے گاؤں گا  
تیرے نغمے گاؤں گا اور آگ پر سو جاؤں گا  
اے وطن جب تجھ پہ دشمن گولیاں برسائیں گے  
سرخ بادل جب فضاؤں پر تیری چھا جائیں گے  
جب سمندر آگ کے برجوں سے نکر کھائیں گے

اے وطن اس وقت بھی میں تیرے نغمے گاؤں گا  
تجھ کی جھنکار بن کر مثل طوفاں آؤں گا

گولیاں چاروں طرف سے گھیر لیں گی جب مجھے  
 اور تنہا چھوڑ دے گا جب میرا مرکب مجھے  
 اور سنگینوں پہ چاہیں گے اٹھانا سب مجھے  
 اے وطن اس وقت بھی میں تیرے نغمے گاؤں گا  
 مرتے مرتے اک تماشائے وفا بن جاؤں گا  
 خون سے رنگین ہو جائیں گی جب تیری بہار  
 سامنے ہوں گی میرے جب سرد لغزشیں بے شمار  
 جب میرے بازو پہ سر آ کر گریں گے بار بار  
 اے وطن اس وقت بھی میں تیرے نغمے گاؤں گا  
 اور دشمن کی صفوں پر بجلیاں برسائیں گا  
 جب در زنداں کھلے گا بر ملا میرے لیے  
 انتہائی جب سزا ہوگی روا میرے لیے  
 ہر نفس جب ہوگا پیغامِ قضا میرے لیے  
 اے وطن اس وقت بھی میں تیرے نغمے گاؤں گا  
 بادہ کش ہوں زہر کی تلخی سے کیوں گھبراؤں گا  
 حکمِ آخرِ قتلِ گم میں جب سنایا جائے گا  
 جب مجھے پھانسی کے تختے پر چڑھایا جائے گا  
 جب یکایک تختےِ خونیں ہٹایا جائے گا  
 اے وطن اس وقت بھی میں تیرے نغمے گاؤں گا  
 عہد کرتا ہوں کہ میں تجھ پر فدا ہو جاؤں گا

ماخذ:-

کتاب:- بادۂ مشرق (ص-۵۳)

مصنف:- سراج نظامی



सागर निजामी  
1905-1983

## ऐ सुब्ह-ए-वतन

ऐ सुब्ह-ए-वतन ऐ सुब्ह-ए-वतन  
ऐ रूह-ए-बहार ऐ जान-ए-चमन  
ऐ मुतरिब या ऐ साकी-ए-मन  
ऐ सुब्ह-ए-वतन ऐ सुब्ह-ए-वतन

ले जोश-ए-जुनों की जर्बों ने जजीर-ए-गुलामी तोड़ ही दी  
जम्हूर के संगीं पंजे ने शाही की कलाई मोड़ ही दी  
तारीख के खूनीं हाथों से छीना है तेरा सीमीं दामन

ऐ सुब्ह-ए-वतन ऐ सुब्ह-ए-वतन

फिर लौट के आया सदियों में इकबाल-ओ-तरब का सय्यारा  
किरणों में उफुक पर फिर चमका पस्ती के अँधेरो का मारा  
हैराँ हैराँ नाजाँ नाजाँ खाँदाँ खाँदाँ राँशन राँशन

ऐ सुब्ह-ए-वतन ऐ सुब्ह-ए-वतन

धरती के तबस्सुम से चमके आफाक-ए-अबद के सय्यारे  
जुलमत के तरन्नुम से फूटे नूर-ए-अबदिय्यत के धारे  
जरीं को तगय्युर ने बख्शा इक मौजिजा-ए-खुशींद-शिकन

ऐ सुब्ह-ए-वतन ऐ सुब्ह-ए-वतन

सोए हुए ज़रें जाग उठे अनवार-ए-सहर बेदार हुए  
एहसास-ए-जमीं बेदार हुआ अपकार-ए-बशर बेदार हुए  
बिस्तर से खजफ रेजे उठे और लाल-ओ-गुहर बेदार हुए  
आँखों को मिला गुलज़ारों ने शाखों पर समर बेदार हुए  
नैनों से मस्ती बरसाती लो जाग उठी हस्ती की दूल्हन

ऐ सुब्ह-ए-वतन ऐ सुब्ह-ए-वतन

बंजर धरती की नस नस में पाँदों का तखय्युल लहराया  
उजड़े खंतों पर साया है गहूँ के सुनहरी खांशां का  
हर बर्ग-ए-फसुर्दा ने खींचा दोशीजा बहारों का दामन

ऐ सुब्ह-ए-वतन ऐ सुब्ह-ए-वतन

सुनसान बयाबानों में है इक जज़्बा-ए-गुलशन-आराई  
वीरों खंडरों में लंता है महलों का तसव्वुर अंगड़ाई  
सीपी की रू-पहली झोली में है आज हजारों दुर-ए-अदन

ऐ सुब्ह-ए-वतन ऐ सुब्ह-ए-वतन

जरत में करवट लेने लगे सो लाला-रुखसान-ओ-माह-ए-जबी  
संगीन चटानों में जागे असनाम के खद-ओ-खाल-ए-हसी  
है दौर कि काबा क्या जाने है कौन सा आलम ज़ेर-ए-जमीं  
मस्जुद नहीं है कोई भी सज्द में मगर झुकती है जर्दी  
नक्काश है तेरी परछाई आजर है तिरे सूरज की किरन

ऐ सुब्ह-ए-वतन ऐ सुब्ह-ए-वतन

आहन की सलाबत में उभरा मासूम तसव्वुर नमीं का  
फूलों की लताफत में उमड़ा आहन बन जाने का जज़्बा  
करनों की खमोशी को हसरत है सैल-ए-बयों बन जाने का  
सदियों की उदासी को ज़िद है इक नुत्क-ए-जवों बन जाने का  
हर साँस के अंदर गलतों है तगय्युर के सीने की धड़कन

ऐ सुब्ह-ए-वतन ऐ सुब्ह-ए-वतन

पर्वत पर्वत सागर सागर परचम अपना लहराता है  
महलों पे मिलों पे किलों पर अजमत के तराने गाता है  
गुल-बार रिदाए-ए-आजादी सरशार जवानी का परचम  
ये अमन के नरमों का मुतरिब खामोश बगावत का ये अलम  
तहजीब का ये जरीं आंचल तामीर का ये रंगीं दामन  
ऐ सुब्ह-ए-वतन ऐ सुब्ह-ए-वतन

कन्दील-ए-सहर नूर-ए-मजिल खुरशीद-ए-सहर शम-ए-साहिल  
ये खून-ए-शहीदाँ का मखजन ये दर्द-ए-रफीकाँ का हासिल  
ये अमन का लहराता गेसू ये सिद्क-ओ-मोहब्बत का दर्पन  
ऐ सुब्ह-ए-वतन ऐ सुब्ह-ए-वतन

अब खोतों में गंदुम ही नहीं सोना भी उमगा ऐ साकी  
बख़्शो गा तगय्युर भूखों को इक रोज मिजाज-जाराती  
अब हीरे मोती उगलेंगे ये बाग-ओ-सहरा कोह-ओ-दमन  
ऐ सुब्ह-ए-वतन ऐ सुब्ह-ए-वतन

गाँव को सुनाएँगे मुज्दा एहसार-ए-हसीं बन जाने का  
जरो को संदेसा देंगे तड़प कर महर-जबीं बन जाने का  
आँर तेरे उफुक की लाली से होते हैं सितारे भी राँशन  
ऐ सुब्ह-ए-वतन ऐ सुब्ह-ए-वतन

अब खाक कदम मजबूशों की बरसाएगी दुनिया पर सोना  
अब अतलस की किरमत होगी पैराहन-ए-मेहनत-कश होना  
पड़ते ही निगाह-ए-साइका-ए-जन जल उठेगा हर नज्म-ए-कुहन  
ऐ सुब्ह-ए-वतन ऐ सुब्ह-ए-वतन

खोतों की जमीं ऊँची हो कर फिरदौस से रिश्ता जोड़ेगी  
अब हल की अनी सरमस्ती में आकाश के तारे तोड़ेगी  
वो दिन भी अब कुछ दूर नहीं जब सय्यारे होंगे आँगन  
ऐ सुब्ह-ए-वतन ऐ सुब्ह-ए-वतन

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 391)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



ساغر نظامی

۱۹۰۵ - ۱۹۸۳

## اے صبحِ وطن

اے صبحِ وطن اے صبحِ وطن

اے روحِ بہار اے جنِ چمن

اے مطربِ یا اے <sup>مطرب</sup> من

اے صبحِ وطن اے صبحِ وطن

لے جوشِ جنوں کی ضربوں نے زنجیرِ غلامی توڑ ہی دی

جہور کے سنگین پتھے نے شاہی کی کلائی موڑ ہی دی

تاریخ کے خونیں ہاتھوں سے چھینا ہے ترا سیمیں دامن

اے صبحِ وطن اے صبحِ وطن

پھر لوٹ کے آیا صدیوں میں اقبال و طرب کا سیارہ

کرنوں میں افق پر پھر چکا پستی کے اندھیروں کا مارا

حیرا حیرا نازاں نازاں خنداں خنداں روشن روشن

اے صبحِ وطن اے صبحِ وطن

دھرتی کے تبسم سے چمکے آفتاب کے ستارے

ظلمت کے ترنم سے پھولے نورِ ابدیت کے دھارے

ذروں کو تغیر نے بخشا اک معجزہ خورشیدِ شگن

اے صبحِ وطن اے صبحِ وطن

سوئے ہوئے فزے جاگ اٹھے انوار سحر بیدار ہوئے  
احساس زمیں بیدار ہوا افکار بشر بیدار ہوئے  
بستر سے خذف ریزے اٹھے اور لعل و گہر بیدار ہوئے  
آنکھوں کو غلا گلزاروں نے شاخوں پہ ثمر بیدار ہوئے  
نیوں سے مستی برساتی لو جاگ اٹھی ہستی کی دولہن  
اے صبح وطن اے صبح وطن

بجر دھرتی کی نس نس میں پودوں کا تنخیل لہرایا  
اڑے کھیتوں پر سایہ ہے گیہوں کے سنہری خوشوں کا  
ہر برگ فردہ نے کھینچا دوشیزہ بہاروں کا دامن  
اے صبح وطن اے صبح وطن

سنسان بیابانوں میں ہے اک جذبہ گلشن آرائی  
ویراں کھنڈروں میں لیتا ہے مہلوں کا تصور انگزائی  
پچی کی رو پہلی جھولی میں ہیں آج ہزاروں ہرّ عدن  
اے صبح وطن اے صبح وطن

ذات میں کروٹ لینے لگے سو لالہ رخسان و ماہ جبیں  
تکین چٹانوں میں جاگے امتام کے خد و خال حسیں  
ہے دیر کہ کعبہ کیا جانے ہے کون سا عالم زیر زمیں  
مسجود نہیں ہے کوئی بھی سجدے میں مگر جھکتی ہے جبیں  
فطاش ہے تیری پرچھائیں آذر ہے ترے سورن کی کرن  
اے صبح وطن اے صبح وطن

آہن کی صلابت میں ابھرا معصوم تصور نرمی کا  
پھولوں کی لطافت میں ادا آہن بن جانے کا جذبہ  
قرون کی خموشی کو حسرت ہے سیل بیاں بن جانے کا  
صدیوں کی اداسی کو خد ہے اک نطق جواں بن جانے کا  
ہر سانس کے اندر غلظاں ہے تغیر کے سینے کی دھڑکن  
اے صبح وطن اے صبح وطن



پریت پریت ساگر ساگر پرچم اپنا لہراتا ہے  
 مٹلوں پہ ملوں پہ قلعوں پر عظمت کے ترانے گاتا ہے  
 گلبارِ ردائے آزادی سرشارِ جوانی کا پرچم  
 یہ امن کے نعروں کا مطرب خاموش بغاوت کا یہ ظلم  
 تہذیب کا یہ زریں آنچلِ تعمیر کا یہ رنگیں دامن  
 اے صبحِ وطن اے صبحِ وطن

تقدیلِ سحرِ نورِ منزلِ خورشیدِ سحرِ شمعِ ساحل  
 یہ نمونِ شہیداں کا مخزن یہ دردِ رفیقاں کا حاصل  
 یہ امن کا لہراتا گیسو یہ صدق و محبت کا درپن  
 اے صبحِ وطن اے صبحِ وطن

اب کھیتوں میں گندم ہی نہیں ہونا بھی اگے گا اے ساقی  
 بخشے گا تغیرِ بھوکوں کو اک روز مزاجِ زراتی  
 اب ہیرے موتی اگلیں گے یہ باغ و صحرا کوہ و دامن  
 اے صبحِ وطن اے صبحِ وطن

گاؤوں کو سناگیں گے مژدہِ احصاءِ حسین بن جانے کا  
 فزوں کو سندیرہ دین گے ترپ کر مہرِ جبیں بن جانے کا  
 اور تیرے افق کی لالی سے ہوتے ہیں ستارے بھی روشن  
 اے صبحِ وطن اے صبحِ وطن

اب خاکِ قدمِ مجبوروں کی برسائے گی دنیا پر سونا  
 اب اطلس کی قسمت ہوگی پیرامنِ محنت کش ہونا  
 پڑتے ہی نگاہِ صاعقہ زنِ جلِ اٹھے گا ہر نظمِ کہن  
 اے صبحِ وطن اے صبحِ وطن

کھیتوں کی زمیں اونچی ہو کر فردوس سے رشتہ جوڑے گی  
 اب بل کی آئی سرمستی میں آکاش کے تارے توڑے گی  
 وہ دن بھی اب کچھ دور نہیں جب سیارے ہوں گے آگن  
 اے صبحِ وطن اے صبحِ وطن

ماخذ:- کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سوسال (ص-۳۹۱)

مصنف:- علی جواد زیدی



अर्श मलसियानी  
1908-1979

## इकिलाब

आस्तान-ए-देव इस्तिब्दाद पर  
झुक नहीं सकती जबीन-ए-इकिलाब  
आसमान के जोर से जो तंग हूँ  
इन का अमन है जमीन-ए-इकिलाब  
है शहीदान-ए-वतन की याद में  
खून से तर आस्तीन-ए-इकिलाब  
साहिब-ए-खिरमन हैं दुनिया में वही  
जो रहे हैं खूशाचीन-ए-इकिलाब  
जाम-ए-जहराब-ए-कदामत छोड़ कर  
हम पियेंगे अंगबी-ए-इकिलाब  
है गुलामों का खुदा अजम-ए-बुलन्द  
दीन मजलूमों का दीन इकिलाब  
ऐ कदामत केश तू भी तो बदल  
है अगर तुझको यकीन-ए-इकिलाब

स्रोत:

पुस्तक: हफ्त रंग (पृष्ठ 41)

रचनाकार: अर्श मलसियानी



عرشِ ملیانی

۱۹۰۸-۱۹۷۹

## انقلاب

آستانِ دیوِ استبداد پر  
جنگِ نہیں سکتی جبین انقلاب  
آسمان کے جور سے جو ننگ ہوں  
ان کا امن ہے زمین انقلاب  
ہے شیدانِ وطن کی یاد میں  
خون سے تر آستین انقلاب  
صاحبِ خرمن ہیں دنیا میں وہی  
جو رہے ہیں خوش چمن انقلاب  
جامِ زہرابِ قدامت چھوڑ کر  
ہم پئیں گے انگین انقلاب  
ہے غلاموں کا خدا عزم بلند  
دینِ مظلوموں کا دین انقلاب  
اے قدامت کیش تو بھی تو بدل  
ہے اگر تجھ کو یقین انقلاب

ماخذ:-

کتاب:- ہفت رنگ (ص-۳۱)

مصنف:- عرشِ ملیانی



मखदूम मुहीउद्दीन

1908-1969

जंग

निकले दहान-ए-तोप से बरबादियों के राग

बाग-ए-जहाँ में फँल गईं दोजखों की आग

क्यों टिमटिमा रही हैं यह फिर शमा-ए-जिन्दगी

फिर क्यों निगार-ए-हक पे हैं आसार-ए-बेवगी

इफरीत-ए-सीम-ओ-जर के कलेजे में क्यों है फ़ाँस

क्यों रुक रही है सीने में तहजीब-ए-नौ की साँस

अमन-ओ-अमों की नब्ज छुटी जा रही है क्यों ?

बालीन जीस्त आज अजल गा रही है क्यों ?

अब दुल्हनों से छीन लिया जाएगा सुहाग

अब अपने आँसुओं से बुझाएँ वह दिल की आग

बरबत नवाज-ए-बज्म-ए-उलूही इधर तो आ !

दावत दह-ए-पयाम-ए-उबूदी इधर तो आ !

इंसानियत के खून की अर्जानियाँ तो देख

इस आसमान वाले की बेदादियाँ तो देख

मासूम-ए-हयात की बेचावरी तो देख

दस्त-ए-हवस से हुस्न की ग़ारत गरी तो देख

खुद अपनी जिंदगी पे पशेमाँ है जिंदगी

कुर्बानि गाह-ए- मौत पे रक्साँ है जिंदगी

इंसान रह सके कोई ऐसा जहाँ भी है

इस फ़ितना जा ज़मी का कोई पासबाँ भी है

ओ आफ़ताब-ए-रहमत-ए-दौराँ तुलू हो

ओ अंजुम-ए-हमीयत-ए-यज्दाँ तुलू हो

स्त्रोत:

पुस्तक: विसात-ए-रक्स (पृष्ठ 52)

रचनाकार: मख़दूम मुहीउद्दीन



مخدوم محی الدین

۱۹۶۹ - ۱۹۰۸

## جنگ

نکلے دہان توپ سے بربادیوں کے راگ  
باغ جہاں میں پھیل گئی دوزخوں کی آگ  
کیوں ٹھنپا رہی ہے یہ پھر شمع زندگی  
پھر کیوں نکار حق پہ ہیں آثار بیوگی  
عفريت سم و کے کلیجے میں کیوں ہے پھانس  
کیوں رک رہی ہے سینے میں تہذیب نو کی سانس  
امن و اماں کی نبض چھٹی جا رہی ہے کیوں؟  
باہین زلیت آج اجل گا رہی ہے کیوں؟

اب دہنوں سے چھین لیا جائے گا سہاگ  
اب اپنے آنسوؤں سے بھجائیں وہ دل کی آگ

برہٹ نواز بزم الوہی ادھر تو آ

دعوت وہ پیام عبودی ادھر تو آ

انسانیت کے خون کی ارزائیاں تو دیکھ

اس کی آسمان والے کی بیدادیاں تو دیکھ

معصومہ حیات کی بے چارگی تو دیکھ

دست ہوس سے حسن کی غارتگری تو دیکھ

خود اپنی زندگی پہ پشیمیاں ہے زندگی

قربان گاہ موت پہ رقصاں ہے زندگی

انسان رہ سکے کوئی ایسا جہاں بھی ہے

اس فتنہ زا زمیں کا کوئی پاساں بھی ہے

او آفتاب رحمت دوراں طلوع ہو

او انجم حمیت یزداں طلوع ہو

ماخذ:-

کتاب:- بساطِ رقص (ص-۵۲)

مصنف:- مخدوم محی الدین



मखदूम मुहीउद्दीन  
1908-1969

## आज़ादी-ए-वतन

कहाँ हिन्दोस्तॉ की जय

कहाँ हिन्दोस्तॉ की जय

कसम है खून से सींचे हुए रंगी गुलिस्तॉ की

कसम है खून-ए-दहकॉ की कसम खून-ए-शहीदॉ की

ये मुमकिन है कि दुनिया के समुंदर खुशक हो जाएँ

ये मुमकिन है कि दरिया बहते बहते थक के सो जाएँ

जलाना छोड़ दें दोजख के अंगारे ये मुमकिन है

रवानी तर्क कर दें बर्क के धारे ये मुमकिन है

जमीन-ए-पाक अब नापाकियों को ढो नहीं सकती

वतन की शम्-ए-आज़ादी कभी गुल हो नहीं सकती

कहाँ हिन्दोस्तॉ की जय

कहाँ हिन्दोस्तॉ की जय



वो हिन्दी नाँजवाँ यानी अलम-बरदार-ए-आजादी  
वतन की पासबाँ वो तेग-ए-जाँहर-दार-ए-आजादी  
वो पाकीजा शरारा बिजलियों ने जिस को धोया है  
वो अँगारा कि जिस में जीस्त ने खुद को समोया है  
वो शम्-ए-जिंदगानी आँधियों ने जिस को पाला है  
इक ऐसी नाव तूफानों ने खुद जिस को सँभाला है  
वो ठोकर जिस से गीती लर्जा-बर-अदाम रहती है  
वो धारा जिस के सीने पर अमल की नाव बहती है  
छुपी खामोश आहें शोर-ए-महशर बन के निकली है  
दबी चिंगारियाँ खुशीद-ए-खावर बन के निकली है  
बदल दी नाँजवान-ए-हिन्द ने तकदीर जिंदाँ की  
मुजाहिद की नजर से कट गई जंजीर जिंदाँ की

कहो हिन्दोस्ताँ की जय

कहो हिन्दोस्ताँ की जय

कहो हिन्दोस्ताँ की जय.....

स्रोत:

पुस्तक: बिसात-ए-रक्स (पृष्ठ-64)

रचनाकार: मखदूम मुहीउद्दीन



مخدوم محی الدین

۱۹۶۹ - ۱۹۰۸

## آزادی وطن

کہو بندوستان کی ہے  
کہو بندوستان کی ہے  
قسم ہے خون سے سینچے ہوئے رنگیں گلستاں کی  
قسم ہے خون دہتاں کی قسم خون شہیداں کی  
یہ ممکن ہے کہ دنیا کے سمندر خشک ہو جائیں  
یہ ممکن ہے کہ دریا بہتے بہتے تھک کے سو جائیں  
جلانا چھوڑ دیں دوزخ کے انگارے یہ ممکن ہے  
روانی ترک کر دیں برق کے دھارے یہ ممکن ہے  
زمین پاک اب ناپاکیوں کو دعو نہیں سکتی  
وطن کی شمع آزادی کبھی گل ہو نہیں سکتی

کہو بندوستان کی ہے

کہو بندوستان کی ہے

وہ ہندی نوجوان یعنی طلہبردار آزادی

وطن کی پاساں وہ تیغ جوہر دار آزادی

وہ پاکیزہ شرارہ بکلیوں نے جس کو دھویا ہے

وہ انگارہ کہ جس میں زیست نے خود کو سمویا ہے

وہ شمع زندگانی آندھیوں نے جس کو پالا ہے

اک ایسی ناؤ طوفانوں نے خود جس کو سنبھالا ہے

وہ ٹھوکر جس سے گیتی لرزہ بر اندام رہتی ہے

وہ دھارا جس کے سینے پر عمل کی ناؤ بہتی ہے

چچی خاموش آہیں شور محشر بن کے نکلی ہیں

دہلی چنگاریاں خورشید خاور بن کے نکلی ہیں

بدل دی نوجوان ہند نے تقدیر زنداں کی

مجاہد کی نظر سے کٹ گئی زنجیر زنداں کی

کہو ہندوستان کی ہے

کہو ہندوستان کی ہے

کہو ہندوستان کی ہے.....

ماخذ:-

کتاب:- بسلی رقص (ص ۶۳-)

مصنف:- مخدوم محی الدین



वामिक जौनपुरी  
1909-1998

### जिन्दों

यह ऊँची ऊँची दीवारें

यह जंजीरों की झंकारें

गोली के यह चलने की सन सन

फँला हुआ अग्नि का दामन

किस जुर्म की हैं ये पादाशों

क्यों लोटती फिरती हैं लाशों

इस जुल्म की कोई हद भी है

आखिर इसका कोई रद भी है

यह ऊँची ऊँची दीवारें

यह जंजीरों की झंकारें

बहती हैं यहाँ उल्टी गंगा

नाँकर चंगा मालिक नंगा

खानों का लोहे की थाली

गन्दी गन्दी काली काली

खुंखवार निगाहों की साजिश

पीठों पर कोखों की बारिश

हाथों में चक्की के छाले  
हर साँस पे जीने के लाले  
कदगन है लबों के हिलने पर  
पाबन्दियाँ आखें मिलने पर

यह ऊँची ऊँची दीवारें  
यह जंजीरों की झंकारें  
छुप छुप के ये मिलना आपस में  
फनकते हुए दिल किस के बस में  
खामांश नजर के जयकारे  
ये जयकार ये अंगारे  
इक रोज कयामत ढायेंगे  
बे नाम-ओ-निशाँ कर जायेंगे

यह ऊँची ऊँची दीवारें  
यह जंजीरों की झंकारें

स्रोत:  
पुस्तक: जर्स (पृष्ठ 131)  
रचनाकार: वामिक जौनपुरी



داتق جو پوری

۱۹۹۸ - ۱۹۰۹

### زنداد

دیواریں اوچی اوچی یہ  
 جھنکاریں کی زنجیروں یہ  
 گولی کے یہ چلنے کی سن سن  
 پھیلا ہوا اگنی کا دامن  
 کس جرم کی ہیں یہ پاداشیں  
 کیوں لوتی پھرتی ہیں لاشیں  
 اس ظلم کی کوئی حد بھی ہے  
 آخر اس کا کوئی رد بھی ہے

دیواریں اوچی اوچی یہ  
 جھنکاریں کی زنجیروں یہ  
 بیتی ہے یہاں الٹی گونگا  
 نوکر چاکر مالک بنگا  
 کھانے کو لوہے کی تھالی  
 گندی گندی کالی کالی  
 خونخوار نگاہوں کی سازش

ہٹھوں پر کوڑوں کی بارش  
ہاتھوں میں پگلی کے چھالے  
ہر سانس پہ سینے کے لالے  
قدغن ہے لبوں کے ہٹنے پہ  
پاندیاں آنکھیں ملنے پہ

یہ اوپچی اوپچی دیواریں  
یہ زنجیروں کی جھنکاریں

چھپ چھپ کے یہ ملنا آپس میں  
پھٹکتے ہوئے دل کس کے بس میں  
ناموش نظر کے ہے کارے  
یہ ہے کارے یہ انگارے  
اک روز قیامت ڈھائیں گے  
بے نام و نشان کر جائیں گے

یہ اوپچی اوپچی دیواریں  
یہ زنجیروں کی جھنکاریں

ماخذ:-

کتاب:- جرس (ص-۱۳۱)

مصنف:- واقعہ جوئیوری



नजीर बनारसी  
1909-1996

### सर स्टीफर्ड क्रिप्स के नाम

बन के गद्दार आज तुम से इक गुलाम इब्न-ए-गुलाम  
नज़्म के पर्दे में छुपकर हो रहा है हम कलाम  
आज लंदन से मनाने को चलें आते हो क्यों  
अब तुम्हारे सर पे आई है तो चिल्लाते हो क्यों  
तुम को तो मालूम है मुद्दत से तारी है जमूद  
फिर हमारा तजकिरा क्या फिर हमारी क्या नमूद  
हम भी अफसुर्दा हैं अफसुर्दा दिली जज़्बात भी  
जंग के बारे में सुन सकते नहीं इक बात भी  
याद कर लो देखा कर तारीखा के खुनी वरक  
अब जमाना देने वाला है तुम्हें भी वह सबक  
नन्द को फाँसी के तरुते पर चढ़ाया किसने था  
लपज आजादी पे रहमत खाँ को मारा किसने था  
जब खुलीं आँखों न अख़तर का जनाजा देखाकर  
जब न गरमाया लहू टीपू का लाशा देखाकर  
तश्त में जब रख करके तुम छोटें बड़ें सर लाए थे  
जब जफर के सामने डाली लगा कर लाए थे  
बरहना कर करके जब तैगों से तुम करते थे बात  
जब उतारें जा रहें थे बंगमों के जेवरात  
हर गली कूचें में जब लटकी हुई थीं फासियाँ



उफ भी कर सकती न थी जब हिन्द वालों की जबाँ  
तुम थे जब बचपन जल्लादी की भाँहरत के लिए  
जब अमर की लाश लटकाई थी इब्रत के लिए  
आप के बे दस्त-ओ-पा जब भी खाड़े सोचा किये  
लुटने वाला लुट रहा था और हम देखा किये  
खून में डूबी जवानी का न बदला ले सके  
तुम से हम झाँसी की रानी का न बदला ले सके  
जब इजाफा कर रहे थे तुम जिगर के दाग में  
गोलियाँ चलती थी जब जलियाँ वाला बाग में  
नन्हें बच्चों पर भी जब बरसा रहे थे गोलियाँ  
जब भी हम खामोश थे खामोश थी सब की जबाँ

जब न जोश आया तो अब किस तरह जोश आ जाएगा  
तुम ही समझो आज भी हम से न समझा जाएगा  
कल थे कमजोर आज ताकत किस तरह आ जाएगी  
जब न आई अब शुजाअत किस तरह आ जाएगी  
हर जमाने में रहा हो जिसका खामोशी उसूल  
एसे बुद्धिदल से उम्मीद-ए-सरफरोशी है फिजूल  
जब भी हम खामोश थे और आज भी खामोश हैं  
हाँ मगर उस वक्त थे ब्रहोँश अब बाहोँश हैं

वैसे गद्दार और गद्दारों के अफसर अब नहीं  
मीर कासिम, मीर सादिक मीर जाफर अब नहीं  
ताप से भी खून-ए-मशिरक गर्म हो सकता नहीं  
आँच खाकर भी यह लोहा नर्म हो सकता नहीं

स्रोत:

पुस्तक: जवाहर से लाल तक (पृष्ठ 30)

रचनाकार: नजीर बनारसी



نذیر بھٹائی

۱۹۹۶-۱۹۰۹

### سراسینفورڈ کراپس کے نام

بن کے غدار آج تم سے اک غلام این غلام  
لطم کے پردے میں چھپ کر ہو رہا ہے ہم کلام  
آج لندن سے منانے کو چلے آتے ہو کیوں  
اب تمہارے سر پہ آئی ہے تو چلاتے ہو کیوں  
تم کو تو معلوم ہے مدت سے طاری ہے جمود  
پھر ہمارا تذکرہ کیا پھر ہماری کیا نمود  
ہم بھی افسردہ ہیں افسردہ دلی جذبات بھی  
جنگ کے بارے میں سن سکتے نہیں اک بات بھی  
یاد کر لو دیکھ کر تاریخ کے خوئی درق  
اب زمانہ دینے والا ہے تمہیں بھی وہ سبق  
پہلے کو پھانسی کے تختے پر پڑھایا کس نے تھا  
لفظ آزادی پر رحمت خاں کو مارا کسی نے تھا  
جب تھلیں آنکھیں نہ احمق کا جنازہ دیکھ کر  
جب نہ گرمایا ابو موپ کا لاشہ دیکھ کر  
طشت میں جب رکھ کے تم چھوٹے بڑے سر لائے تھے  
جب طمہ کے سامنے ڈالی لگا کر لائے تھے  
برہنہ کر کے جب تینوں تے تم کرتے تھے بات  
جب اتارے جا رہے تھے بیگوں کے زیورات  
ہر گلی کوچے میں جب لگی ہوئی تھیں پھانسیاں

اف بھی کر سکتی نہ تھی جب ہند والوں کی زباں  
 تم تھے جب بچپن حلاوتی کی شہرت کے لئے  
 جب امر کی لاش لٹکائی تھی عبرت کے لیے  
 آپ کے بے دست و پا جب بھی کھڑے سوچا کئے  
 لئے والا لٹ رہا تھا اور ہم دیکھا کئے  
 خون میں ڈوبی جوانی کا نہ بدل لے سکے  
 تم سے ہم جھانسی کی رانی کا نہ بدل لے سکے  
 جب اضافہ کر رہے تھے تم جگر کے داغ میں  
 گولیاں چلتی تھیں جب جلیان والا باغ میں  
 ننھے بچوں پر بھی جب برس رہے تھے گولیاں  
 جب بھی ہم خاموش تھے خاموش تھی سب کی زباں  
 جب نہ جوش آیا تو اب کس طرح جوش آجائے گا  
 تم ہی سمجھو آج بھی ہم سے نہ سمجھا جائے گا  
 کل تھے کمزور آج طاقت کس طرح آجائے گی  
 جب نہ آئی اب شجاعت کس طرح آجائے گی  
 ہر زمانے میں رہا ہو جس کا خاموشی اصول  
 ایسے بزدل سے امیر سرفروشی ہے فضول  
 جب بھی ہم خاموش تھے اور آج بھی خاموش ہیں  
 ہاں مگر اس وقت تھے بیہوش اب باہوش ہیں  
 ویسے نڈار اور نڈاروں کے افسر اب نہیں  
 میر قاسم، میر صادق، میر جعفر اب نہیں  
 توپ سے بھی خون مشرق گرم ہو سکتا نہیں  
 آج کھا کر بھی یہ لوہا نرم ہو سکتا نہیں

ماخذ:-

کتاب:- جواہر سے لال تک (ص- ۳۰)

مصنف:- نذیر بٹارسی



फ़ैज़ अहमद फ़ैज़  
1911-1984

### तसल्ली

चंद रोज़ और मेरी जान फ़क़त चंद ही रोज़

जुल्म की छाओं में दम लेने पे मजबूर हैं हम

और कुछ देर सितम सह लें तड़प लें रो लें

अपने अजदाद की मीरास है माजूर है हम

जिस्म पर क़ैद है जज़्बात पे जंजीरें हैं

फ़िक्र महबूस हैं गिरफ़्तार पे ताजीरें हैं

अपनी हिम्मत है कि हम फिर भी जिये जाते हैं

ज़िन्दगी क्या किसी मुफ़िलस की कबा है जिसमें

हर घाड़ी दर्द के पंख़न्द लगे जाते हैं

लेकिन अब जुल्म की मीआद के दिन थोड़े हैं

इक जरा सब्र ! कि फर्याद के दिन थोड़े हैं

अर्सा-ए-दहर की झुलसी हुई वीरानी में

हमको रहना है पे यूँ ही तो नहीं रहना है

अजनबी हाथों का बेनाम गरौँबार सितम

आज सहना है हमेशा तो नहीं सहना है

यह तरे हुस्न से लिपटी हुई आराम की गर्द

अपनी दोरोजा जवानी की शिकस्तों का शुमार

चाँदनी रातों का बेकार दहकता हुआ दर्द

दिल की बेसूद तड़प जिस्म की मायूस पुकार

चंद रोज़ और मेरी जान फ़क़त चंद ही रोज़

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 245)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



فیض احمد فیض

۱۹۸۳ - ۱۹۱۱

## تسلی

چند روز اور میری جان فقط چند ہی روز

ظلم کی چھاؤں میں دم لینے پہ مجبور ہیں ہم

اور کچھ دیر ستم سے لیں تڑپ لیں رو لیں

اپنے اجداد کی میراث ہے معزور ہیں ہم

جسم پر قید ہے جذبات پہ زنجیریں ہیں

فکر محبوس ہے گرفتار پہ تعزیریں ہیں

اپنی ہمت ہے کہ ہم پھر بھی جئے جاتے ہیں

زندگی کیا کسی مفلس کی قبا ہے جس میں

ہر گھڑی درد کے پیوند لگے جاتے ہیں

لیکن اب ظلم کی میعاد کے دن تھوڑے ہیں  
اک ذرا صبر! کہ فریاد کے دن تھوڑے ہیں  
عرصہ دہر کی مجلسی ہوئی ویرانی میں  
ہم کو رہنا ہے پہ یوں ہی تو نہیں رہنا ہے  
اجنبی ہاتھوں کا بے نام گراں بار ستم  
آج سہنا ہے ہمیشہ تو نہیں سہنا ہے  
یہ تیرے حسن سے لپٹی ہوئی آرام کی گرد  
اپنی دو روزہ جوانی کی شکستوں کا شمار  
چاندنی راتوں کا پیکار دکھتا ہوا درد  
دل کی بے سود تڑپ جسم کی مایوس پکار  
چند روز اور میری جان فقط چند ہی روز

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص-۲۳۵)

مصنف:- علی جوادی



फैज अहमद फैज  
1911-1984

### बोल

बोल कि लब आजाद है तेरे  
बोल जबाँ अब तक तेरी है  
तेरा सुत्वाँ जिस्म है तेरा  
बोल कि जाँ अब तक तेरी है  
देख कि आहन-गर की दुकाँ में  
तुँद है शाले सुर्खा है आहन  
खुलने लगे कुपलों के दहाने  
फैला हर इक जजीर का दामन  
बोल ये थोड़ा वक्त बहुत है  
जिस्म ओ जबाँ की मौत से पहले  
बोल कि सच जिंदा है अब तक  
बोल जो कुछ कहना है कह ले

स्रोत:

पुस्तक: नुस्खा हाय वफा (पृष्ठ 81)

रचनाकार: फैज अहमद फैज





فیض احمد فیض

۱۹۸۴ - ۱۹۱۱

## بول

بول کہ لب آزاد ہیں تیرے  
بول زباں اب تک تیری ہے  
تیرا شتواں جسم ہے تیرا  
بول کہ جاں اب تک تیری ہے  
دیکھ کہ آہن گمر کی دکان میں  
سیدہ ہیں شعلے سرخ ہے آہن  
کھلے گے قفلوں کے وہانے  
پھیلا ہر اک زنجیر کا دامن  
بول یہ تھوڑا وقت بہت ہے  
جسم و زباں کی موت سے پہلے  
بول کہ سچ زندہ ہے اب تک  
بول جو کچھ کہنا ہے کہ لے

ماخذ:-

کتاب:- نسخہ ہائے وفا (ص-۸۱)

مصنف:- فیض احمد فیض



असरार -उल-हक मजाज़  
1911-1955

### नौ-जवानों से

जलाल-ए-आतिश-ओ-बर्क-ओ-सहाब पैदा कर  
अजल भी काँप उठे वो शबाब पैदा कर

तेरे खिराम में है जलजलों का राज निहाँ  
हर एक गाम पे इक इकिलाब पैदा कर

सदा-ए-तेशा-ए-मजदूर है तेरा नरमा  
तू संग-ओ-खिशत से चंग-ओ-रबाब पैदा कर

बहुत लतीफ है ऐ दोस्त तेग का बाँसा  
यही है जान-ए-जहाँ इस में आब पैदा कर

तेरे कदम पे नजर आए महफिल-ए-अंजुम  
वो बाँकपन वो अछूता शबाब पैदा कर

तेरा शबाब अमानत है सारी दुनिया की  
तू खार-जार-ए-जहाँ में गुलाब पैदा कर

सुकून-ए-खाक है बे-दस्त-ओ-पा जईफी का  
तू इज़ितराब है खुद इज़ितराब पैदा कर

न देख जोहद की तू इस्मत-ए-गुनाह-आलूद  
गुनाह में फितरत-ए-इस्मत-मआब पैदा कर

तैरे जिलों में नई जत्रतें नए दोज खा  
नई जजाएँ अनाखो अजाब पैदा कर

शाराब खीची है सब नें गरीब के खूँ से  
तू अब अमीर के खूँ से शाराब पैदा कर

गिरा दे किस्-ए-तमददुन कि इक फरेब है ये  
उठा दे रस्म-ए-मोहब्बत अजाब पैदा कर

जो हाँ सके हमें पामाल कर के आगे बढ़  
जो हाँ सके तो हमारा जवाब पैदा कर

बहे जमीं पे जो मेरा लहू तो गम मत कर  
इसी जमीं से महकते गुलाब पैदा कर

तू इकिलाब की आमद का इतिजार न कर  
जो हाँ सके तो अभी इकिलाब पैदा कर

स्रोत:

पुस्तक: कुल्लियात-ए-मजाज (पृष्ठ 129)

रचनाकार: असरार -उल-हक मजाज



اسرار الحق مجاز

۱۹۵۵ - ۱۹۱۱

### نوجوان سے

جلال آتش و برق و سحاب پیدا کر  
اجل بھی کانپ اٹھے وہ شباب پیدا کر

ترے خرام میں ہے زلزلوں کا راز نہاں  
ہر ایک گام پر اک انقلاب پیدا کر

صدائے مستحکم مزدور ہے ترا نغمہ  
تو سنگ و خشت سے چنگ و رباب پیدا کر

بہت لطیف ہے اے دوست تیغ کا بوسہ  
یہی ہے جان جہاں اس میں آپ پیدا کر

ترے قدم پہ نظر آئے مہفلِ انجم  
وہ بانگین وہ اچھوتا شباب پیدا کر

ترا شباب امانت ہے ساری دنیا کی  
تو خار زار جہاں میں گلاب پیدا کر

سکون خواب ہے بے دست و پا ضعیفی کا  
تو اضطراب ہے خود اضطراب پیدا کر

نہ دیکھ زہد کی تو عصمت گند آلود  
گند میں فطرت عصمت مآب پیدا کر

ترے جلو میں نئی جنتیں نئے دوزخ  
نئی جزائیں انوکھے عذاب پیدا کر

شراب کھینچی ہے سب نے غریب کے خوں سے  
تو اب امیر کے خوں سے شراب پیدا کر

گرا دے قصر تمدن کہ اک فریب ہے یہ  
انھا دنے رسم محبت عذاب پیدا کر

جو ہو سکے ہمیں پامال کر کے آگے بڑھ  
جو ہو سکے تو ہمارا جواب پیدا کر

بچے زمیں پہ جو میرا لبو تو غم مت کر  
اسی زمیں سے مہکتے گلاب پیدا کر

تو انقلاب کی آمد کا انتظار نہ کر  
جو ہو سکے تو ابھی انقلاب پیدا کر

ماخذ:-

کتاب:- کلیت مجاز (ص-۱۲۹)

مصنف:- اسرار الحق مجاز



मोइन एहसन जज़्बी  
1912-2005

## ऐ काश

शुगल मय करता, पर ऐ काश न होता महसूस  
तल्खी-ए-जहर भी तल्खी-ए-मय नाब में है  
छेड़ता साज पर आगह न होता ऐ काश  
इक शरारा सा भी हर जुबिश-ए-मिज़्बाब में है  
काश दरिया कि खमोशी से न आती आवाज  
इक तलातुम सा भी हर मौज तह-ए-आब में हैं  
अब-ए-नीसों का बुरा हो न बताता ऐ काश  
आबरू नाम की, हर गौहर-ए-नायाब में हैं  
चाँदनी रातों में यह इल्म न होता ऐ काश  
दाग-ए-दरयूज़ागरी सीना-ए-महताब में है  
महफिल-ए-ऐश में ऐ काश न होता वाकिफ़  
किस कदर रंग-ए-वफ़ा फितरत-ए-अहबाब में है  
काश कहती न यह मजदूर की गुलरंग नजर  
हसरत-ए-ख़वाब अभी दीद-ए-बेख़वाब में है

काश मुपिलस के तबस्सुम से न चलता यह पता

कितने फाकों की सकत गैरत-ए-बेताब में है  
काश ताँपों की गरज में न सुनाई देता  
जज्बा-ए-गैरत-ए-मजलूम अभी ख़वाब में है  
काश उमड़ते हुए अशकों से न होता जाहिर  
इक क़यामत सी दिल-ए-शायर-ए-बेताब में है

(1938)

स्रोत:

पुस्तक: कुल्लियात जज्बी (पृष्ठ 106)

रचनाकार: मोइन एहसन जज्बी



معین احسن جذبئی

۱۹۱۲ - ۲۰۰۵

## اے کاش

شغل مئے کرتا، پر اے کاش نہ ہوتا محسوس  
مخلو زہر بھی مئے ناب میں ہے  
چھیرنا ساز پر آگاہ نہ ہوتا اے کاش  
اک شرارہ سا بھی ہر جنبش مضراب میں ہے  
کاش دریا کہ خاموشی سے نہ آتی آواز  
اک سلاطم سا بھی ہر موج تہہ آب میں ہے  
ابر نیساں کا برا ہو نہ بتاتا اے کاش  
آبرو نام کی، ہر گوہر نایاب میں ہے  
پائنتی راتوں میں یہ علم نہ ہوتا اے کاش  
داغ دریوزہ گرمی سینہ مہتاب میں ہے

مخفل عیش میں اے کاش نہ ہوتا واقف  
کس قدر رنگ وفا فطرت احباب میں ہے  
کاش کہتی نہ یہ مزدور کی گھرنگ نظر  
حسرت خواب ابھی دیدہ بے خواب میں ہے

کاش مفلس کے تبسم سے نہ چلتا یہ پتا

کتنے فاتحوں کی سکت غیرت پنجاب میں ہے

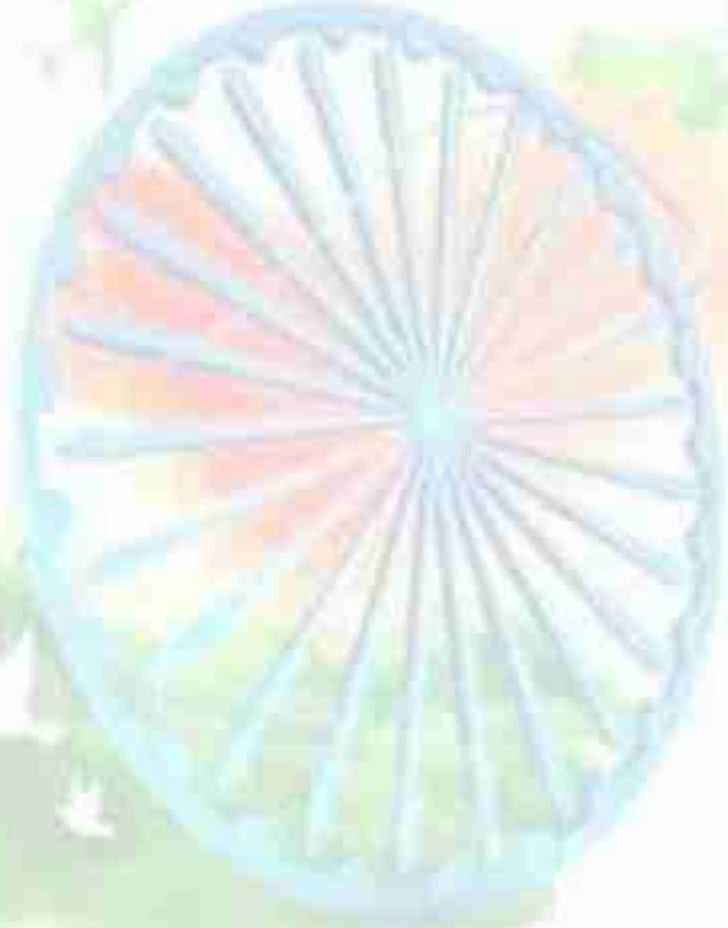
کاش توپوں کی گرج میں نہ سنائی دیتی



جذبہ غیرت مظلوم ابھی خواب میں ہے

کاش امنڈتے ہوئے اشکوں سے نہ ہوتا ظاہر

اک قیامت سی دل شاعر پنجاب میں ہے



ماخذ:-

کتاب:- کلیت جذبہ (ص-۱۰۶)

مصنف:- معین احسن جذبہ



सय्यद एहतिशाम हुसैन  
1912-1972

## यह निजाम-ए-कुहना

हम नशी खटकी तो होगी तुझको भी यह एक बात  
कब से घरे है निजाम-ए-कुहना की तारीक रात  
इस शब-ए-तारीक की आगोश में है वह जहाँ  
जिस जगह उडती हैं अदल-ओ-हुरियत की धज्जियाँ  
रूपया से रात दिन चलता है जिसका कारोबार  
सीम-ओ-जर से जिस जगह होते हैं रिश्ते उस्तवार  
दाम लगते हैं जबानी जिस जगह आमाल के  
जिस जगह चलते हैं सिक्के तक जईफ अकवाल के  
जिस जगह मुफिलस खड़े हैं कारवाँ दर कारवाँ  
हुक्मरौं हैं जिस जगह जरदार की अय्यारियाँ  
जिस जगह इंसानियत का हाल है जार-ओ-जबूँ  
चूसता है जिस जगह इंसान खुद इंसों का खूँ  
जिस जगह कानून के डर से जबों हिलती नहीं  
जिस जगह बीमार मुफिलस को दवा मिलती नहीं  
जिस जगह बेकार अमीरों की चमकती है जबी  
जिस जगह मेहनत का फल मजदूर को मिलता नहीं  
जिस जगह आगे निकलना है दलील-ए-गुमरही  
जिस जगह तारीख दोहराती है अफसाना वही  
फितरत-ए-इंसान जिस जा रोशनी पाती नहीं  
जिस जगह इल्म-ओ-अदब में ताजगी आती नहीं  
नौजवानों को जहाँ मिलती नहीं बढ़ने की राह

जिस जगह तर्क-ए-मरासिम को समझते हैं गुनाह  
जिस जगह हर लम्हा पाबंदी है अहल-ए-होश पर  
मय्यत-ए-तहजीब है खुद गर्जियों के दोश पर  
हैं जहाँगीरी जहाँ जम्हूरियत के भेस में  
जंग अपने वास्ते है दूसरों के देस में  
आ गया वह वक्त खुद हो अपनी हस्ती से खजिल  
यह निजाम-ए-कुहना बुनियादें हैं जिसकी मुजमहिल  
उसकी बुनियादों पे तेशा मारने की देर है  
नौजवाँ तैयार हैं ललकारने की देर है  
मुल्क पर गैरों का डेशा खत्म होता ही नहीं  
क्या कयामत है अंधेरा खत्म होता ही नहीं  
ताक़त-ए-परवाज़ है और आशियाँ पर क़ैद है  
हौसले बेदार हैं लेकिन ज़बों पर क़ैद है  
वक्त की आवाज़ है हम को उभरना चाहिए  
इस तज़ाद-ए-ज़िंदगी को खत्म करना चाहिए  
जिसने रोंका है तरक्की से यही जंजीर है  
इस निजाम-ए-कुहना की तख़रीब भी तामीर है

(1939)

स्त्रोत:

पुस्तक: रौशनी के दरीचे (पृष्ठ 109)

रचनाकार: सय्यद एहतिशाम हुसैन



سید احتشام حسین

۱۹۷۲ - ۱۹۱۲

### یہ نظام کہہ نہ

ہم نشیں کھنکی تو ہوگی تجھ کو بھی یہ ایک بات  
کب سے گھیرے ہے نظام کہنہ کی تاریک رات  
اس شب تاریک کی آغوش میں ہے وہ جہاں  
جس جگہ اڑتی ہیں عدل و حریت کی دھجیاں  
روپیہ سے رات دن چلتا ہے جس کا کاروبار  
سیم و زر سے جس جگہ ہوتے ہیں رشتے استوار  
دام لگتے ہیں زہانی جس جگہ اعمال کے  
جس جگہ چلتے ہیں گئے تک ضعیف اقوال کے  
جس جگہ مفلس کھڑے ہیں کارواں در کارواں  
حکراں ہیں جس جگہ زردار کی عیاریاں  
جس جگہ انسانیت کا حال ہے زار و زبوں  
پہتا ہے جس جگہ انسان خود انساں کا خوں  
جس جگہ قانون کے ڈر سے زہاں ملتی نہیں  
جس جگہ بیمار مفلس کو دوا ملتی نہیں  
جس جگہ امیروں کی چمکتی ہے جبین  
جس جگہ محنت کا پھل مزدور کو ملتا نہیں  
جس جگہ آگے نکلنا ہے دلیل گمراہی  
جس جگہ تاریخ دہراتی ہے افسانہ وہی  
فطرت انسان جس جا روشنی پاتی نہیں  
جس جگہ علم و ادب میں تازگی آتی نہیں  
نوجوانوں کو جہاں ملتی نہیں بڑھنے کی راہ

جس جگہ ترک مراسم کو سمجھتے ہیں گناہ  
 جس جگہ ہر لمحہ پابندی ہے اہل ہوش پر  
 میت تہذیب ہے خود غرضیوں کے دوش پر  
 ہے جہانگیری جہاں جمہوریت کے بجیس میں  
 جنگ اپنے واسطے ہے دوسروں کے دلیس میں  
 آ گیا وہ وقت خود ہو اپنی ہستی سے نکل  
 یہ نظام کہہ بنیادیں ہیں جس کی منہج  
 اس کی بنیادوں پہ تیشہ مارنے کی دیر ہے  
 فوجوں تیار ہیں لاکارنے کی دیر ہے  
 ملک پر غیروں کا ڈیرا ختم ہوتا ہی نہیں  
 کیا قیامت ہے اندھیرا ختم ہوتا ہی نہیں  
 طاقت پرواز ہے اور آشیاں پر قید ہے  
 حوصلے بیدار ہیں لیکن زباں پر قید ہے  
 وقت کی آواز ہے ہم کو ابھرنا چاہئے  
 اس تضاد زندگی کو ختم کرنا چاہئے  
 جس نے روکا ہے ترقی سے یہی زنجیر ہے  
 اس نظام کہہ کی تخریب بھی تعمیر ہے

(۱۹۳۹)

ماخذ:-

کتاب:- روشنی کے دریچے (ص-۱۰۹)

مصنف:- سید احتشام حسین

دزیدی



शमीम किरहानी

1913-1975

### कुछ देर ज़रा सो लेने दो

तुम जेल जिसे ले जाते हो वह दर्द का मारा है देखो  
मज़लूम, अहिंसा का हामी, बेबस दुखियारा है देखो  
बेचैन सा उसकी आँखों में पिछले का सितारा है देखो

कुछ देर ज़रा सो लेने दो

आया है अमल की वादी से दिन भर का थका मांदा हारा  
अफकार के काँटों का छेड़ा, आराम की आँधी का मारा  
वह जलती रेग थी सहारा की, लेटा है अभी दुखियारा

कुछ देर ज़रा सो लेने दो

कुछ खाक पड़ी है माथे पर, कुछ गर्द जमी है बालों में  
तशवी श की नीली किरनें हैं, संवलाए हुए से गालों में  
ठंडक भी नहीं आने पाई, तलवों के टपकते छालों में

कुछ देर ज़रा सो लेने दो

इफलास के रूख पर आब कहाँ, गुर्बत की नज़र में ताब कहाँ ?  
पलकों में जो भर दो मस्त किस, आकाश पे वह महताब कहाँ ?  
माना कि गुलाम आँखों के लिए, आज़ाद खुशी का ख़ाब कहाँ ?

कुछ देर ज़रा सो लेने दो

जिन्दों की भयानक रातों में ,जो जुलम पड़े सहना होगा  
तूफान-ए-सितम में, टूटी हुई कश्ती की तरह बहना होगा  
आजादा घड़ी की हसरत में, बेख़्वाब सदा रहना होगा

कुछ देर जरा सो लेने दो

हम उसके अजीज सिपाही वह सरदार हमारा है सुन लो  
कुल हिन्द फिदा है उस पर वह कुल हिन्द का प्यारा है सुन लो  
जिस मौज को छेड़ रहे हो तुम, वह आग का धारा है सुन लो

कुछ देर जरा सो लेने दो

हम तुम को बताए देते हैं, एक रोज बहुत पछताओगे  
मज़लूम के हाँवों पर जिस दम, बन्दिश की मुहर लगाओगे  
वह शोज उठेगा हर दिल से, उस शोर में गुम हो जाओगे

कुछ देर जरा सो लेने दो

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 285)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



شمیم کرہانی

۱۹۷۵ - ۱۹۱۳

### کچھ دیر ذرا سو لینے دو

تم نیل جسے لے جاتے ہو وہ درد کا مارا ہے دیکھو  
مظلوم، اہنا کا حامی، بے بس دکھیارا ہے دیکھو  
بے چین سا اس کی آنکھوں میں پچھلے کا ستارا ہے دیکھو

کچھ دیر ذرا سو لینے دو

آیا ہے عمل کی وادی سے دن بھر کا تھکا ماندا ہارا  
انکار کے کائناتوں کا چھیڑا، آلام کی آمدھی کا مارا  
وہ جلتی ریگ تھی صحرا کی، لہلا ہے ابھی یہ دکھیارا

کچھ دیر ذرا سو لینے دو

کچھ خاک پڑھی ہے ماتھے پر، چھ گرد جی ہے بالوں میں  
تشویش کی نیلی ٹکٹیں ہیں، سنولائے ہوئے سے گالوں میں  
ٹھنڈک بھی نہیں آنے پائی تلووں کے چپکتے چھالوں میں

کچھ دیر ذرا سو لینے دو

افلاس کے رُخ پر آب کہاں، غربت کی نظر میں تاب کہاں؟  
پکوں میں جو بھر دے مت کرن، آکاش پہ وہ مہتاب کہاں؟  
مانا کہ قلام آنکھوں کے لیے آزاد خوشی کا خواب کہاں؟

کچھ دیر ذرا سو لینے دو



زندیاں کی بھیانک راتوں میں، جو ظالم پڑے پہتا ہو گا  
طوفان کی ست میں، ٹوٹی ہوئی کشتی کی طرح بہتا ہو گا  
آزاد گھڑی کی حسرت میں بے خواب اسے رہتا ہو گا

کچھ دیر ذرا سو لینے دو

ہم اس کے عزیز سپاہی وہ سردار ہمارا ہے سن لو  
گل ہند ندا ہے اس پر وہ گل ہند کا پیارا ہے ان لو  
جس موج کو چھیڑ رہے ہو تم، وہ آگ کا دھارا ہے سن لو

کچھ دیر ذرا سو لینے دو

ہم تم کو بتائے دیتے ہیں، اک روز بہت چھپتاؤ گے  
مظلوم کے ہونٹوں پر جس دم، بندش کی مہر لگاؤ گے  
وہ شور اٹھے گا ہر دل سے، اس شور میں گم ہو جاؤ گے

کچھ دیر ذرا سو لینے دو

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص-۲۸۵)

مصنف:- علی جواد زیدی



शमीर किरहानी  
1913-1975

### सिपाही का रक्स

गिर के लहू में लाशें नाचें  
दिल की, जिगर की काशें नाचें  
फूटें दिल के छालें फूटें  
खून भरे फव्वारे फूटें

दीवानों सागर ! छलकाओं  
नाचों गाओं, धूम मचाओं

दरिया नाचें, धारें नाचें  
जुगनू नाचें, तारें नाचें  
मक्तल झूमें, कातिल झूमें  
खाजर झूमें, बिस्मिल झूमें

झूमों थिरको, सावन गाओं  
नाचों गाओं, धूम मचाओं

उमड़े फौजों के दल बादल  
जागी खून की प्यासी हलचल  
तारों की पलकें वह झपकीं  
चमकी खान की बूंदें टपकीं

मतवालों, अमृत बरसाओं  
नाचों गाओं, धूम मचाओं

खूनी काला, तूफ़ाँ आया  
बेड़े नाचें, पुल धाराया  
पुल के दामन खून से छलके  
गिर्दाबों में लाशें झलके

अंधाँ, मत आँसू टपकाओ  
नाचो गाओ, धूम मचाओ

हम मतवाले, हम अलबेले  
अपने लहू की हौली खोलें  
और अभी हौला खोलेंगे  
खून का इक दरिया झेलेंगे

वहशत का परचम लहराओ  
नाचो गाओ, धूम मचाओ

(1942)

स्रोत:  
पुस्तक: रौशन अंधेरा (पृष्ठ 36)  
रचनाकार: शमीम किरहानी



شیم کرہانی

۱۹۷۵ - ۱۹۱۳

## سپاہی کار قص

گر کے ابو میں لاشیں ناچیں  
دل کی ، جگر کی قاشیں ناچیں  
پھوٹے دل کے چالے پھوٹے  
خون بھرے قوارے چھوٹے  
دیوانو ! ساغر چھا کا  
ناچے اد ، دھوم مچا  
دریا ناچے ، دھارے ناچے  
جگنو ناچے ، تارے ناچے  
مقتل جھومے ، قاتل جھومے  
خیر جھومے ، بسمل جھومے  
جھومو ، تھر کو، ساون گا  
ناچے گا ، دھوم مچا  
اندے فوجوں کے دل با دل  
جا گی خون کی بیاسی پاپل  
تاروں کی پلکیں وہ چپکیں  
چپکیں خون کی بوندیں نکلیں  
متوالو، امرت  
ناچے گا ، دھوم مچا

خونى کالا ، طوقاں آيا  
 بيڑے ناپے ، ملو آيا  
 ملو کے دامن خون سے چھلکے  
 گروايوں ميں لاشے چھلکے  
 اندھو مت ، آنسو بکاؤ  
 ناچو گا ، دھوم بچاؤ  
 ہم متوا لے ، ہم اپنے  
 اپنے لہو کی ہولی کھیلے  
 اور ابھی ہولی کھیلیں گے  
 خون کا اک دريا تجيلين گے  
 وحشت کا پرچم لہاؤ  
 ناچو گا ، دھوم بچاؤ

(۱۹۴۲)

ماخذ:-

کتاب:- روشن اندھیرا (ص-۳۶)

مصنف:- شمیم کرہانی



अली सरदार जाफरी  
1913-2000

## जंग और इकिलाब

रक्स कर ऐं रूह-ए-आजादी कि रक्सों है हयात  
धूमती है वक्त के महवर पे सारी कायनात  
जिन्दगी मीना-आं-सागर से उबल जाने को है  
कामरानी के नए साँचे में ढल जाने को है  
उड़ रहा है जुल्म-आं-इत्तिबदाद के चेहरे से रंग  
छट रहा है वक्त की तलवार के माथे से जंग  
है फजाओं में नवेद-ए-शादमानी का सुरूर  
पड़ रहा है इशरत-ए-फर्दा की पेशानी पे नूर  
माँत हँस कर देखाती है आइना तलवार में  
जरपरस्ती का सफ़ीना आ गया मंझधार में  
बाहमी नफरत के गोलें जंग की पुरहाँल आग  
पीरजन सरमायादारी कि है बेवा का सुहाग  
खून की बू से मशाम-ए-जिन्दगी मखामूर है  
गाँलियों की सनसनाहट से फजा मामूर है  
यह है वह जंजीर खुद हाथों से ढाला था जिसे  
यह है वह बिजली कि खुद खिरमन ने पाला था जिसे  
तीर जो चुटकी में था पेवस्त बाजू में है  
आस्तीं में था जो खांजर आज वह पहलू में है  
आ गया है वक्त वह जो आँके टलता ही नहीं  
अपना लंगर आज अपने से सभलता ही नहीं

हिल चुका है तख्त-ए-शाही, गिर चुका है सर से ताज  
हर कदम पर डगमगाता जा रहा है साम्राज्य  
ढल रही है ज़रगरी की रात के तारों की छाँव  
मुफ़िलसी फ़ैला रही है वक़्त की चादर में पाँव  
इक़िलाब-ए-दहर में चढ़ता हुआ पारा है जंग  
वक़्त की रफ़्तार का मुड़ता हुआ धारा है जंग  
हमसे आज़ादों का इस दम गीत गाना ख़ूब है  
सर फिरे बागी जवानों का तराना ख़ूब है  
गम के सीने में ख़ाशी की आग़ भरने दो हमें  
ख़ूँ भरें परचम के नाचें रक्स करने दो हमें

स्रोत:

पुस्तक: हिन्दुस्तानी हमारा खण्ड-2 (पृष्ठ 272)

रचनाकार: जॉ निसार अख़्तर



علی سردار جعفری

۱۹۱۳ - ۲۰۰۰

## جنگ اور انقلاب

رقص کر ای روح آزادی کہ رقصاں ہے حیات  
گھومتی ہے وقت کے محور پہ ساری کائنات  
زندگی مینا و ساغر سے اہل جانے کو ہے  
کامرانی کے نئے سانچے میں ڈھل جانے ہے  
اڑ رہا ہے ظلم و استبداد کے چہرے سے رنگ  
چھٹ رہا ہے وقت کی تلوار کے ماتھے سے رنگ  
ہے فضاؤں میں نوید شادمانی کا سرور  
پڑ رہا ہے عشرت فردا کی پیشانی پہ نور  
موت ہنس کر دیکھتی ہے آئینہ تلوار میں  
زر پرستی کا سینا آگیا منجر حار میں  
باہمی نفرت کے شعلے جنگ کی نپے بول آگ  
بہر زن سرمایہ داری کہ ہے بیوا کا سہاگ  
خون کی بو سے مشام زندگی معمور ہے  
گولیوں کی سنابٹ سے فضا معمور ہے  
یہ ہے وہ زنجیر خود ہاتھوں سے ڈھالا تھا جسے  
یہ ہے وہ بجلی کہ خود خرمن نے پالا تھا جسے  
تیر جو چنگی میں تھا پیوست اب بازو میں ہے  
آتش میں تھا جو خنجر آج وہ پہلو میں ہے  
آگیا ہے وقت وہ جو آگے ملتا ہی نہیں  
اپنا لنگر آج اپنے سے منبھلتا ہی نہیں



مل چکا ہے تخت شای، گر چکا ہے سر سے تاج  
ہر قدم پر ڈگمگایا جا رہا ہے سامراج  
دُحل رہی ہے زرگری کی رات کے ستاروں کی چھاؤں  
مفلسی پھیلا رہی ہے وقت کی چادر میں پاؤں  
انقلاب دہر کا چڑھتا ہوا پارا ہے جنگ  
وقت کی رفتار کا بڑھتا ہوا دھارا ہے جنگ  
ہم سے آزادوں کا اس دم گیت گا نا خوب ہے  
سر پھرے باقی جوانوں کا ترانا خوب ہے  
غم کے سینے میں خوشی کی آگ بھرنے دو ہمیں  
خون بھرے پرچم کے نیچے رقص کرنے دو ہمیں

ماخذ:-

کتاب :- ہندوستان ہمارا حصہ دوم (ص ۴۷۲)

مصنف :- جاں نثار اختر



अली सरदार जाफरी  
1913-2000

## उठो

उठो हिन्द के बाग़बानों उठो  
उठो इकिलाबी जवानों उठो  
किसानों उठो कामगारों उठो  
नई जिंदगी के शरारों उठो  
उठो खोलते अपनी जंजीर से  
उठो खाक-ए-बंगाल-ओ-कश्मीर से  
उठो वादी-ओ-दश्त-ओ-कोहसार से  
उठो सिंध-ओ-पंजाब-ओ-मल्बार से  
उठो मालवे और मेवात से  
महाराष्ट्र और गजरात से  
अवंधा के चमन से चहकते उठो  
गुलों की तरह से महकते उठो  
उठो खुल गया परचम-ए-इकिलाब  
निकलता है जिस तरह से आफताब  
उठो जैसे दरिया में उठती है मौज  
उठो जैसे आँधी की बढ़ती है फौज

उठो बर्क की तरह हँसते हुए

कड़कते गरजते, बरसते हुए

गुलामों की जंजीर को तोड़ दो

ज़माने की रफ़्तार को मोड़ दो

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 329)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



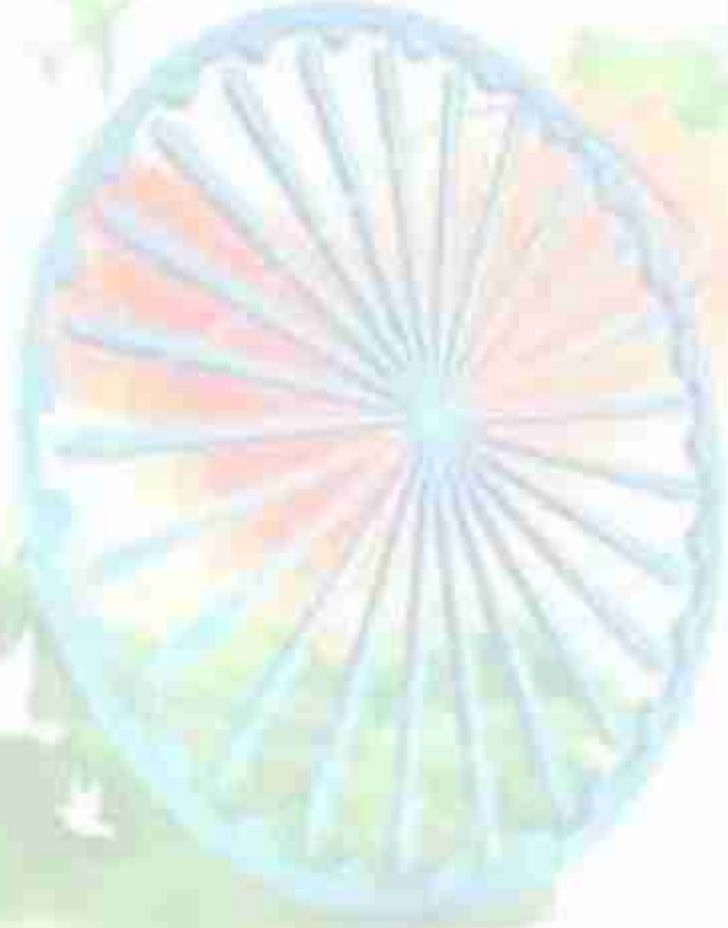
علی سردار جعفری

۱۹۱۳ - ۲۰۰۰

اٹھو اٹھو بند کے باغباتو اٹھو  
 اٹھو اٹھو انقلابی جوانو اٹھو  
 اٹھو اٹھو کسانوں کا مارو اٹھو  
 اٹھو اٹھو نئی زندگی کے شرارو اٹھو  
 اٹھو اٹھو کھینٹے اپنی زنجیر سے  
 اٹھو اٹھو خاک بنگال و کشمیر سے  
 اٹھو اٹھو وادی و دشت و کہسار سے  
 اٹھو اٹھو سندھ و پنجاب و ملبار سے  
 اٹھو اٹھو مالوے اور میوات سے  
 اٹھو اٹھو مہاراشٹر اور گجرات سے  
 اٹھو اٹھو اودھ کے چین سے چبکتے اٹھو  
 اٹھو اٹھو نکلوں کی طرح سے مکتبے اٹھو  
 اٹھو اٹھو کھل گیا پریم انقلاب  
 اٹھو اٹھو ہے جس طرح سے آفتاب  
 اٹھو اٹھو جیسے دریا میں اٹھتی ہے موج  
 اٹھو اٹھو جیسے آندھی کی برہتی ہے فوج

اٹھو برق کی طرح بہتے ہوئے  
کڑکتے گرہتے برستے ہوئے

غلامی کی زنجیر کو توڑ دو  
زمانے کی رفتار کو موڑ دو



ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص-۳۲۹)

مصنف:- علی جوادی



अली सरदार जाफरी  
1913-2000

## आज़ादी

पूछता हूँ तो कि कब और किस तरह आती हूँ मैं  
गोद में नाकामियों के परवरिश पाती हूँ मैं  
सिर्फ़ वो मखसूस सीनें हैं मेरी आराम-गाह  
आरजू की तरह रह जाती है जिन में घुट के आह  
अहल-ए-गम के साथ उन का दर्द-ओ-गम सहती हूँ मैं  
काँपते होंटों पे बन कर बद-दुआ रहती हूँ मैं  
रक्स करती हूँ इशारों पर मेरी माँत-ओ-हयात  
देखती रहती हूँ मैं हर-वक़्त नब्ज़-ए-काएनात  
खुद-फरेबी बढ के जब बनती है एहसास-ए-शुऊर  
जब जवाँ होता है अहल-ए-जर के तेंबर में गुरुर  
मुफिलसी से करते हैं जब आदमियत को जुदा  
जब लहू पीते हैं तहजीब-ओ-तमदुन के खुदा  
भूत बन कर नाचता है सर पे जब काँमी वकार  
ले के मजहब की सिपर आता है जब सरमाया-दार

रास्ते जब बंद होते हैं दुआओं के लिए  
आदमी लड़ता है जब झूठे खुदाओं के लिए  
जिंदगी इसाई की कर देता है जब इसाई हराम  
जब उसे कानून-ए-फितरत का अता होता है नाम  
अहरमन फिरता है जब अपना दहन खोले हुए  
आसमाँ से माँत जब आती है पर तोले हुए  
जब किसानों की निगाहों से टपकता है हिरास  
फूटने लगती है जब मजदूर के जखमों से यास  
सब-ए-अय्यूबी का जब लबरेज होता है सुबू  
सोज-ए-गम से खीलता है जब गुलामों का लहु  
गासिबों से बढ़ के जब करता है हक अपना सवाल  
जब नजर आता है मजलूमों के चेहरों पर जलाल  
तफरका पड़ता है जब दुनिया में नस्ल-ओ-रंग का  
ले के मैं आती हूँ परचम इकिलाब-ओ-जंग का  
हाँ मगर जब टूट जाती है हवादिस की कमंद  
जब कुचल देता है हर शय को बगावत का समंद

जब निगल लेता है तूफ़ाँ बढ के कशती नूह की  
घुट के जब इंसान में रह जाती है अज़मत रुह की  
दूर हो जाती है जब मजदूरों के दिल की जलन  
जब तबस्सुम बन के होंटों पर सिमटती है थकन  
जब उभरता है उफुक से जिदगी का आपताब  
जब निखरता है लहू की आग में तप कर शबाब  
नस्ल काँमियत कलीसा सल्तनत तहजीब-आ-रंग  
राँद चुकती है जब इन सब को जवानी की उमंग  
सुब्ह के जरीं तबस्सुम में अर्याँ होती हूँ में  
रिफअत-ए-अर्श-ए-बरी से पर-फिशौं होती हूँ में

स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 149)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी





علی سردار جعفری

۱۹۱۳ - ۲۰۰۰

## آزادی

پوچھتا ہے تو کہ کب اور کس طرح آتی ہوں میں  
گود میں ناکامیوں کے پردرشن پاتی ہوں میں  
صرف وہ مخصوص سینے ہیں مری آرام گاہ  
آرزو کی طرح رہ جاتی ہے جن میں گھٹ کے آہ  
اہل غم کے ساتھ ان کا درد و غم سہتی ہوں میں  
کانچتے ہونٹوں پہ بن کر بد دعا رہتی ہوں میں  
رقص کرتی ہیں اشاروں پر مرے موت و حیات  
دیکھتی رہتی ہوں میں ہر وقت نہیں کائنات  
خود فریبی بڑھ کے جب بنتی ہے احساس شعور  
جب جوان ہوتا ہے اہل زر کے تیور میں غرور  
مفلس سے کرتے ہیں جب آدمیت کو جدا  
جب ابو پیتے ہیں تہذیب و تمدن کے خدا  
بجوت بن کر ناچتا ہے سر پہ جب قومی وقار  
لے کے مذہب کی سپر آتا ہے جب سرمایہ دار

راستے جب بند ہوتے ہیں دعاؤں کے لئے

آدمی لڑتا ہے جب جھوٹے خداؤں کے لئے

زندگی انساں کی کر دیتا ہے جب انساں حرام

جب اسے قانون فطرت کا عطا ہوتا ہے نام

اہرمن پھرتا ہے جب اپنا دہن کھولے ہوئے

آسماں سے موت جب آتی ہے پر تولے ہوئے

جب کسانوں کی نگاہوں سے ٹپکتا ہے ہراس

پھوٹنے لگتی ہے جب مزدور کے زخموں سے یاں

مہر ایوبی کا جب لہریز ہوتا ہے سہو

سوز غم سے کھوتا ہے جب غلاموں کا لہو

فانسیوں سے بڑھ کے جب کرتا ہے حق اپنا سوال

جب نظر آتا ہے مظلوموں کے چہروں پر جلال

تفرقہ پڑتا ہے جب دنیا میں نسل و رنگ کا

لے کے میں آتی ہوں پرچم انقلاب و جنگ کا

ہاں مگر جب ٹوٹ جاتی ہے حوادث کی کند

جب کچل دیتا ہے ہر شے کو بغاوت کا سند

جب نگل لیتا ہے طوفاں بڑھ کے کشتی نوح کی  
 گھٹ کے جب انسان میں رہ جاتی ہے عظمت روح کی  
 دور ہو جاتی ہے جب مزدوروں کے دل کی جلن  
 جب تبسم بن کے ہونٹوں پر سمٹی ہے تھکن  
 جب ابھرتا ہے افق سے زندگی کا آفتاب  
 جب کھڑتا ہے لبو کی آگ میں تپ کر شباب  
 نسل قومیت کلیسا سلطنت تہذیب و رنگ  
 روند چکتی ہے جب ان سب کو جوانی کی امنگ  
 صبح کے زریں تبسم میں عیاں ہوتی ہوں میں  
 رفعت عرش بریں سے پرفشاں ہوتی ہوں میں

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص-۱۳۹)

مصنف:- علی جواد زیدی



एजाज सिद्दीकी

1913-1978

नागुज़ीर

(एक हकीकत पसन्दाना नुक्ता-ए-निगाह)

जाग इक जब है हम अमन पसन्दों के लिए  
इस हकीकत से कोई है जो खबरदार न हो

कौन ऐसा है सर-ए-बिस्तर-ए-एहसास-ओ-शरूर  
धूप सर पर हो मगर खुवाब से बेदार न हो

है सरासर तपिश-ओ-साज की फितरत के खिलाफ  
आग सीने में लगे आँखा शररबार न हो

पत्थरों को तो बहरहाल कुचलना होगा  
क्या करे कोई अगर रास्ता हनुवार न हो

दोस्तों हम नहीं इस रक्स-ए-जुनू के कायल  
जो सर-ए-बज़्म तो हो और सर-ए-दार न हो

इश्क झूठा है, गज़ल झूठी है, फन झूठा है  
यह अगर वक्त की धड़कन से खबरदार न हो

जाग इक जब है हम अमन पसन्दों के लिए  
काट मौजूद है दुश्मन की कमन्दों के लिए

स्रोत:

पुस्तक: हिन्दुस्तान हमार खण्ड-2 (पृष्ठ 367)

रचनाकार: जाँ निसार अख्तर



اعجاز صدیقی

۱۹۷۸ - ۱۹۱۳

ناگزیر

(ایک حقیقت پسندانہ نقطہ نگاہ)

جنگ اک جبر ہے ہم امن پسندوں کے لیے  
اس حقیقت سے کوئی ہے جو خبردار نہ ہو  
کون ایسا ہے سر بستہ احساس و شعور؟  
دھوپ سر پر ہو مگر خواب سے بیدار نہ ہو  
ہے سراسر تپش و سوز کی فطرت کے حوالہ  
آگ سینے میں لگے آنکھ شرر بار نہ ہو  
پتھروں کو تو بہر حال نکلنا ہوگا  
کیا کرے کوئی اگر راستہ ہموار نہ ہو  
دوستو اہم نہیں جیسا اس رقص جنوں کے قائل  
جو سر بزم تو ہو اور سر دار نہ ہو  
عشق جھوٹا ہے غزل جھوٹی ہے، فن جھوٹا ہے  
یہ اگر دقت کی دھڑکن سے خبردار نہ ہو  
جنگ اک جبر ہے ہم امن پسندوں کے لیے  
کاٹ موجود ہے دشمن کی کندوں کے لیے

ماخذ:-

کتاب:- ہندوستان ہمارا حصہ دوم (ص-۳۶۷)

مصنف:- جاں نثار اختر



जाँ निसार अख्तर  
1914-1976

### जहाँ मैं हूँ

फज़ा-ए-जिन्दगी शोला बदअमाँ है जहाँ मैं हूँ  
हवा है आग है, बिजली है तूफ़ाँ है जहाँ मैं हूँ  
वहाँ जखमी कलेजा इश्क का तीर हवाविस से  
वहाँ टुकड़े तमन्ना का गरेबाँ है जहाँ मैं हूँ  
वहाँ पिघली हुई जंजीर एहसास-ए-कदामत की  
वहाँ आजाद फ़िक्र नाँ-ए इसाँ है जहाँ मैं हूँ  
तड़पती हैं हजारों बिजलियों आगोश-ए-खिरमन में  
जुनुँ अंगेज खून-ए-गरम दहकाँ है जहाँ मैं हूँ  
उठी है सीना मजदूर से आँधी बगावत की  
हुकूमत एक शाख-ए-बंद लरजाँ है जहाँ मैं हूँ  
लहू की शमा जलती है बिसात-ए-जिन्दगानी पर  
जवानी आग है शालों में लरजाँ है जहाँ मैं हूँ

स्रोत:

पुस्तक: कुल्लियात-ए-जाँ निसार अख्तर (पृष्ठ 281)

रचनाकार: जाँ निसार अख्तर



جاں نثار اختر

۱۹۱۳ - ۱۹۷۶

### جہاں میں ہوں

نضائے زندگی شعلہ برامان ہے جہاں میں ہوں  
ہوا ہے آگ ہے بجلی ہے طوفان ہے جہاں میں ہوں  
وہاں زخمی کلیجہ عشق کا تیر حوادث سے  
وہاں نکلے تمنا کا گریباں ہے جہاں میں ہوں  
وہاں پھیلی ہوئی زنجیر احساس ندامت کی  
وہاں آزاد فکر نوع انسان ہے جہاں میں ہوں  
ترپتی ہیں ہزاروں بچلیاں آغوش خرمین میں  
جنوں انگیز خون گرم دہقان ہے جہاں میں ہوں  
اٹھی ہے سینہ مزدور سے آندھی بغاوت کی  
حکومت ایک شاخ بید لرزاں ہے جہاں میں ہوں  
لہو کی صبح جلتی ہے بساط زندگانی پر  
جوئی آگ کے شعلوں میں لرزاں ہے جہاں میں ہوں

ماخذ:-

کتاب کلیات جاں نثار اختر (ص-۲۸۱)

مصنف:- جاں نثار اختر



गुलाम रब्बानी तारबौ  
1914-1993


“15 अगस्त 1947”

मरि रबी शौतनत के चेहरे पर  
देखा अपने लहू का गाजा है  
तीन सदियाँ गुजर चुकी लेकिन  
जखम सीने का अभी ताजा है

किस से शिकवा करें हम अपवनों का  
गिरते-गिरते संभल गया दुश्मन  
दे के हम को फरेब-ए-आजादी  
इक नई चाल चल गया दुश्मन

जिस्म पहले से कई था लेकिन  
रुह पर उसने दाम फेंक दिया  
आ चुका था जो तिश्ना होंठों तक  
हम ने खुद ही वह जाम फेंक दिया





रात की वासगाँ फसीलों के  
उस तरफ मुतजिर सवेरा था  
“दौलत-ए-मुश्तरक” के शंदाई  
अपनी किस्मत ही में अधेरा था

अपने पाँव में बँडियों के एवज  
पड रही है तिलाई जंजीरे  
ताबनाक-ओ-हसीन ख़वाबों की  
रुह फ़र्सा है कितनी ताबीरें

स्रोत:

पुस्तक: साज-ए-लरजा (पृष्ठ 111)

रचनाकार: गुलाम रब्बानी ताबी



غلام ربانی تاباں

۱۹۹۳ - ۱۹۱۳

"۱۵ اگست ۱۹۴۷"

مغربی شیطنت کے چہرے پر  
دیکھ اپنے لبو کا غازہ ہے  
تین صدیاں گزر چکیں لیکن  
زخم سینے کا اب بھی تازہ ہے

میں سے شکوہ کریں ہم اپنوں کا  
گرتے گرتے سنبھل گیا دشمن  
دے کے ہم کو فریب آزادی  
اک نئی چال چل گیا دشمن

جسم پہلے سے قید تھا لیکن  
روح پر اس نے دام پھینک دیا  
آچکا تھا جو تھنہ ہونٹوں تک  
آچکا تھا جو تھنہ ہونٹوں تک

رات کی واڑگوں فصیلوں کے  
اُس طرف منتظر سویرا تھا  
" دولت مشترک " کے شیدائی  
اپنی قسمت ہی میں امدیدرا تھا

اپنے پاؤں میں بیڑیوں کے عوض  
پڑ رہی ہیں خلائی زنجیریں  
تاباک و حسین خوابوں کی  
رُوخ فرسا ہیں کتنی تعبیریں

ماخذ:-

کتاب:- ساز لڑاں (ص-۱۱۱)

مصنف:- غلام ربانی تاباں



अलताफ मुशहदी  
1914-1981

### माँ की दुआ

तेरे दम से फिर वतन वालों में पैदा हो हयात  
पंजा-ए-अर्यार से हो हिंद को हासिल नजात  
काम आ जाए वतन की राह में तेरा शबाब  
गैरतें जिन्दानियों की फिर उलट डाले नकाब  
तू बदल डाले निजाम-ए-हिन्द के लैल-ओ-नहार  
यह गुलाम आबाद हो आजाद मुल्कों में शुमार  
आस्तीन-ए-हिन्द हो तेरे लहू से लालः फाम  
पादशाहों का लकब पाने लगे हिंदी गुलाम  
हड्डियाँ पिस कर बनें गाजा उरुस-ए-हिन्द का  
हुस्न फिर हो जाए कुछ ताजा उरुस-ए-हिन्द का  
तेरे होंठों से ब-वक्त-ए-मर्ग यह निकले सदा  
नाँजवानान-ए- वतन आगे बढ़ो आगे ज रा

स्रोतः

पुस्तकः आजादी की नर्ज़े (पृष्ठ 118)

रचनाकारः सिद्धो हसन



الطاف مشہدی

۱۹۸۱ - ۱۹۱۳

## ماں کی دعا

تیرے دم سے پھر وطن والوں میں پیدا ہو حیات  
پنچہ اغیار سے ہو بند کو حاصل نجات  
کام آ جائے وطن کی راہ میں تیرا شباب  
غیر تمیں زندانیوں کی پھر الٹ ڈالیں نقاب  
تو بدل ڈالے نظام بند کے لیل و نہار  
یہ غلام آباد ہو آزاد ملکوں میں شمار  
آستین بند ہو تیرے لبو سے لالہ قام  
پادشاہوں کا لقب پانے لگیں بندی غلام  
ہڈیاں پس کر پیش غازہ عروس بند کا  
حسن پھر ہو جائے کچھ سارہ عروس بند کا  
تیرے ہونٹوں سے بوقت مرگ یہ نکلے صدا  
نوجوانان وطن آگے بڑھو آگے ذرا

ماخذ:-

کتاب:- آزادی کی نظمیں (ص-۱۱۸)

مصنف:- سبط حسن



एहसान दानिश  
1914-1982

### गुलामी की खुसूसियात

हिमाकृत है यकीन करना गुलामों की मुहब्बत का

भरोसा कुछ नहीं इन ताजीरान-ए-मुल्क-ओ-मिल्लत का

जिया इमान में है और न जू परहेजगारी में

है दाग-ए-खुद फरोशी दामन-ए-ताअत गुजारी में

यह शाख-ए-आरजू को फूलने फलने नहीं देते

यह आजादी की उटती बेल को चलने नहीं देते

अमाँ मिलती है अक्सर सिपलगी को खीर ख्वाही में

हुजूम-ए-दुश्मनान-ए-कौम है दरबार-ए-शाही में

गुलामी के शबिस्तानों में जहरीला उजाला है

जो इसमें आके सोया वह कहाँ फिर उठने वाला है

स्रोत:

पुस्तक: आतिश-ए-खामोश (पृष्ठ 149)

रचनाकार: एहसान दानिश



احسان دانش

۱۹۸۲ - ۱۹۱۳

### غلامی کی خصوصیات

حماقت ہے یقین کرنا غلاموں کی محبت کا  
بھروسہ کچھ نہیں ان تاجران ملک و ملت کا  
ضیا ایمان میں ہے اور نہ وضو پر بیز گاری میں  
ہے داغ خود فروشی دامن طاعت گزاری میں  
یہ شاخ آرزو کو بھونچ لینے پھلنے نہیں دیتے  
یہ آزادی کی اُشقی تیل کو چلنے نہیں دیتے  
اماں ملتی ہے اکثر سٹگی کو خیر خواہی میں  
ہجوم دشمنان قوم ہے دربار شہی میں  
غلامی کے شبستانوں میں زہریلا اُجالا ہے  
جو اس میں آکے سویا وہ کہاں پھر اٹھنے والا ہے

ماخذ:-

کتاب:- آتش خاموش (ص-۱۳۹)

مصنف:- احسان دانش



मसूद अख़्तर  
1915-1981

## फिर्का परस्ती

आह यह है वानियत की इन्तिहा  
हाय यह फिर्का परस्ती की वबा

जहर है इसकी शराब-ए-तुंद खू  
इसके शीशा से उबलता है लहू

ले के निकली है यह कज है, कज नजर  
आदमियत का जनाजा दांश पर

जुल्म का तूफान इसके साथ है  
माँत का मैदान इसके साथ है

दुसअतें दिल की यहाँ महदूद है  
अक्ल की राहें यहाँ मसदूद है

इसका दिल है खुद फरेदी का शिकार  
इसकी आँखों माँत का तारीक गार

खानकाहीं में है इसकी सल्तनत  
बेचती है यह खुदा की तमकनत



मन्दिरों में जाके यह करती है राज  
देवताओं से यह लेती है खिराज

ताँडती है दम यहाँ इंसानियत  
साँस लेती है यहाँ है वानियत

कौम पर अद्बार छा जाता है जब  
जज़्बा-ए-इसाफ़ थाराता है जब

जहल की तारीकियाँ बढ़ती हैं जब  
शोरिशों की नदियाँ चढ़ती हैं जब

तलखियों में खूब जाती है फ़जा  
वह शियाना रक्स करती है हवा

अर्सा-ए-वह ात में बजते हैं बिगुल  
इल्म के फानूस हो जाते हैं गुल

होंती रहती है इसी तकरीब से  
हिरिस की तामीर भी तखरीब से

पड़ती जाती है गिरह इफलास में  
करवटे लेता है शर एहसास में

दफ़अतन खामोशियों के साज से  
गूँज उठते हैं जुनू के जमजम में

पा बरहना फिर निकल आती है यह  
जुल्म के साँचे में ढल जाती है यह

फूक देती है यह बज्म-ए-इल्म-ओ-फ़न  
काँपता है इससे नामूस-ए-वतन

अम्न का पामाल कर देती है यह  
खून तस्वीरों में भर देती है यह

छीन लेती है यह बदखू बदगुमाँ  
शीरखवारों की चबा कर हड्डियाँ

बस्तियों में यह लगा देती है आग  
छीन लेती है सुहागन का सुहाग

राह में काटे बिछा देती है यह  
जहर में न तर बुझा देती है यह

हाँ मगर इस अहद में इस दौर में  
टूटने वाली है इसकी बंदिशों

आने वाला है वह तूफान-ए-हयात  
लानतों से जाँ दिलाए गा निजात

जिसकी शोरिश में बाहुस्न-ए-इत्तिफाक  
जज़ब हो जायेंगे आपस के निफाक

स्रोत:

पुस्तक: नौरस (पृष्ठ 149)

रचनाकार: मसूद अख्तर जमाल



مسعود انجم

۱۹۸۱ - ۱۹۱۵

### فرقہ پرستی

آہ یہ حیوانیت کی انتہا  
ہائے یہ فرقہ پرستی کی دبا  
زہر ہے اسکی شراب تند خود  
اسکے شیشیوں سے ابلتا ہے لہو  
لپکے نکلتی ہے یہ کچھ ہیں کج نظر  
آدمیت کا جنازہ دوش پر  
ظلم کا طوفان اسکے ساتھ ہے  
موت کا میدان اسکے ہاتھ ہے  
دستیں دل کی یہاں محدود ہے  
عقل کی راہیں یہاں مسدود ہیں  
اس کا دل ہے خد فریبی کا شکار  
اسکی آنکھیں موت کا تاریک خار  
خانقاہوں میں ہے اسکی سلطنت

بچتی ہے یہ خدا کی حکمت  
معدوں میں یہ کرتی ہے راج  
دیوتاؤں سے یہ لیتی ہے خراج

توڑتی ہے دم یہاں انسانیت  
سانس لیتی ہے یہاں حیوانیت

قوم پر ادبار چھا جاتا ہے جب  
جنہ انصاف تھراتا ہے جب

جہل کی تاریکیاں بڑتی ہے جب  
شورشوں کی ندیاں چڑھتی ہیں جب

تلخیوں میں ڈوب جاتی ہے فضا  
وحشیانہ رقص کرتی ہے ہوا

عرصہ وحشت میں بھیجتی ہے بگل  
علم کے فانوس ہو جاتے ہیں گل

ہوتی رہتی ہے اسی تقریب سے  
حرص کی تعمیر بھی تخریب سے

پڑتی جاتی ہے گرہ افلاس میں  
کروٹیں لیتا ہے شراحتاس میں

دفتار خاموشیوں کے ساز سے  
گونج اٹھتے ہیں جنوں کے زمزمے

پا برہنہ پھر نکل آتی ہے یہ  
ظلم کے سانچے میں ڈھل جاتی ہے یہ

پھونک دیتی ہے یہ بزمِ علمِ دفن  
کانچا ہے اس سے ناموسِ وطن

امن کو پامال کر دیتی ہے یہ  
خونِ تصویروں میں بھر دیتی ہے یہ

چھین لیتی ہے یہ بدخو بدگماں  
شیرِ خواروں کی چپا کر ہڈیاں

بستیوں میں یہ آگ لگا دیتی ہے آگ  
چھین لیتی ہے سہاگن کا سہاگ

راہ میں کانٹے بچھا دیتی ہے یہ  
زہر میں نشتر بجا دیتی ہے یہ

ہاں مگر اس عہد میں اس دور میں  
ٹوٹنے والی ہے اس کی بندشیں

آنے والا ہے وہ طوفانِ حیات  
لحنتوں سے جو دلائے گا نجات

جسکی شورش میں ہے حسنِ اتفاق  
جذب ہو جائیں گے آپس کا اتفاق

ماخذ:- کتاب:- نورس (ص-۱۳۹)

مصنف:- مسعود اختر جمال




अख़्तर-उल-ईमान  
1915-1996

### सवालिया निशान

दहकाँ संवारता है मिट्टी  
चुन चुन के बिखोरता है दाने  
आँर सोचता जा रहा है जी में  
फिर आयेंगी जंग आज माने  
आँर दिल को टटोलता है रुककर  
फिर दूर उफुक को देखता है  
कुछ रंग से तीरगी में डूबे  
मजबूर उफुक को देखाता है

आखाँ में लहू की बूद काँपी  
गिरते ही जमीं पे खो गयी फिर  
परवान चढाये थे जाँ पाँदे  
वह जल गये रात हो गई  
खाली कई गाँशों हो गये हैं  
तन्हा तो न था, पे रह गया है  
करना पड़ा नेश-ए-गम गवारा



किस-किस का न खून बहा गया है  
फिर दूर उफुक को देखाता है  
यह खेत वुसअत-ए-बयाबाँ  
सार सब्ज जमी के यह फूल  
यह सब्ज ए-नौरस्ता, यह खयाबाँ  
सब आग में जल रहे हैं गोया  
थम थम के पिघल रहे हैं गोया

दहकान सवारता है मिट्टी  
रुक रुक के बिखोरता है दाने  
और सोचता जा रहा है जी में  
फिर आयेंगी जंग आज माने

स्रोत:

पुस्तक: हिन्दुस्तों हमार खण्ड-2 (पृष्ठ 269)

रचनाकार: जाँ निसार अख्तर



اختر الایمان

۱۹۱۵ - ۱۹۹۶

### سولہ نشان

دہقان سنوارتا ہے منی  
سنا۔ کھنڈا کے کھیرتا ہے دانے  
اور سوچتا جا رہا ہے جی میں  
پھر آئے گی جنگ آزمانے  
اور دل کو ٹھوٹا ہے رنگ کر  
پھر دور افق کو دیکھتا ہے  
کچھ رنگ سے تیرگی میں ڈوبے  
مجبور افق کو دیکھتا ہے

آنکھوں میں لہو کی بوند کاچی  
گرتے ہی زمیں پہ کھو گئی پھر  
پردان چڑھائے تھے جو پودے  
وہ جل گئے رات ہو گئی پھر  
خالی کئی گوشے ہو گئے ہیں  
تہا تو نہ تھا، پہ رہ گیا ہے  
کرتا پڑا نیش غم گوارا



کس کس کا نہ خون بہہ گیا ہے

پھر دور افق کو دیکھتا ہے ،

یہ کھیت وسعت بیاباں

سر سبز زمیں کے یہ پھول

یہ سبزہ نورستہ ، یہ خیاباں

سب آگ میں جل رہے ہیں گویا

تخم تخم کے پھیل رہے ہیں گویا

دہتال سنوارتا ہے متنی

حسبہ حسبہ کے کھیرتا ہے دانے

اور سوچتا جا رہا ہے جی میں

پھر آئے گی جنگ آزمانے

ماخذ:-

کتاب:- ہندوستان ہمارا حصہ دوم (ص ۲۶۹-)

مصنف:- جاں نثار اختر



खुरशीद अहमद जामी  
1915-1970

### मुस्तविबल का ख़्वाब

हमारें अज़्म से पैदा नया हिन्दुस्तॉ होंगा  
मुकद्दर वक़्त के आग़ोश में पलकर ज़वाँ होगा

रुख-ए-तहज़ीब का गाज़ा शफ़क की सुख़ियाँ होगी  
तमद्दुन के हसी आरिज पे नूर-ए-कहकशाँ होगा

जामी ख़ोता की सूरत में ख़जानों को उगायेंगी  
हकायक पर सुनहरे मस्त ख़्वाबों का गुमाँ होगा

दिल-ए-फ़ौलाद पिघलेंगा मशीनें गड़गड़ायेंगी  
हयात-ओ-इर्तिका का नक्श नक्श-ए-जाविदाँ होगा

टटोला जायेंगा ज़रों का दिल कुहसार का सीना  
शऊर-ए-ज़िन्दगानी बिजलियों पर हुक्मराँ होगा

दिलआरा खम ब खम जैसे किसी महबूब के गेंसू  
निशात अंगेज यूँ ही कारखानों का धुआँ होगा

बदल जायेंगे दरियाओं के रूख मौसम के अफसाने  
गुरुर-ए-वक्त पर छाया हुआ अज़म-ए-जवाँ होगा

वतन की सरज़मी पे सनअतों का बाक़ंपन होगा  
निगाह-ए-शाँक के आगे बहारों का समौँ होगा

नजर अफरोज सहाराओं में तालाबों के होंठों पर  
सुरुर-ओ-कैफ़ का नरमों का सैलाब-रवाँ होगा

चमन शदाब होगा सुब्ह-ए-इ रत गुनगुनायेगी  
न गम की बिजलियाँ होंगी न फाकों का निशाँ होगा

स्रोत:

पुस्तक: हिन्दुस्तौँ हमारा खण्ड-2 (पृष्ठ-430)

रचनाकार: जाँ निसार अख़्तर



خورشید احمد جامی

۱۹۷۰ - ۱۹۱۵

## مستقبل کا خواب

ہمارے عزم سے پیدا نیا ہندوستان ہوگا  
مقدر وقت کے آغوش میں لپل کر جواں ہوگا

شہ تہذیب نازہ شفق کی سرخیوں ہوں گی  
تمدن کے خمیں عارض پہ نور کھکشاں ہوگا

زمیں کھیتوں کی صورت میں خزانوں کو آگائے گی  
حقایت پر سنہرے مست خوابوں کا گماں ہوگا

دل فولاد پھیلے گا مشینیں مڑ مڑائیں گی  
حیات وار تھا کا نقش نقش جاوداں ہوگا

ٹھولا جائے گا فڑوں کا دل کہسار کا سینہ  
شور زنگانی بچلیوں پر سکراں ہوگا

دل آرا غم بہ غم جیسے کسی مجبو ب کے گیسو  
نشاط انگیز یوں ہی کاکھانوں کا دھواں ہوگا

بدل جائیں گے دریاؤں کے زرخ موسم کے افسانے  
غرورِ وقت پر پھلایا ہوا عزمِ جواں ہوگا

وطن کی سرزمین پہ صنعتوں کا بکھپا ہوگا  
ہکا و شوق کے آگے بہاروں کا سماں ہوگا

نظر افروز صحراؤں میں تالابوں کے ہونٹوں پر  
سرور و کیت کا نغموں کا سیلاب رواں ہوگا

چمن شراب ہوگا صبحِ عسیر گنتنا نئے گی  
نہ غم کی بجلیاں ہوں گی نہ فاقوں کا نشاں ہوگا

ماخذ:-

کتاب:- ہندوستان ہمارا حصہ دوم (ص ۳۳۰-)

مصنف:- جاں نثار اختر



अली जव्वाद जैदी

1916-2004

## सियासी कैदी की रिहाई

मुबारकबाद तुम को आज मैं क्या दूँ रिहाई पर

निकल पड़ते हैं आँसू मुल्क की बेदस्त-ओ-पाई पर

‘रिहाई’ लफ्ज बे माईने है दुनिया-ए-गुलामी में

बासर होती है सारी जिंदगी कैद-ए-दवामी में

हर इक गोशे पे कैद-ओ-बंद के कानून हावी है

यहाँ नाइयते आजाद-ओ-कैद की मुसावी है

गर आवाजें उठायें भी कभी सरकार जवानों ने

सजा-ए-कैद दी अमन-ओ-अमों के पासबानों ने

पनपने ही नहीं देते यहाँ नखल-ए-जवानी का

जकड़ रखा है जंजीरों में सारी जिंदगानी का

तमन्नाओं पे संगीनों की खुनखुवारी के पहरें हैं

वफूर-ए-शौक के दिल पर सितम के जख्म गहरे हैं

दबी है जुल्म के पहिये के नीचे रुह-ए-आजादी

भंवर में फंस गई है सारे हिन्दुस्तों की आजादी

रुका है सारा हिन्दुस्तों मगर कानून जारी है

इसी का दौर दौरा है, इसी की रुबकारी है

रिहा होकर इसी कानून की गोदी में जाना है

तुम्हें फिर घूम फिर कर महफिल-ए-जिन्दों में आना है

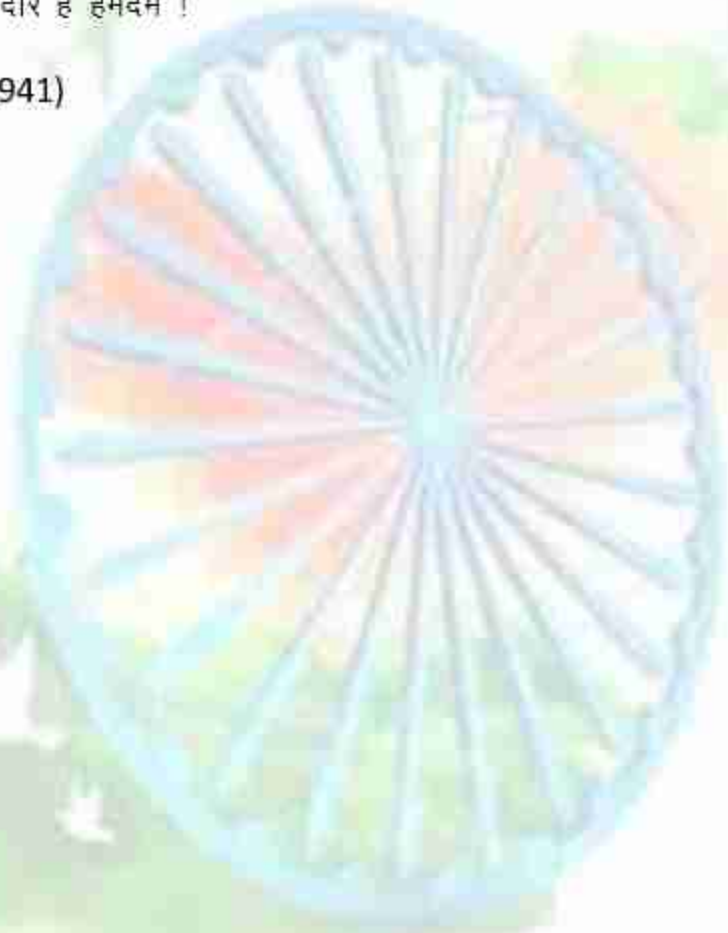
दिल-ए-सय्याद को हर दम खयाल-ए-सैद रहता है

रिहाई में भी सद पैगाम-ए-बंद-ओ-कौद रहता है

हमारा मुल्क इक जिंदान-ए-बंदीवार है हमदम !

यहाँ हर एक कदम पर इम्तिहान-ए-दार है हमदम !

(1941)



स्रोत:

पुस्तक: उर्दू में कौमी शायरी के सौ साल (पृष्ठ 335)

रचनाकार: अली जव्वाद जैदी



علی جواد زیدی

۱۹۱۶ - ۲۰۰۴

## سیاسی قیدی کی رہائی

مبارکباد تم کو آج میں کیا دوں رہائی پر  
نکل پڑتے ہیں آنسو ملک کی بے دست و پائی پر  
"رہائی" لفظ بے معنی ہے دنیائے قلاوی میں  
بہر ہوتی ہے ساری زندگی قید وادی میں

ہر اک گوشے پر قید و بند کے قانون ہادی ہیں  
یہاں نوعیتیں آزاد قیدی کی مساوی ہیں  
گر آوازیں اٹھائیں بھی سرکش جوانوں نے  
شہزائے قیدی امن و امان کے پاسانوں نے  
کوئی بھی ان کے چنگل سے نکل کر جا نہیں سکتا  
کہیں بھی ہو امان ان رہنوں سے پائیں سکتا  
پنپنیں ہی نہیں دیتے یہاں نخل جوانی کو  
جکڑ رکھا ہے زنجیروں میں ساری زندگانی کو  
تہناؤں پہ سنگینوں کی خونخواری کے پہرے ہیں  
دور شوق کے دل پرستم کے زخم گہرے ہیں

دہلی ہے علم کے پپے کے نیچے روح آزادی

بھنور میں پھنس گئی ہے سارے ہندستان کی آزادی

رکا ہے سارا ہندستان مگر قانون جاری ہے

اسی کا دور دورہ ہے اسی کی رو بکاری ہے



رہا ہو کر اسی قانون کی گودی میں جانا ہے

تھیں پھر گھوم پھر کر محفل زنداں میں آنا ہے

لی سیاد کو ہر دم خلی صید رہتا ہے

رہائی میں بھی صد پیغام بندر قید رہتا ہے

ہمارا ملک اک زندن ہے دیوار ہے سدھم !

یہاں ہر اک قدم پر امتحان دار ہے سدھم !

(۱۹۴۱)

ماخذ:-

کتاب:- اردو میں قومی شاعری کے سو سال (ص-۳۳۵)

مصنف:- علی جواد زیدی



शोरिश काश्मीरी  
1917-1975

### नौजवानों से खिताब

ऐ लश्कर-ए-मिल्लत के रजाकार जवानों  
आजादी-ए-कामिल के तलबगार जवानों

तकदीर को तदबीर के बाजू पे झुका दो  
नामूस-ए-वतन के लिए जानों को लड़ा दो

खुर्शीद-ए-शहँशाही को ढलते हुए देखूँ  
सीने में अजाइम को मचलते हुए देखूँ

यह मुल्क हुआ जिसके तशतहुद का निशाना  
अब इसकी तबाही का भी आया है जमाना

पूरब की फजाओं में कजा जाग उठी है  
अब जंग कफन चोर लुटेरों में ठनी है

हिटलर के इरादों का बदलना नहीं मुम्किन  
लंदन के खुदाओं का संभलना नहीं मुम्किन

अब जलियाँ वाला के शहीदों को पुकारों  
सर हद के भी पुरजोश पठानों को पुकारों

उजड़े हुए बागों की बहारों को पुकारों  
अफ़लाक-ए-शहादत के सितारों को पुकारो

कहता हूँ सुनो, जोश-ए-जवानी को पुकारों  
चलती हुई तेगों की रवानी को पुकारो

मकतल से उठा लाओ शहीदों के सरों को  
आवाज़ दो आवाज़ तबाह हाल घरों को

लेना है मुझे हिन्द की तजलील का बदला  
नामूस की बुझती हुई कंदील का बदला

मशिरक के जवानों को संभलते हुए देखूँ  
यह हिन्द की सरकार बदलते हुए देखूँ

स्रोत:

पुस्तक: हिन्दुस्तॉँ हमार खण्ड-2 (पृष्ठ-222)

रचनाकार: जॉँ निसार अख़्तर



شورش کاشمیری

۱۹۷۵ - ۱۹۷۷

### نوجوانوں سے خطاب

ای لشکرِ ملت کے رضاکار جوانو

آزادی کامل کے طلب گار جوانو

تقدیر کو تدبیر کے بازو پہ چمکا دو

ناموسِ وطن کے لئے جانوں کو لڑا دو

خورشیدِ شہنشاہی کو ڈھکتے ہوئے دیکھو

سینے میں عزائم کو مچھلتے ہوئے دیکھو

یہ ملک ہوا جس کے تشدد کا نشانہ

اب اس کی تباہی کا بھی آیا ہے زمانہ

یورپ کی فضاؤں میں قضا جاگ اٹھی ہے

اب جنگِ کفن چور لیروں میں شخصی ہے

ہنٹر کے ارادوں کا بدلنا نہیں ممکن

لندن کے خداؤں کا سنبھلنا نہیں ممکن

اب جلیان والا کے شہودوں کو پکارو

سرحد کے بھی پر جوش پٹھانوں کو پکارو

اڑے ہوئے باغوں کی بہاروں کو پکارو  
افلاک شہادت کے ستاروں کو پکارو

کہتا ہوں سنو، جوش جوانی کو پکارو  
چلتی ہوئی تہیوں کی روانی کو پکارو

مقتل سے اٹھا لاؤ شہروں کے سروں کو  
آواز دو آواز جب حال گھروں کو

لینا ہے مجھے ہند کی تزیل کا بدلا  
ناموس کی بچھتی ہوئی قدیل کا بدلا

مشرق کے جوانوں کو سنبھلتے ہوئے دیکھوں  
یہ ہند کی سرکار بدلتے ہوئے دیکھوں

ماخذ:-

کتاب:- ہندوستان ہمارا حصہ دوم (ص ۲۲۲-)

مصنف:- جاں نثار اختر



जगन्नाथ आज़ाद  
1918-2004

## आज़ाद हिन्द फौज

पाइंदाबाद हिन्द की ऐ फौज-ए-खुशनिहाद  
वह दिन खुदा करे कि बर आयें तेरी मुराद  
मिट जाये बज़्म-ए-दहर से यह जंग यह फ़साद  
जिन्दा को तोड़ फोड़ दे ऐ हुरियत निशाद  
अब वक़्त आ गया है कि हो अजिम-ए-जिहाद  
हिन्दोस्ताँ की फौज-ए-जफ़र मौज जिन्दाबाद  
परचम तेरा हो चाँद सितारों से भी बलन्द  
पहुँचा सके न दौर-ए-जमाना तुझे गजन्द  
अग्यार कर सके न कभी तुझ पे राह बन्द  
पस्पाईर्याँ हों तेरे जवानों को ना पसन्द  
तू कामर्राँ हों और उदू तेरे ना मुराद

हिन्दोस्ताँ की फौज-ए-जफर मौज जिन्दाबाद

“जय हिन्द” की सदाओं में तेरे जवाँ बढे

हाथों से लेके अम्न-ओ-अमाँ के निशाँ बढे

नुसरत नसीब उनके कदम हाँ जहाँ बढे

बहर-ए-वकार-ओ-अजमत-ए-हिन्दुस्ताँ बढे

दुनिया को भी वह शाद करें, हिन्द को भी शाद

हिन्दोस्ताँ की फौज-ए-जफर मौज जिन्दाबाद

स्रोत:

पुस्तक: हिन्दुस्ताँ हमार खण्ड-2 (पृष्ठ-314)

रचनाकार: जाँ निसार अख्तर



نگین ناتھ آزاد

۱۹۱۸-۲۰۰۳

## آزاد ہند فوج

پاکندہ باد ہند کی ای فوج خوش نہاد  
وہ دن خدا کرے کہ بر آئے تری مراد  
مٹ جائے بزم دہر سے یہ جنگ، یہ فساد  
زندیاں کو توڑ پھوڑ دے او حریت نژاد  
اب وقت آگیا ہے کہ ہو عازم جہاد  
ہندوستان کی فوج ظفر موج زندہ باد  
پرچم ترا ہو چاند ستاروں سے بھی بلند  
پہنچا سکے نہ دور زمانے تجھے گزند  
اخیار کر سکیں نہ کبھی یہ تجھ پہ راہ بند  
پسائیاں ہوں تیرے جوانوں کو ناپسند  
تو کامراں ہو اور عددو تیرے نامراد



ہندوستان کی فوج ظفر موج زندہ باد  
"جے ہند" کی صداؤں میں تیرے جواں پڑھیں  
ہاتھوں میں لے کے امن و اماں کا نشان پڑھیں  
نصرت نصیب ان کے قدم ہوں جہاں پڑھیں  
بہر وقار و عظمت ہندوستان پڑھیں  
دنیا کو بھی وہ شاد کریں ہند کو بھی شاد  
ہندوستان کی فوج ظفر موج زندہ باد

ماخذ:-

کتاب:- ہندوستان ہمارا حصہ دوم (ص ۳۱۳-)

مصنف:- جاں نثار اختر



कैफ़ी आजमी  
1919-2002

### आख़री मर्हला

हिसार बांधे हुए त्योरियॉ चढाये हुए  
ख़ाई है हिन्द के सरदार सर उठाये हुए  
बढे है झंले हुए कौद-ओ-बन्द के आजार  
उठे है जंग-ए-ख़िलाफत के आजमाये हुए  
शुजा-ए-हैदर-ओ-टीपू की गोद के पाले  
दिलेर नानक-ओ-रजीत के सिखाये हुए  
खुमार बादा-ए-इकबाल का निगाहों में  
लावाँ पे नरम-ए-टँगोर मुस्कुराये हुए  
नफस में आँच गरजती हुई मशीनों की  
कदम पे आतिश-ओ-आहन का सर झुकाये हुए  
जबीं पे धान के खंताँ की नर्म हरियाली  
नज़र में कहत की परछाईयाँ छुपाये हुए  
भडक के दोश-ए-हवा पर बिछा रहे हैं कुमुन्द  
शरर जो सर्द किताबों में थे दबाये हुए  
फ़जा में सुर्ख़ा फरेरा लुटा रहा है हयात  
हवा की जद पे चराग-ए-अमल जलाये हुए  
तडत के गिरने ही वाले है बर्क़ जिन्दाँ पर

खड़े हैं दर पे असीर आसरा लगाए हुए  
अभी खुलेंगे न परचम अभी पड़ेगा न रन  
कि मु तइल है मगर मुत्तहिद नहीं है वतन  
पुकारता है उफुक से लहू शहीदों का  
कि एक हाथ से खुलती नहीं गले की रसन  
यह इन्तिशार, यह हलचल, यह मोर्चों में शिगाफ  
मजाक उड़ाते हैं अज़म-ए-जिहाद का, दुश्मन  
निकल के सफ से खड़े हो गये हैं कुछ सावंत  
बढ़ा के हाथ मुहब्बत से थाम लो दामन  
फिर एक बार बढ़ो लेके सुलह का पैगाम  
फिर एक बार जला दो शकूक के खिर्मन  
यह यास क्यों ? यह तमन्नाए खुदकुशी कैसी ?  
नवेद-ए-फतह हो कल्ब-ए-अवाम की धड़कन  
मिटा दो मिलके मिटा दो निशाँ गुलामी का  
जमीन छोड़ चुका कारवाँ गुलामी का

स्रोत:

पुस्तक: आखिर-ए-शब (पृष्ठ-51)

रचनाकार: कैफ़ी आजमी



کیفی اعظمی

۲۰۰۲-۱۹۱۹

### آخری مرحلہ

حصار باندھے ہوئے ، تیوریاں چڑھائے ہوئے  
کھڑے ہیں بند کے سردار سر اٹھائے ہوئے  
بڑھے ہیں جھیلے ہوئے قید و بند کے آزار  
اٹھے ہیں جنگِ خلافت کے آزمائے ہوئے  
شجاع حیدر ، ٹیپو کی گود کے پالے  
لمہ نانک و رنجیت کے سکھائے ہوئے  
خمار بادۂ اقبال کا نگاہوں میں  
لیوں پہ نغمہ ٹیکور مسکرائے ہوئے  
لہس میں آج گرجتی ہوئی مشینوں کی  
قدم پہ آتش و آہن کا سر جھکائے ہوئے  
جبین پہ دھان کے کھیتوں کی نرم ہریالی  
نظر میں قحط کی پرچھائیاں چھپائے ہوئے  
بھوک کے دوش ہوا پر بچھا رہے ہیں کند  
شرر جو سرد کتابوں میں تھے دبائے ہوئے  
فضا میں سرخ پھریرا لٹا رہا ہو حیات  
ہوا کی زد پہ چراغِ عمل جلانے ہوئے  
تڑپ کے گرنے ہی والی ہر برقِ زنداں پر

کھڑے ہیں در پہ سہمہ آسرا لگائے ہوئے  
 سہمی کھلیں گے نہ پرچم ابھی پڑھے گا نہ رن  
 کہ مشتعل ہو مگر متحد نہیں ہو وطن  
 پکارتا ہے افق سے لبو شہیدوں کا  
 کہ ایک ہاتھ سے کھلتی نہیں گلے کی رسن  
 یہ انتشار، یہ بل چل، یہ مورچوں میں شکاف  
 مذاق اڑاتے ہیں عزم حماد کا دشمن  
 نکل کے صف سے کھڑے ہو گئے ہیں کچھ سادنت  
 بڑھسا کے ہاتھ محبت سے تقام لو دامن  
 پھر ایک بار برصو لے کے صلح کا پیغام  
 پھر ایک بار جلاوہ شکوک کے خرمن  
 یہ یاس کیوں ، یہ تمنائے خود کشی کیسی ؟  
 نوید فوج ہو قلب عوام کی دھڑکن  
 منادو، مل کے منادو نشاں غلامی کا  
 زمین چھوڑ چکا کارواں غلامی کا

ماخذ:-

کتاب:- آخر شب (ص-۵۱)

مصنف:- جاں نثار اختر



सलाम मछली शहरी  
1921-1973

### मजबूरियाँ

मुझे नफरत नहीं है इश्किया अशआर से लेकिन  
अभी उनको गुलाम आबाद में मैं गा नहीं सकता  
मुझे नफरत नहीं है हुस्न-ए-जन्नत जार से लेकिन  
अभी दोजख में इस जन्नत से दिल बहला नहीं सकता  
तुझे नफरत नहीं पाजेंब की झंकार से लेकिन  
अभी ताब-ए-निशात-ए-स्वस-ए-महफिल ला नहीं सकता  
अभी हिन्दुस्तान को आतिशी नरम सुनाने दो  
अभी चिंगारियों से इक गुल-ए-रंगी बनाने दो

स्रोत:

पुस्तक: आजादी की नज्में (पृष्ठ-181)

रचनाकार: सिब्रो हसन



سلام مچھلی شہری

۱۹۴۳ - ۱۹۳۱

### مجبوریاں

مجھے نفرت نہیں ہے خشکیے اشعار سے لیکن  
ابھی ان کو غلام آباد میں میں گا نہیں سکتا  
مجھے نفرت نہیں ہے حسن جنت زار سے لیکن  
ابھی دوزخ میں اس جنت سے دل بہلا نہیں سکتا  
مجھے نفرت نہیں پازیب کی جھکار سے لیکن  
ابھی تائب نشاط رقص محفل لا نہیں سکتا  
ابھی بندوستان کو آتھیں نغے سنانے دو  
ابھی چنگاریوں سے برگ گل رتھیں بنانے دو

ماخذ:-

کتاب:- آزادی کی نظمیں (ص-۱۸۱)

مصنف:- سبط حسن



साहिर लुधियानवी  
1921-1980

### मगर जुल्म के खिलाफ

हम अमन चाहते हैं मगर जुल्म के खिलाफ  
गर जंग लाजमी है तो फिर जंग ही सही  
जालिम को जो न रोके वो शामिल है जुल्म में  
कातिल को जो न टोके वो कातिल के साथ है  
हम सर-ब-कफ उठे हैं कि हक फतह-याब हो  
कह दो उसे जो ल कस-ए-बातिल के साथ है  
इस ढंग पर है ज़ोर तो ये ढंग ही सही  
जालिम की कोई जात न मज़हब न कोई कौम  
जालिम के लब पे जिक्र भी इन का गुनाह है  
फलती नहीं है शाख-ए-सितम इस जमीन पर  
तारीख जानती है जमाना गवाह है  
कुछ कोर-बातिनों की नजर तंग ही सही  
ये जर की जंग है न जमीनों की जंग है  
ये जंग है बका के उसूलों के वास्त  
जो खून हम ने नज़ दिया है जमीन को  
वो खून है गुलाब के फूलों के वास्त  
फूटगी सुब्ह-ए-अमन लहू-रंग ही सही

स्रोत:

पुस्तक: आओ की कोई ख़ाब बुनें (पृष्ठ-75)

रचनाकार: साहिर लुधियानवी





ساحر لدھیانوی

۱۹۸۰ - ۱۹۳۱

## مگر ظلم کے خلاف

ہم امن چاہتے ہیں مگر ظلم کے خلاف  
مگر جنگ لازمی ہے تو پھر جنگ ہی سہی  
ظالم کو جو نہ روکے وہ شامل ہے ظلم میں  
قاتل کو جو نہ ٹوکے وہ قاتل کے ساتھ ہے  
ہم سر بکلف اٹھے ہیں کہ حق فوج یاب ہو  
کہہ دو اسے جو لشکر باطل کے ساتھ ہے  
اس ڈھنگ پر ہے زور تو یہ ڈھنگ ہی سہی  
ظالم کی کوئی ذات نہ مذہب نہ کوئی قوم  
ظالم کے لب پہ ذکر بھی ان کا گناہ ہے  
پہیلی نہیں ہے شاخ ستم اس زمین پر  
تاریخ جانتی ہے زمانہ گواہ ہے  
کچھ کور باطنوں کی نظر تنگ ہی سہی  
یہ زر کی جنگ ہے نہ زمینوں کی جنگ ہے  
یہ جنگ ہے بظا کے اصولوں کے واسطے  
جو خون ہم نے نذر دیا ہے زمین کو  
وہ خون ہے گلاب کے پھولوں کے واسطے  
پھوٹے گی صبح امن لہو رنگ ہی سہی

ماخذ:-

کتاب:- آؤ کی کوئی خواب نہیں (ص ۷۵-)

مصنف:- ساحر لدھیانوی



रिफ़अत सरोश

1926-2008

## मेरा वतन हिन्दोस्ताँ

मेरा वतन हिन्दोस्ताँ हर राह जिस की कहकशाँ  
कोह-ए-गिराँ से कम नहीं जिस के जियाले नौजवाँ  
थे वीर-ओ-गौतम की जमी अमन-ओ-अहिंसा का चमन  
अकबर के ख्वाबों का जहाँ चिश्ती-ओ-नानक का वतन  
शमाएँ हजारों हैं मगर हैं एकता की अजुमन  
तहजीब का गहवारा हैं गंग-ओ-जमन की वादियाँ

मेरा वतन हिन्दोस्ताँ

तारीख़ की अज़मत हैं ये जम्हूरियत की शान हैं  
रुहानियत की रुह हैं सब मजहबों की जान हैं  
ये अपना हिन्दोस्तान हैं ये अपना हिन्दोस्तान हैं  
हासिल यहाँ इंसान को हर तरफ़ की आजादियाँ

मेरा वतन हिन्दोस्ताँ

जब दिल से मिलते गए मिटते गए सब फ़ासलें  
ये आज का नग्मा नहीं सदियों के हैं सिलसिले  
सदियों से मिल कर ही बड़े सब अहल-ए-दिल के काफ़िले  
इक साथ उठती हैं यहाँ आवाज-ए-नाकूस-ओ-अजाँ

मेरा वतन हिन्दोस्ताँ

तारीखा के इस मोड़ पर हम फ़र्ज से गाफ़िल नहीं  
काबू न जिस पर पा सकें ऐसी कोई मुश्किल नहीं  
जिस को न हमसर कर सकें ऐसी कोई मज़िल नहीं  
हाँ बाँकपन की शान से हैं कारवाँ अपना रवाँ

मेरा वतन हिन्दोस्ताँ

स्रोत:

पुस्तक: रौशनी का सफ़र (पृष्ठ-153)

रचनाकार: रिफ़्त सरोश



رفعت سروش

۱۹۲۶-۲۰۰۸

## میرا وطن ہندوستان

میرا وطن ہندوستان ہر راہ جس کی کہکشاں  
کوہ گراں سے کم نہیں جس کے جیلے نوجوان  
یہ دیر و گوتم کی زمیں امن و اہسا کا چمن  
اکبر کے خوابوں کا جہاں چشتی و نانک کا وطن  
شعبیں ہزاروں ہیں مگر ہے ایکٹا کی انجمن  
تہذیب کا گہوارہ ہیں گنگ و جمن کی وادیاں  
میرا وطن ہندوستان

تاریخ کی عظمت ہے یہ جمہوریت کی شان ہے  
روحانیت کی روح ہے سب مذہبوں کی جان ہے  
یہ اپنا ہندوستان ہے یہ اپنا ہندوستان ہے  
حاصل یہاں انسان کو ہر طرح کی آزادیاں  
میرا وطن ہندوستان

جب دل سے دل ملتے گئے ملتے گئے سب فاصلے  
یہ آج کا نعرہ نہیں صدیوں کے ہیں یہ سلسلے  
صدیوں سے مل کر ہی بڑھے سب اہل دل کے قافلے  
اک ساتھ اٹھتی ہے یہاں آواز ناقوس و اذان  
میرا وطن ہندوستان

تاریخ کے اس موڑ پر ہم فرض سے غافل نہیں  
قابو نہ جس پر پا سکیں ایسی کوئی مشکل نہیں  
جس کو نہ ہم سر کر سکیں ایسی کوئی منزل نہیں  
ہاں بانگین کی شان سے ہے کارواں اپنا رواں  
میرا وطن ہندوستان

ماخذ:-

کتاب:- روشنی کا سفر (ص-۱۵۳)

مصنف:- رفعت سروش



राही मासूम रजा

1927-1992

### ऐ अजनबी

दूसरी जंग से चौधारी थक गए  
और जनता के तेंवर भी कुछ और थे  
राहबर भी तेंजारत पर राजी हुए  
काले बाजार में दाम लगने लगे

कुछ मिशन आए, मश्क मुहब्बत हुई

कुछ शिकायत हुई, कुछ तिजारत हुई

और नतीजा में हिन्दुस्तान बँट गया  
यह जमीन बँट गई आसमान बट गया  
शाख-ए-गुल बँट गई आशियाँ बँट गया  
तर्ज-ए-तहरीर तर्ज-ए-बर्याँ बँट गया

हम ने सोचा कि वह ख़ाब ही और था

अब जो देखा तो पंजाब ही और था

कितनी बहनों की मीठी निगाहे लुटीं  
प्यार ही छाव, नज़रों की राहें लुटीं  
कितनी ऊषाओं की गहरी आँखें लुटीं  
मह जबीनों की वह गर्म बाहें लुटीं

आस कच्चे घड़े की तरह बह गई  
सोहनी बीच तूफान में रह गई

पाँच दरियाओं का गीत जलने लगा  
और कोह हिमालय का सर झुक गया  
अस्मत-ए-जिंदगी पर कड़ा वक्त था  
और तमद्दुन खड़ा सोचता ही रहा

कृष्ण के देश में कोई राधा न थी  
राम के देश में कोई सीता न थी

हीर सड़को पे नंगी फिराई गई  
जख्मी छाती से महफिल सजाई गई  
रावी में हर रवायत बहाई गई  
दोनों हाथों से गैरत लुटाई गई

कुछ लुटेरें बड़े आदमी बन गए  
और हम घर में शरनार्थी बन गए

औरतें सरहदों की तरफ चल पड़ीं  
कोई झिझकी कहीं, कोई रोई कहीं  
नाक की कील सर की रिदा भी नहीं  
जूतियाँ घर की देहलीज पे रह गईं

आगरा रात की तरह सुनसान था  
"ताज" की हुजन संजीदा हैरान था

सारे जिन्दा मकामात थे मुज़महिल  
जिंदगी मुज़महिल, शाहराहें खजिल  
बंद बाजारों में टूट जाता था दिल  
हर पलक पर लरजती थी पत्थर की सिल

जामा मस्जिद में अल्लाह की ज़ात थी  
चाँदनी चौक में रात ही रात थी

आलूओं की तरह सर कटे हैं यहाँ  
रास्तों पर उफुक से उफुक तक निशाँ  
कितनी रगड़ी गई है यहाँ एडियाँ  
यह है हिन्दुस्ताँ, यानी जन्नत निशाँ

एक कार नुमायाँ हुआ है यहाँ  
घर जला कर चरागाँ हुआ है यहाँ

स्रोत:

पुस्तक: रक्स से मै (पृष्ठ-17)

रचनाकार: राही मासूम रजा





راہی معصوم رضا

۱۹۹۲-۱۹۲۷

## اے اجنبی

دوسری جنگ سے چو دھری تھک گئے  
اور بھٹنا کے تیور بھی کچھ اور تھے  
را بہر بھی تجارت پر راضی ہوئے  
کالے بازار میں دام لگنے لگے  
کچھ مشن آئے ، مشق محبت ہوئی  
کچھ شکایت ہوئی، کچھ تجارت ہوئی  
اور نتیجہ میں ہندوستان بٹ گیا  
یہ زمین بٹ کی آساں بٹ گیا  
شاخ گل بٹ گئی آشیاں بٹ گیا  
طرز تریر، طرز بیاں بٹ گیا  
ہم نے سوچا کہ وہ خواب ہی اور تھا  
اب جو دیکھا تو پنجاب ہی اور تھا  
کتلی بہنوں کی مٹھی نکالیں نہیں  
پیاد کی چھاؤں ، نظروں کی راہیں نہیں  
کتلی او شاہوں کی گہری آنکھیں نہیں  
مہ جینوں کی وہ گرم باہیں نہیں

اس کچھ گھر لے کی طرح بہہ گئی  
سوئی چچ طو فان میں رہ گئی

پانچ دریاؤں کا گیت جلنے لگا

اور کوہ ہمالہ کا سر جھک گیا  
عصمت زندگی پر کڑا وقت تھا  
اور تمدن کھڑا سوچتا ہی رہا

کرشن کے دیس میں کوئی راجہ تھی

رام کے دیس میں کوئی سیتا نہ تھی

بیر سزکوں پہ تنگی پھرائی گئی

ذخمی چھاتی سے محفل سچائی گئی

راوی میں ہر روایت بہائی گئی

دونوں باتوں سے غیرت لٹائی گئی

کچھ لہیرے پرے آدمی بن گئے

اور ہم گھر میں شرنا تھی بن گئے

عورتیں سرحدوں کی طرف چل پڑیں

کوئی جھجکی کہیں، کوئی روتی کہیں

ناک کی کیل سر کی ردا بھی نہیں

جو تیاں گھر کی دہلیز پہ رہ گئیں

تاج کا حزن شہیدہ حیران تھا

آ گرہ رات کی طرح سنسان تھا

سارے زندہ مقامات تھے مضمحل

زندگی مضمحل، شاہراہیں خجل

بندر بازاروں میں ٹوٹ جاتا تھا دل

ہر پلک پر لرزتی تھی پتھر کی سل

جامع مسجد میں اللہ کی رات تھی  
چاندنی چوک میں رات ہی رات تھی

آلوؤں کی طرح سر کئے ہیں یہاں  
راستوں پر افق سے افق تک نشان  
کتلی رگڑی گی ہیں یہاں اڑیاں  
یہ ہے ہندوستان! یعنی جنت نشان

ایک کار نمایاں ہوا ہے یہاں  
گھر جلا کر چراناں ہوا ہے یہاں

ماخذ:-

کتاب:- رقص سے مے (ص-۱۷)

مصنف:- راہی معصوم رضا